वार्षिक प्रतिवेदन
ANNUAL REPORT
2016-17

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

वार्षिक रिपोर्ट

(01 अप्रैल, 2016 से 31 मार्च, 2017 तक)

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
INDIRA GANDHI NATIONAL CENTRE FOR THE ARTS

विषय सूची

पृष्ठ संख्या

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की संकल्पना

संगठन

न्यास का गठन 1

2016-17 की वार्षिक रिपोर्ट – प्रस्तावना 4
– प्रमुख बिन्दु 5

प्रभागों के बारे में रिपोर्ट

I **कलानिधि**

कार्यक्रम क : संदर्भ पुस्तकालय 7
कार्यक्रम ख : सांस्कृतिक सूचना–विज्ञान प्रयोगशाला 13
कार्यक्रम ग : सांस्कृतिक अभिलेखागार 15
कार्यक्रम घ : मीडिया सेन्टर 17
कार्यक्रम ङ : संरक्षण एकक 22

II **कलाकोश**

कार्यक्रम क : कलातत्वकोश 25
कार्यक्रम ख : कलामूलशास्त्र 25
कार्यक्रम ग : कलासमालोचना 25
कार्यक्रम घ : भारत विद्या परियोजना 25
कार्यक्रम ङ : क्षेत्र अध्ययन 31

III **जनपद संपदा**

कार्यक्रम क : नृजातीय विज्ञान संग्रह 34
कार्यक्रम ख : मल्टी–मीडिया प्रस्तुतियां और आयोजन (आदि दृश्य) 35
कार्यक्रम ग : जीवन–शैली अध्ययन 38
मौसम परियोजना (बाहरी परियोजना) 44

IV **कलादर्शन** : प्रदर्शनियाँ 46
: संगोष्ठी / सम्मेलन / कार्यशालाएँ 48
: संस्कृति संवाद श्रृंखला 49
: सार्वजनिक व्याख्यान 51
: प्रस्तुतियाँ और अन्य आयोजन 52
: बाल जगत 55
: अन्य मामले 57

V	**सूत्रधार**	:	न्यास संबंधी मामले	59
		:	प्रशासन के बारे में रिपोर्ट	59
		:	वार्षिक कार्य योजना	60
		:	बजट और कार्य योजना 2016.17	60
		:	वित्त / लेखा	60
		:	आवासन	60
		:	नई पहलें	60
		:	क्षेत्रीय केन्द्र	61

अनुलग्नक

1.	न्यासी बोर्ड	71
2.	कार्यकारिणी समिति के सदस्य	74
3.	प्रकाशित किए गए प्रकाशन	75
4.	आयोजित प्रदर्शनियाँ	76
5.	सम्मेलन / संगोष्ठियाँ / कार्यशालाएँ	79
6.	स्मारक / सार्वजनिक व्याख्यान	81
7.	वरिष्ठ अधिकारियों की सूची	84

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र

वार्षिक रिपोर्ट 2016-17

इं.गां.रा.क. केन्द्र की संकल्पना

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र (इं.गां.रा.क.के.), भारत सरकार द्वारा संस्कृति मंत्रालय के आधीन स्थापित किया गया एक स्वायत्त ट्रस्ट है। भारत की पूर्व प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी की स्मृति में स्थापित इं.गां.रा.क. केन्द्र की परिकल्पना एक ऐसी संस्था के रूप में की गई है, जिसमें कला के सभी रूपों का अध्ययन और अनुभव उनकी अपनी संपूर्णता में किए जाते हुए भी प्रकृति, सामाजिक संरचना एवं सार्वभौमिक व्यापकता की दृष्टि से उनमें व्याप्त करते हुए अन्योन्याश्रित अंतर्संबंध के परिप्रेक्ष्य में किया जाता है।

कलाओं के प्रति यह दृष्टि जहाँ एक ओर मानव संस्कृति के वृहत् समुदाय के लिए अभिन्न और अत्यावश्यक है, वहीं दूसरी ओर उस मानव की अभिन्न विशेषता के मूल में विद्यमान है जो स्वयं के प्रति और समाज के प्रति सम्यक भाव रखता है। यह भाव उसी साकल्यवादी विश्व–दृष्टि की देन है जो समूची भारतीय परंपरा में दृढ़ता से व्यक्त की गई है और जिसे आधुनिक भारतीय नेताओं, विशेष रूप से महात्मा गांधी और रबीन्द्रनाथ टैगोर ने विशेष महत्व दिया है।

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की कला–परिधि अध्ययन की दृष्टि से काफी व्यापक है। इसमें लिखित और मौखिक, सृजनात्मक और समालोचनात्मक साहित्य; दृश्य कलाएं– वास्तुशिल्प, मूर्तिकला, चित्रकला और रुपांकनों से लेकर सामान्य भौतिक संस्कृति, फोटोग्राफी और फिल्म कला; अपने व्यापकतम अभिधानों में संगीत, नृत्य और रंगमंच जैसी मंचीय कलाएँ; और त्यौहारों, उत्सवों तथा जीवन–शैलियों में निहित वह सब कुछ जिसमें कई कलात्मक आयाम निहित हैं, शामिल है। इस केन्द्र ने प्रारंभिक चरण में अपना ध्यान भारत पर केन्द्रित किया और आगे चलकर यह संस्थान अन्य सभ्यताओं और संस्कृतियों तक अपनी पहुंच बनाने के लिए अपने कार्यों का विस्तार करने के लिए प्रयत्नशील है। इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र अपने शोध कार्य, प्रकाशन, प्रशिक्षण, रचनात्मक कार्यों और प्रस्तुतियों जैसे विविध कार्यक्रमों के माध्यम से कला–रूपों का बोध उनके अपने प्राकृतिक और मानवीय परिवेश के संदर्भ में करना चाहता है। अपने सभी कार्यों में केन्द्र का प्रयास यह रहता है कि उसकी दृष्टि बहु विषयी और अंतर–विषयी रहे।

इस केन्द्र के प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार हैं–

- कला–क्षेत्र में, विशेष रूप से लिखित, मौखिक और दृश्य कला–रूपों के प्रमुख संसाधन केन्द्र के रूप में अपनी सेवाएं प्रदान करना;
- कला, साहित्य एवं सांस्कृतिक संपदा से संबंधित संदर्भ ग्रंथों, शब्दावलियों, शब्द–कोशों, विश्व–कोशों और मूल–ग्रंथों के शोध और प्रकाशन कार्य हाथ में लेना;
- जनजातीय एवं लोक कलाओं का अध्ययन करना और इस क्षेत्र में व्यवस्थित, वैज्ञानिक अध्ययन को बढ़ावा देना और उसे सुगम बनाने वाली संदर्भ सामग्री का प्रकाशन करना;
- मंचीय प्रस्तुतियों, प्रदर्शनियों, मल्टी–मीडिया प्रेक्षणों, सम्मेलनों, संगोष्ठियों और कार्यशालाओं के माध्यम से पारंपरिक एवं समकालीन विविध कला–रूपों के बीच रचनात्मक और समालोचनात्मक संवाद के लिए मंच उपलब्ध कराना;

- कला और दर्शन, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में परस्पर संवाद को सुगम बनाना ताकि उस अंतराल को भरा जा सके जो आधुनिक विज्ञानों और कलाओं एवं संस्कृति के बीच आ जाता है;
- भारतीय लोकाचार से जुड़े कला–रूपों, मानविकी विषयों और संस्कृति के क्षेत्र में शोध कार्यक्रम संचालित करना;
- विविध सामाजिक संवर्गों, समुदायों और क्षेत्रों के बीच परस्पर संपर्क के जटिल ताने–बाने में मौजूद रचनात्मक एवं परिवर्तनात्मक घटकों पर प्रकाश डालना;
- भारत तथा अन्य देशों के बीच ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक संबद्धताओं के प्रति जागरूकता को प्रोत्साहित करना;
- राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं के साथ नेटवर्क तैयार करना;
- कला, साहित्य एवं सांस्कृतिक विरासत के क्षेत्र में संगत शोध कार्य संचालित करना।

विशिष्ट कार्यक्रमों और परियोजनाओं के माध्यम से कला–रूपों में परस्पर और कलाओं तथा सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों के अन्य रूपों के बीच अंतर–निर्भरता, विविध क्षेत्रों के बीच आपसी प्रभावों और जनजातीय, ग्रामीण और शहरी परम्पराओं के साथ–साथ लिखित और मौखिक परम्पराओं की अंतर–संबद्धता का अन्वेषण, अभिलेखन और प्रस्तुतीकरण किया जाएगा।

संगठन

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के उद्घोषणा विलेख में उल्लिखित उद्देश्यों और इसके प्रमुख लक्ष्यों की पूर्ति के लिए केन्द्र का काम–काज निम्नलिखित पांच प्रभागों के माध्यम से संचालित किया जाता है। ये प्रभाग अपनी संरचना में तो स्वायत्त हैं लेकिन इनके कार्यक्रम एक दूसरे से जुड़े होते हैं।

कलानिधि प्रभाग

'कलानिधि' के अंतर्गत आते हैं– (क) मानविकी विषयों और कला–रूपों में शोध के लिए विशाल संसाधन को एकत्र कर केन्द्र के रूप में कार्य करने के लिए सांस्कृतिक संदर्भ पुस्तकालय, जिसकी सहायता (ख) विश्व स्तर की सांस्कृतिक सूचना–विज्ञान प्रयोगशाला, (ग) सांस्कृतिक अभिलेखागार जिसमें कलाकारों/विद्वानों के मल्टी–मीडिया संग्रह हैं; (घ) एक मल्टी–मीडिया केन्द्र, और (ङ) एक संरक्षण प्रयोगशाला, करते हैं।

कलाकोश प्रभाग

कलाकोश विभाग के अंतर्गत मौलिक अनुसंधान किए जाते हैं। जिसमें दीर्घकालीन प्रयोग सम्मिलित है : (क) कलातत्वकोश– जो कला–रूपों एवं शिल्पों की आधारिक तकनीकी शब्दावलियों के बारे में मूलभूत अवधारणाओं तथा अंतर–विषयी शब्दावलियों/समान्तर कोशों का एक शब्द–कोष है, (ख) कलामूलशास्त्र– जो भारतीय कला–रूपों के मूलभूत ग्रंथों की श्रृंखला है, (ग) कलासमालोचना– जो भारतीय कला–रूपों के बारे में समालोचनात्मक लेखनों के पुनर्मुद्रणों की श्रृंखला है, (घ) ''भारत विद्या परियोजना'', और (ङ) क्षेत्र अध्ययन के लिए दीर्घ–कालिक कार्यक्रम शुरू किए जाते हैं।

जनपद संपदा प्रभाग

जनपद संपदा प्रभाग (क) नृजातीय संग्रहः लोक–कलाओं और जनजातीय शिल्पकलाओं से संबंधित सामग्री का बीज कोश तैयार कर प्रलेखीकृत करता है; (ख) मल्टी–मीडिया प्रस्तुतीकरण और कार्यक्रम तैयार करता है; और (ग) भारतीय सांस्कृतिक परिदृश्य का अध्ययन पूरी समग्रता से और पर्यावरणीय, पारिस्थितिकीय, कृषि संबंधी, सामाजिक–आर्थिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक मानदंडों के अंतर–जाल के संदर्भ में वैकल्पिक मॉडल तैयार करने के लिए जनजातीय समुदायों के बहु–विषयी जीवनशैली का अध्ययन कार्यक्रम शुरू करता है।

कलादर्शन प्रभाग

कलादर्शन के अंतर्गत एकीकृत करने वाले प्रसंगों और अवधारणाओं के बारे में अंतर–विषयी प्रदर्शनियों, संगोष्ठियों/सम्मेलनों और प्रस्तुतियों के लिए सशक्त धरातल उपलब्ध कराता है। इस प्रभाग में बच्चों के लिए भी एक कार्यक्रम 'बालजगत' के नाम से आयोजित किया जाता है।

सूत्रधार प्रभाग

सूत्रधार प्रभाग का उत्तरदायित्व सभी प्रभागों को प्रशासनिक, प्रबंधकीय एवं संगठनात्मक सहायता एवं सेवाएं उपलब्ध कराने का है।

संस्था के 'कलानिधि' और 'कलाकोश' नामक अकादमिक प्रभागों में मल्टी–मीडिया प्राथमिक एवं गौण सामग्री के संग्रहण, मौलिक अवधारणाओं का अन्वेषण, 'स्वरूप' के सिद्धान्तों का अभिनिर्धारण, सिद्धान्त और मूल–पाठ (शास्त्र) के स्तर पर तकनीकी शब्दावलियों की व्याख्या और बौद्धिक विमर्श तथा मार्ग के स्तर पर अर्थगृहण। जनपद संपदा और कलादर्शन में 'लोक', 'देश', और 'जन' के स्तर पर अभिव्यक्तियों, प्रक्रियाओं, जीवन–प्रकार्यों और जीवन–शैलियों, तथा मौखिक परम्पराओं पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है। सभी चार प्रभागों के कार्यक्रम परस्पर मिलकर कलाओं को जीवन के उनके मूल संदर्भ में तथा अन्य विषयक्षेत्रों के साथ उनके संबंधों के संदर्भ में परखने का कार्य करते हैं।

शोध की प्रविधि, कार्यक्रम निर्माण एवं अंतिम परिणाम समरूप होते हैं। प्रत्येक प्रभाग का काम, अन्य प्रभागों के कार्यक्रमों के अनुपूरक की भूमिका निभाता है।

न्यास का गठन

भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय (कला विभाग) के 19 मार्च, 1987 के संकल्प संख्या एफ.16–7/86–कला के अनुसरण में इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के न्यास का विधिवत गठन और पंजीकरण नई दिल्ली में 24 मार्च, 1987 को किया गया था। प्रारंभ में न्यास में सात सदस्य थे; बाद में समय–समय पर न्यास का पुनर्गठन किया जाता रहा।

2016–17 की वार्षिक रिपोर्ट

01 अप्रैल, 2016 से 31 मार्च, 2017 तक

प्रस्तावना

समीक्षाधीन वर्ष के दौरान अन्य अनेक कार्यों में से भारत सरकार का सर्वाधिक महत्वपूर्ण निर्णय यह रहा कि 13 अप्रैल, 2016 के आदेश संख्या 16–3/2015–अकादमी के तहत इं.गां.रा.क. केन्द्र के न्यासी बोर्ड का पुनर्गठन कर दिया गया; न्यास में बीस सदस्य हैं और इसके अध्यक्ष श्री राम बहादुर राय हैं। 6 मई, 2016 को मंत्रिमंडल की नियुक्ति समिति (एसीसी) के अनुमोदन से कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. सच्चिदानंद जोशी की नियुक्ति पांच वर्ष के कार्यकाल के लिए सदस्य सचिव के पद पर की गई।

इं.गां.रा.क. केन्द्र के पुनर्गठित न्यासी बोर्ड की पहली बैठक 30 मई, 2016 को हुई जिसमें कार्यकारिणी समिति का पुनर्गठन किया गया। कार्यकारिणी समिति के नामित सदस्यों ने सर्वसम्मति से इं.गां.रा.क. केन्द्र के अध्यक्ष श्री राम बहादुर राय को उद्घोषणा विलेख के खण्ड 16.3 के अनुसार कार्यकारिणी समिति का अध्यक्ष चुना। पुनर्गठित कार्यकारिणी समिति की एक बैठक 10 जून, 2016 को हुई। 31 मार्च, 2017 की स्थिति के अनुसार न्यासियों और इं.गां.रा.क. केन्द्र की कार्यकारिणी समिति के सदस्यों के नाम अनुलग्नक–1 और 2 में दिए गए हैं।

पुनर्गठित न्यास द्वारा 2016–17 में की गई पहलों के बारे में नोट

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के लिए 2016–17 का वर्ष, अनेक स्तरों पर और अनेक आयामों से काफी हलचल भरा रहा। नई कार्यकारिणी समिति की तीन बैठकें क्रमशः 10 जून, 2016, 16 अगस्त, 2016 और 02 दिसम्बर, 2016 को हुईं और न्यासी बोर्ड की बैठकें 30 मई, 2016 तथा 16 जनवरी, 2017 को हुईं जिनमें महत्वपूर्ण दृष्टिकोण से निर्णय लिए गए।

दृष्टिकोण/संकल्पना का पुनरावलोकनः न्यासियों की एक उप–समिति का गठन आगामी 25 वर्ष के लिए संस्था के दृष्टिकोण एवं अधिदेश की रूप–रेखा तैयार करने के लिए की गई। इस उप–समिति में डॉ. सोनल मानसिंह, डॉ. महेश शर्मा, डॉ. पद्मा सुब्रमण्यम, डॉ. दया प्रकाश सिन्हा सदस्य के रूप में और डॉ. सच्चिदानंद जोशी संयोजक के रूप में शामिल थे। समिति को यह देखना है कि जिन लक्ष्यों और उद्देश्यों के लिए संस्था की स्थापना की गई थी, वे लक्ष्य और उद्देश्य क्या थे और ये किस हद तक प्राप्त किए जा सकते हैं या नहीं किए जा सके हैं। समिति ने अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की जिसे न्यास ने 16 जनवरी 2017 को आयोजित अपनी बैठक में अनुमोदित कर दिया।

विज़न कमेटी ने न केवल संस्था के लक्ष्यों और अधिदेश का पुनरावलोकन किया बल्कि संस्था के सामने मौजूद न्यूनताओं, समस्याओं और मुद्दों की पहचान का प्रयास भी किया। समिति ने भिन्न–भिन्न विशेषज्ञ समूहों द्वारा प्रस्तुत की गई विभिन्न रिपोर्टों और दस्तावेजों का भी अवलोकन किया जो इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के संदर्शन और योजनाओं से संबंधित थीं। समिति ने संस्था के लिए एक व्यापक भविष्योन्मुखी संदर्शन की संकल्पना तैयार करने की दृष्टि से इस क्षेत्र के कतिपय अन्य अग्रगण्य व्यक्तियों से भी परामर्श किया ताकि गतिविधियों की दिशा तदनुसार तय की जा सके।

समितियों का पुनर्गठनः समस्त अकादमिक प्रभागों एवं बड़ी परियोजनाओं की कार्यक्रम सलाहकार समितियों, क्षेत्रीय केन्द्रों की सलाहकार समितियों, वित्त सलाहकार समिति आदि का पुनर्गठन करते हुए कार्यकारिणी समिति ने इनमें नामी विशेषज्ञों को शामिल किया है।

वार्षिक योजना का पुनरावलोकनः इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की कार्यकारिणी समिति ने 2016–17 की वार्षिक कार्य योजना का पुनरावलोकन किया। एक विस्तृत कार्यक्रम की रूप–रेखा तैयार की गई है जिसमें सटीक लक्ष्यों का उल्लेख किया गया है। यह संतोष का विषय है कि इन लक्ष्यों में से 99 प्रतिशत लक्ष्य प्राप्त कर लिए गए हैं।

प्रमुख बिन्दु

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की गतिविधियों की प्रमुख बातों में शामिल हैं (i) आधारिक विज्ञान से संगत सारगर्भित संकल्पनाओं, तकनीकी शब्दों की विषयगत शब्दावलियों से जुड़े सैद्धांतिक विचारों और सांस्कृतिक परंपराओं से लेकर समकालीन अध्ययनों जैसे विविध विषयों पर अनुसंधान; और शोधार्थियों एवं आम लोगों के बीच रचनात्मक संवाद की भूमिका निभाने वाली संगोष्ठियों, कार्यशालाओं, व्याख्यानों, शैक्षिक प्रदर्शनियों, पुतलों एवं फिल्म प्रदर्शनों का आयोजन करना और इनके माध्यम से विभिन्न सामाजिक–आर्थिक स्तरों पर ज्ञान का प्रसार करना। व्यक्तियों एवं विद्यादायी निकायों के प्रतिनिधित्व से अपने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय नेटवर्क का विस्तार करने की दृष्टि से अनेक संस्थाओं और विद्वानों के सहयोजन में कार्यक्रम आयोजित करके अपना आधार गहन एवं विस्तृत करने के लिए इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा लगातार प्रयास किए गए है।

इसके अधिकांश कार्यक्रमों का कार्यान्वयन इसके विनिर्धारित लक्ष्यों के अंदर किया जाता रहा है। केन्द्र की गतिविधियां, विशेष रूप से इसकी प्रदर्शनियां, व्याख्यान और प्रस्तुतियां व्यापक तौर पर सराही गईं। कार्यक्रमों और परियोजनाओं के सफल संपादन का श्रेय मुख्यतः इसीलिए मिल सका क्योंकि इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अध्यक्ष, न्यायियों, कार्यकारिणी समिति के सदस्यों और सदस्य सचिव ने अपना मार्ग–दर्शन उपलब्ध कराया। अध्यक्ष महोदय द्वारा इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र को बुद्धिमत्तापूर्ण और परिपक्व सलाह लगातार प्राप्त होती रही।

कला और संस्कृति के एक प्रमुख स्रोत केन्द्र के रूप में इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने 2016–17 में विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम किए जैसे – एकीकृत अध्ययन कराना, प्रकाशन निकालना, प्रदर्शनियाँ, व्याख्यान, परिचर्चाएँ आदि आयोजित करना और संदर्भ एवं स्रोत सामग्री का संग्रहण करना। इनका विवरण नीचे दिया जा रहा है।

वर्ष के दौरान, 'राष्ट्रपति भवन की विरासत का प्रलेखन' नामक एक बड़ी बाहरी परियोजना पूरी की गई है और समय–सारणी के अनुसार सभी दस प्रकाशन प्रकाशित कर दिए गए हैं।

समालोच्य अवधि के दौरान अन्य दो बाहरी परियोजनाओं नामतः 'नेशनल कल्चरल ऑडियो–विजुअल आर्काइव्स' (एनसीएए) और 'वैदिक हेरिटेज पोर्टल' परियोजना में भी महत्वपूर्ण प्रगति की गई है। एनसीएए की शुरुआत डिजिटलाइजेशन की प्रक्रिया के माध्यम से ऑडियो–विजुअल स्वरूप में भारत में उपलब्ध सांस्कृतिक विरासत का अभिनिर्धारण और परिरक्षण कर उस तक जन साधारण की पहुंच सुगम बनाने के लिए की गई थी; और वैदिक हेरिटेज प्रोजेक्ट का उद्देश्य, वेदों में निहित संदेश के संप्रेषण का है।

इं.गां.रा.क. केन्द्र की संकल्पना जिन उद्देश्यों को लेकर की गई थी, उन उद्देश्यों को पूरा करने की दृष्टि से 'समान क्षेत्रों में कार्यरत 24 (चौबीस) संस्थाओं/विश्वविद्यालयों के साथ सहमति पत्र पर हस्ताक्षर समालोच्य अवधि में, संस्था के अनवरत प्रयासों से किए गए।

'विज़न और मिशन योजना' के ढांचे के अंदर ही कुछ नए कार्यक्रम शुरू किए गए हैं। परियोजना प्रोफाइलों का अध्ययन सावधानीपूर्वक करने के बाद प्रत्येक दीर्घकालिक या प्रायोगिक परियोजना विशिष्ट मॉड्यूलों में व्यवस्थित की गई। संक्षेप में कहें तो केन्द्र ने अपनी गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में प्रगति करना जारी रखा, प्रत्येक प्रभाग के कार्यक्रमों को और निखारा गया। संस्कृति, कला, साहित्य, शिक्षा और जीवन–शैली से जुड़े विविध विषयों और मुद्दों पर केन्द्रित 'सांस्कृतिक संवाद श्रृंखला' शुरू की गई ताकि समाज में रचनात्मक बौद्धिक संवाद की परम्परा को पुनर्जीवित किया जा सके जिसे 'संस्कृति संवाद श्रृंखला' का नाम दिया गया है। समालोच्य अवधि में डॉ. नामवर सिंह, श्री रामानुजाचार्य, डॉ. एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी और डॉ. देवेन्द्र स्वरूप पर सांस्कृतिक संवाद आयोजित किए गए।

'भारत विद्या परियोजना' (अर्थात् भारतीय दृष्टिकोण से भारत विद्या के बारे में अध्ययन/शोध) नामक एक नया कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया है। इस परियोजना के अंतर्गत, भारतीय कला और संस्कृति के बारे में अलग–अलग क्षेत्रों के लब्ध–प्रतिष्ठ विशेषज्ञों के विशिष्ट और अभिकेन्द्रित व्याख्यानों की श्रृंखला के आयोजन के माध्यम से विशाल पैमाने पर एक उपक्रम शुरू किया गया है। इस श्रृंखला के तहत 'भारतीय संस्कृति, सभ्यता, कला–चिंतन परम्परा और वर्तमान संदर्भ' पर नामी चिंतक/लेखक/वक्ता श्री रवीन्द्र शर्मा का; 'संस्कृति और शान्ति' विषय पर सिक्किम के पूर्व राज्यपाल और प्रतिष्ठित विद्वान श्री बाल्मीकि प्रसाद सिंह का; 'दि केस ऑफ स्वदेशी इंडोलॉजी' पर नामी भारतीय–अमरीकी शोधार्थी, लेखक, वक्ता श्री राजीव मल्होत्रा का व्याख्यान आयोजित किए जाने के साथ–साथ 'इनफिनिटी फाउंडेशन इंडिया' (आईएफआई) स्वदेशी इंडोलॉजी कॉन्फ्रेंस श्रृंखला, आदि के सहयोजन में 'ग्लोबल पर्सेपशंस ऑफ इंडियन हेरिटेज' पर आयोजित तीन दिवसीय सम्मेलन आयोजित किया गया।

इं.गां.रा.क. केन्द्र ने आचार्य अभिनवगुप्त और उनकी परम्पराओं की सहस्राब्दी मनाने के लिए 'आचार्य अभिनवगुप्त' पर चार राष्ट्रीय और एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित करने के अलावा भिन्न–भिन्न स्थानों जिसमें नामतः दिल्ली, भोपाल, कश्मीर, चैन्नई में प्रदर्शनियों का आयोजन सम्मिलित है।

संस्था ने एक महत्वपूर्ण निर्णय यह लिया कि (1) रांची, (2) वदोदरा, (3) गोवा, (4) त्रिशूर, (5) कश्मीर, और (6) पुदुच्चेरी में इं.गां.रा.क. केन्द्र के 6 (छह) नए क्षेत्रीय केन्द्र खोले जाएं।

3 (तीन) पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा पाठ्यक्रमों (1) 'पीजी डिप्लोमा इन कल्चरल इनफॉर्मेटिक्स'; (2) 'पीजी डिप्लोमा इन प्रीवेन्टिव कंज़र्वेशन'; और (3) 'पीजी डिप्लोमा इन बुद्धिस्ट स्टडीज़' की रूप–रेखा तैयार करने का काम भी शुरू किया गया है।

मुद्रित पुस्तकों, पांडुलिपियों के प्रतिलिप्यंकनों, भित्तिचित्रों एवं चित्रकला, फोटोग्राफों, टेप एवं वीडियो सामग्री के रूप में अनेक महत्वपूर्ण वृद्धि पुस्तकालय में की गईं। पुस्तकालय में भारत से और विदेश से भी अनेक आगंतुक पधारे। यहां संग्रहीत सामग्रियों और कंप्यूटरीकृत केटालॉगों के प्रति दुनिया के सभी भागों के गंभीर अध्येताओं का ध्यान आकर्षित हुआ है। इं.गां.रा.क. केन्द्र ने इस वर्ष 8 पुस्तकें और 13 डीवीडी प्रकाशित किए। इसके अलावा, केन्द्र ने अलग–अलग विषय–क्षेत्रों पर 18 विषयगत और 17 चल प्रदर्शनियाँ, 26 राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियाँ/सम्मेलन/कार्यशालाएँ, 64 सार्वजनिक व्याख्यान/व्याख्यात्मक प्रदर्शन समालोच्य अवधि में, अपने शोध कार्यक्रमों/गतिविधियों के भाग के रूप में आयोजित किए।

अंतर्राष्ट्रीय परामर्शदाताओं सहित बड़ी संख्या में विशेषज्ञों, ख्यातिप्राप्त विद्वानों ने इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का दौरा समालोच्य अवधि में किया।

केन्द्र की गतिविधियों के बारे में विस्तृत और ब्यौरेवार रिपोर्ट आगे दी गई है।

कलानिधि

(पुस्तकालय, सूचना प्रणालियों, सांस्कृतिक अभिलेखागार, संरक्षण एकक और मीडिया केन्द्र प्रभाग)

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का कलानिधि प्रभाग कला और मानविकी विषयों से संबंधित संदर्भ सामग्री के विशाल भंडार की भूमिका निभाता है। कलानिधि के मुख्य घटकों में शामिल हैंः एक संदर्भ पुस्तकालय, एक सांस्कृतिक सूचना–विज्ञान प्रयोगशाला जिसमें मल्टी–मीडिया डेटाबेस तक पहुंचने का माध्यम उपलब्ध है, सांस्कृतिक अभिलेखागार, एक मीडिया केन्द्र और एक संरक्षण एकक। इसके अलावा, भारतीय और विदेशी विद्वानों और शोधार्थियों के लिए यह प्रभाग राष्ट्रीय सुविधा केन्द्र के रूप में कार्य करते हुए इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के विभिन्न प्रभागों के अकादमिक स्टॉफ को सहायक सेवाएं प्रदान करता है।

संदर्भ पुस्तकालय ने विभिन्न विषयों पर पुस्तकों, मोनोग्राफों, माइक्रोफिल्मों, फोटोग्राफों, स्लाइडों, फिल्मों और ऑडियो–विजुअल सामग्री के अर्जन से अपने संग्रहों को बढ़ाने के प्रयास जारी रखे जिनमें कला–रूप, इतिहास, वास्तुकला, धर्म, दर्शन, भाषा, नृजाति विज्ञान, लोककथाएँ और मानव–शास्त्र के साथ–साथ कंप्यूटर और सूचना–प्रौद्योगिकी पर सामग्री शामिल है।

इन्दिरा गाँधी राश्ट्रीय कला केन्द्र के पुस्तकालय की एक अनूठी विशेषता यह है कि इसमें 'ओरिएण्टल मैन्यूस्क्रिप्ट्स लाइब्रेरी (त्रिवेन्द्रम)', 'भंडारकर ओरिएंटल रीसर्च इंस्टिट्यूट, पुणे' और 'ओरिएंटल मैन्यूस्क्रिप्ट लाइब्रेरी, मैसूर' आदि जैसी सुविख्यात विरासत संस्थाओं और पुस्तकालयों की माइक्रोफिल्मों और माइक्रोफिश का समृद्ध संग्रह भी है। इसके अतिरिक्त, अन्य देशों विशेष रूप से यूनाईटेड किंगडम, जर्मनी, फ्रांस, चीन और रूस के राष्ट्रीय पुस्तकालयों तथा शोध संस्थाओं से प्राप्त पांडुलिपियों की माइक्रोफिल्में और माइक्रोफिश भी इस पुस्तकालय में हैं। इस पुस्तकालय में विरासत के क्षेत्र में कार्यरत विभिन्न संस्थाओं में उपलब्ध पांडुलिपियों की पुस्तक–सूचियों का संग्रह भी है। संदर्भ पुस्तकालय की एक अन्य अनूठी विशेषता हैः 'निजी संग्रह' जिसमें पुस्तकालय को प्रोफेसर सुनीति कुमार चटर्जी, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, महेश्वर नियोग, डॉ. (श्रीमती) कपिला वात्स्यायन जैसे विद्वानों से 'पुस्तकों और पत्रिकाओं के विशाल संग्रह' भेंट स्वरूप प्राप्त हुए हैं। इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के आगार में 1,00,000 से अधिक चित्रों की स्लाइडों का वृहत् संग्रह है। इसके अलावा सांस्कृतिक अभिलेखागार भी है जिसमें श्रव्य–दृश्य सामग्री, फोटोग्राफ, कला–कृतियां और कला–इतिहासज्ञों और कला–मर्मज्ञों के निजी संग्रह डायरियों, पत्राचार आदि के रूप में सुरक्षित रखे गए हैं।

कार्यक्रम कः संदर्भ पुस्तकालय

पुस्तकों की अवाप्ति

पुस्तक अवाप्ति समिति की संस्तुतियों के आधार पर संदर्भ पुस्तकालय में वर्ष 2016–17 के दौरान 1,221 विभिन्न विषयों जैसे कला साहित्य आदि से संबंधित पुस्तकें जिसमें नई प्रकाशित पुस्तकों पर विशेष ध्यान केंद्रित कर उनका समावेश किया गया और 996 पुस्तकें उपहार स्वरुप प्राप्त हुई हैं। इनका पंजीकरण कर पुस्तकालय में सम्मिलित किया गया। नई प्रकाशित पुस्तकों पर विशेष ध्यान केन्द्रित कर उनका समावेश कर पंजी में दर्ज कर दिया गया है।

प्रोसेसिंग यूनिट

एएसीआर II कैटलॉग तथा डेवी डेसीमल वर्गीकरण प्रणाली का प्रयोग करते हुए कुल मिलाकर 2,541 पुस्तकों का वर्गीकरण किया गया। कांग्रेस लाइब्रेरी सूची का प्रयोग करते हुए पुस्तकों को विषय शीर्षक दिए गए हैं। 'लिबसिस' डेटाबेस में सभी पुस्तकों के कैटलॉग दर्ज किए गए हैं। नई अर्जित की गई पुस्तकों को बार–कोड प्रदान किया गया है।

जर्नल

पुस्तकालय में 170 शोध पत्रिकाएँ प्राप्त की जाती हैं। ये पत्रिकाएँ – मानव–शास्त्र, वास्तुकला, कला, संदर्भिका, पुस्तक समीक्षा, कंप्यूटर और सूचना–प्रौद्योगिकी, संरक्षण, संस्कृति, नृत्य, लोककथा, इतिहास, मानविकी, पुस्तकालय एवं सूचना–विज्ञान, भाषा–विज्ञान, साहित्य, संग्रहालय अध्ययन, संगीत, मुद्रा–शास्त्र, प्राच्य अध्ययन, मंचीय कलाएँ, दर्शन, पुत्तल–कला, धर्म, समाज–शास्त्र, सामाजिक विज्ञान, रंगमंच और क्षेत्र अध्ययन आदि विषयों से संबंधित हैं।

वर्ष के दौरान लिबसिस डेटाबेस में पत्रिकाओं के 1132 अंक दर्ज किए गए हैं। पत्रिकाओं को प्रदर्शित कर रखने, उनकी छंटनी करने, शैक्षिक स्टॉफ में पत्रिकाओं का परिचालन करने, प्रशिक्षुओं को प्रशिक्षित करने जैसे अन्य संबद्ध कार्य भी सभी विषयों में पत्रिका अनुभाग में किए गए हैं।

पुस्तकालय में निम्नलिखित के पूर्ण मूलपाठ और संदर्भिका डेटाबेस भी हैं जो इंटरनेट पर शोधकर्ताओं के लिए सुलभ हैं: (1) ईबीएससीओ, कला और मानविकी (2) जेएसटीओआर और (3) जे–गेट, कला और मानविकी; इसके साथ ही संदर्भिका डेटाबेस भी है जिस तक शोधकर्ताओं की पहुंच इंटरनेट के माध्यम से हो सकती है।

कलानिधि डैलनेट जैसे कतिपय 6 प्रमुख संगठनों और आईएफएलए, भारतीय लाइब्रेरी एसोसिएशन और भारतीय विशेष पुस्तकालय एवं सूचना केन्द्र संघ (आईएएसएलआईसी) जैसे व्यावसायिक निकायों का भी संस्थानिक सदस्य है।

परिचालन और संदर्भ सेवाएं

वर्ष के दौरान 2825 शोधार्थी पुस्तकालय में पधारे। शोधार्थियों से प्राप्त अनुरोधों के आधार पर 5135 से अधिक फोटोकॉपी की हुई सामग्री शोधार्थियों को उपलब्ध कराई गई।

पुस्तकालय द्वारा पुस्तकें आंतरिक ऋण आधार पर अन्य पुस्तकालयों से, प्रयोक्ताओं, आंतरिक और बाहरी विद्वानों से प्राप्त मांगों के आधार पर प्राप्त की गईं। 2000 से अधिक पुस्तकों पर बारकोड लेबल जनरेट किया जा चुका है। वर्ष के दौरान 21 प्रसिद्ध आगुन्तकों ने संदर्भ पुस्तकालय का दौरा किया। गुजरात विश्वविद्यालय; स्वामी विवेकानन्द विश्वविद्यालय, मेरठ; नार्थ बंगाल विश्वविद्यालय; दिल्ली विश्वविद्यालय इत्यादि के ऐसे छात्र भी पुस्तकालय में आए जो कि पुस्तकालय विज्ञान डिग्री कार्यक्रम के तहत अध्ययन–रत हैं।

संदर्भिका इकाई

प्रभाग की संदर्भिका इकाई एबीआईए (एन्युअल बिबलियोग्राफी ऑफ इंडियन आर्कियोलॉजी) परियोजना में सहभागी है। एबीआईए परियोजना अंतर–राष्ट्रीय एशियाई अध्ययन संस्थान (आईआईएएस), लीडेन, दि नीदरलैण्ड्स; पुरातत्त्व स्नातकोत्तर संस्थान, कोलम्बो और ब्रिल प्रकाशन के साथ संयुक्त रूप से शुरू की गई है। इस परियोजना के तहत इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने दक्षिण और दक्षिण–पूर्व एशियाई कला एवं पुरातत्त्व अनुक्रमणिका का खंड IV संकलित किया है। 'एंड सॉफ्टवेयर' में लगभग 933 प्रविष्टियां की गई हैं।

प्रलेखन एकक

प्रलेखन एकक का मुख्य उद्देश्य इं.गां.रा.क.केन्द्र द्वारा आयोजित सभी कार्यक्रमों का तथा शैक्षणिक कार्यक्रमों से संबंधित सभी सामग्री का संग्रहण कर सुरक्षित रखना है तथा इस सामग्री से एक विश्वसनीय संस्थागत स्मृति का निर्माण करना है।

फरवरी, 2017 में कलानिधि स्थापना दिवस के अवसर पर कलानिधि में 'कला दृष्टि गैलरी' का उद्घाटन किया गया। इस गैलरी का प्रमुख उद्देश्य इं.गां.रा.क.केन्द्र द्वारा पूर्व वर्षों में आयोजित संगोष्ठियों, सम्मेलनों के फोटोग्राफ्स, कार्यक्रमों के विवरण, केटालॉग, प्रकाशन, विवरणिका इत्यादि को प्रदर्शित करने का है।

बसंत पंचमी के अवसर पर 'कलादृष्टि गैलरी' का उद्घाटन राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के अध्यक्ष डॉ. बलदेव भाई शर्मा (बीच में) और इं.गां.रा.क.केन्द्र के सदस्य सचिव डॉ. सच्चिदानंद जोशी द्वारा किया गया।

रिप्रोग्राफी एकक

कलानिधि का रिपोग्राफी एकक मुख्यतः देश/विदेश के हेरिटेज ग्रंथालयों एवं निजी संग्रहों में उपलब्ध भारतीय कला और संस्कृति की दुर्लभ और अप्रकाशित पांडुलिपियों की माइक्रोफिल्मिंग/डिजिटलीकरण का कार्य करता है। वर्ष 2016–17 के दौरान इस इकाई ने निम्नलिखित प्रमुख कार्य किए–

- श्री जैन मठ, मूदबीदरी, कर्नाटक में 4,611 पांडुलिपियों की डेटाशीट पूरी की जा चुकी है। इनका डिजिटाइजेशन कार्य जल्दी ही शुरू होने की संभावना है।
- अप्रकट प्रयास जैसे कि एनालॉग/डिजिटल स्रोतों के संबंध में परिरक्षणात्मक/संरक्षणात्मक उपचार के लिए प्रतिलिप्यंकन/डिजिटल छवियों की अभिपुष्टि समुचित उपचारात्मक/सुधारात्मक उपायों के माध्यम से करना और इस डेटा की साज–संभाल का काम भी सफलतापूर्वक किया गया।
- एकक ने लाइब्रेरी मैनेजमेंट सॉफ्टवेयर (लिबसिस) के माध्यम से पांडुलिपियों की ग्रंथ–सूची संबंधित सूचना की पुनर्प्राप्ति में सहयोग दिया और विषय–वार पुस्तक–सूची के प्रकाशन हेतु उसका परिवर्तन एमएस एक्सैल में करने में सक्रिय योगदान किया।

वर्ष के दौरान, पाण्डुलिपियों की माइक्रोफिल्म के संग्रह से संबंधित निम्नलिखित कार्य पूरे किए गए–

- माइक्रोफिल्म रोल की व्यक्तिगत जाँच — 21935 रोल
- एयरिंग ऑफ माइक्रोफिल्म रोल — 1247 रोल
- माइक्रोफिल्म रोल की लेबलिंग — 1107 रोल
- डिजिटल छवियों की वेलीडेशन — 142 रोल
- रजिस्टर में प्रविष्ट एमएसएस का मेनुअल विवरण — 535 एमएसएस
- एक्सल शीट में पुनः ली गई सूचना — 527 रोल
- माइक्रोफिल्म रोल की पुनः धुलाई — 318 रोल
- माइक्रोफिल्म रोल की प्रोसेसिंग — 127 रोल

पांडुलिपि एकक

पांडुलिपि एकक में, उपयुक्त शीर्षकों के साथ पांडुलिपियों के माइक्रोफिल्म संस्करण के कैटालॉग रिकॉर्ड तैयार किए गए हैं। ये अभिलेख 'मार्क–21' नामक व्यापक तौर पर स्वीकृत मानदंडों वाले प्रारूप का प्रयोग करते हुए तैयार किए गए हैं। अभी तक तैयार किए गए अभिलेखों की कुल संख्या 2,54,638 है।

स्लाइड एकक

एक विशाल स्लाइड संग्रहालय स्थापित किया गया है। इसका उद्देश्य एक संसाधन केन्द्र विकसित करने का है जहां भारतीय कला रूपों, वास्तुकला स्थलों, मंदिरों, आदि के उच्च रिजोल्यूशन वाले डिजिटल चित्र शोध के लिए सुलभ हो सके। स्लाइड संग्रहालय ने ब्रिटिश पुस्तकालय की 847 स्लाइडों को सत्यापित किया, मल्टीपल कंपेक्ट डिस्कों में 1479 केटालॉग कार्डों (भेंट में प्राप्त स्लाइडों) की प्रविष्टि की और 5894 कैटालॉग कार्डों की लिबसिस डाटाबेस में प्रविष्टि की। इसके अलावा ब्रिटिश पुस्तकालय संग्रह की 1126 छवियों की लिबसिस डाटाबेस में मैटाडैटा में प्रविष्टि की गई।

प्रकाशन

संदर्भ पुस्तकालय के तहत आने वाले छह प्रकाशनों में से चार प्रकाशन समालोच्य अवधि में पूरे कर लिए गए और जारी कर दिए गए। इनकी स्थिति इस प्रकार है:

- एबीआईए खण्ड IV विषय का प्रकाशन कर सम्मिलित कर दिया गया।
- पाण्डुलिपि भाग :– विषयानुसार सूचियों का विमोचन वेद संहिता एवं भाष्य खण्ड I वेद (ब्राह्मण अरण्यक) खण्ड–1 (2, 3) के कैटालॉग का इस वर्ष विमोचन किया गया।
- प्रो. सुनीति कुमार चटर्जी द्वारा लिखित "इन्डोनेशियाः ट्रैवल विद टेगौर" (बांगला में द्वीपोमय भारत) पुस्तक का विमोचन किया गया।
- कला में शोध मेथडोलॉजी सेमिनार प्रोसीडिंग्स का विमोचन किया गया।
- 'नेत्रप्रकाशिका' के अनुवाद और संपादन का काम चल रहा है। (पाण्डुलिपि इकाई)
- 'रामायण' पर आयोजित संगोष्ठी की कार्यवाही के सम्पादन का कार्य प्रगति पर है।

प्रदर्शनीः

कलानिधि प्रभाग द्वारा निम्नलिखित प्रदर्शनियाँ आयोजित की गईं:

- एम.के.पी. (पीजी) कॉलेज, देहरादून में 14 मार्च से 2 अप्रैल, 2016 तक 'रामायण इन इंडियन विजुअल आर्ट' पर।
- पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला, पंजाब के सहयोग से 22 मार्च से 11 अप्रैल, 2016 तक 'इमेज़िज ऑफ इंडिया– ए फेस्सिनेटिंग जर्नी थ्रू टाइम'।
- एशियन कल्चर सेंटर, कोरिया के सहयोग से 10 जून, 2016 से 31 जनवरी, 2017 तक 'रबीन्द्रनाथ टैगोरः दि आर्ट एंड लाइफ ऑफ ए कॉस्मोपॉलिटन'।
- 21 जून से 10 जुलाई, 2016 तक 'योग इन इंडियन विजुअल आर्ट'।
- 26 से 30 सितम्बर, 2016 तक 'मेटलिक आर्ट ऑफ इंडिया'।
- सितम्बर, 2016 में 'ट्राइब्स ऑफ ईस्टर्न इंडिया' ।
- 15 सितम्बर, 2016 से 31 जनवरी, 2017 तक 'आचार्य अभिनवगुप्त– 'ए जीनियस ऑफ कश्मीर'।
- बिलाबोंग हाई इंटरनेशनल स्कूल, भोपाल में 16 से 19 नवम्बर, 2016 तक 'इमेज़िज ऑफ इंडिया', 'अजंता', 'पीपुल्स ऑफ इंडिया' और 'म्यूजिकल इंस्ट्रूमैंट्स ऑफ इंडिया'।
- जबलपुर में 16 से 24 दिसम्बर, 2016 तक 'रामायण इन इंडियन विजुअल आर्ट'।
- कलानिधि भवन में 'सुनील जन्ना कलेक्शन' चित्र प्रदर्शिनी।

सम्मेलन/संगोष्ठियाँ/कार्यशालाएँ

1. नई शिक्षा नीति में पुस्तकालयों की भूमिका' विषय पर दिनांक 9 मई, 2016 को (आईएएसएलआईसी, कोलकाता) के सहयोजन में एक दिन की संगोष्ठी आयोजित की गई।
2. 'आर्यन घाटी लद्दाख की दृश्य और अदृश्य विरासत' पर 12 से 29 जुलाई, 2016 तक कार्यशाला का आयोजन किया गया।
3. ई–ऑफिस के तहत 22 से 24 अगस्त, 2016 तक कम्प्यूटर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया।
4. इं.गा.रा.क.केन्द्र में 'भारत पांडुलिपि स्रोतों का वैश्विक प्रभाव' पर 7 अक्टूबर, 2016 को एक दिन की संगोष्ठी आयोजित की गई।
5. हरदयाल म्यूनिसिपल हैरिटेज पब्लिक लाइब्रेरी और दक्षिण एशियाई यूनिवर्सिटी के सहयोग से 11 से 13 दिसम्बर, 2016 तक 'साहित्यिक विरासत की रक्षा, संरक्षण और सुरक्षा' पर एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया गया।

अन्य कार्य

- स्लाइड एकक द्वारा 'डॉक्यूमेंटेशन ऑफ दि मोनास्ट्रीज इन जंस्कर रीजन ऑफ लद्दाख' परियोजना शुरू की गई। स्लाइड संग्रह में बौद्ध मठों में मौजूद भित्ति–चित्रों, टंकाओं, मूर्तिकलाओं के बारे में 1000 से अधिक विजुअल शामिल किए गए।

स्मारक/सार्वजनिक व्याख्यान/परिचर्चा सत्र

- दिनांक 19 अगस्त, 2016 को प्रो. नन्द किशोर पाण्डेय का 'भक्ति साहित्य की सम्पादन कला' विषय पर आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी स्मारक वार्षिक व्याख्यान का आयोजन किया गया।
- दिनांक 30 अगस्त, 2016 को डॉ. (श्रीमती) नीरू मिश्रा द्वारा 'दि लीजेंड ऑफ ढोला मारूः एन इलस्ट्रेटेड टॉक' पर व्याख्यान का आयोजन किया गया।
- 8 अक्टूबर, 2016 को रंगनाथन रिसर्च सर्कल के सहयोग से 'यूजर्स पर्सपैक्टिव ऑफ लाइब्रेरी सर्विस इन इंडिया' पर एक सामूहिक चर्चा की गई।
- फरवरी, 2017 को लांडुप दोरजी द्वारा 'आर्यन दर्ड कल्चर ऑफ लद्दाख' पर एक परिचर्चा का आयोजन किया गया।
- 29 मार्च, 2017 को श्री निर्मल कुमार का 'ए. के. कुमारस्वामी का चिन्ताराः अध्येता, कला और संस्कृति' पर व्याख्यान का आयोजन किया गया।

पुस्तक वाचन श्रृंखला

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के संदर्भ पुस्तकालय ने युवा शोधार्थियों द्वारा लिखी गई नई पुस्तकों की प्रस्तुति का कार्यक्रम आरंभ किया है। प्रस्तुति के बाद पुस्तक के लेखक के साथ पुस्तक पर चर्चा होती है। इसका उद्देश्य है कि पुस्तकों के पठन में रुचि और उत्कंठा पैदा की जा सके। समालोच्य अवधि के दौरान निम्नलिखित पुस्तकें और उनके लेखकों का परिचय कराया गयाः

- 28 अप्रैल, 2016 को श्री दिनेश खन्ना द्वारा 'अभिनय चिन्तन'।
- 26 मई, 2016 को डॉ. गंगा प्रसाद विमल द्वारा 'मानुशखोर'।
- 23 जून, 2016 को श्री अश्विनी भटनागर द्वारा 'द हाई बाऊंसिंग लवर'।
- 28 जुलाई, 2016 को श्री ओमा शर्मा द्वारा 'अंतर्यात्राएंः वाया वियना'।
- 11 अगस्त, 2016 को डॉ. सुचिता मलिक द्वारा 'वीमेन एक्सट्राऑर्डिनेयर'।
- 22 सितम्बर, 2016 को श्री निर्मल कुमार द्वारा ''व्यास विष्णु रूपाय''।
- 27 अक्टूबर, 2016 को डॉ. अल्का पाण्डेय एवं अदिति अन्नान द्वारा 'इंडियन मॉडर्निटीः द एस्थेटिक्स ऑफ ब्रिज मोहन आनंद'।
- 24 नवम्बर, 2016 को प्रो. गोबिंद प्रसाद द्वारा 'वर्तमान की धूल' (तीसरा काव्य संग्रह)।
- 29 जनवरी, 2017 को श्री सोपान जोशी द्वारा 'जल थल मल'।
- 23 फरवरी, 2017 को श्रीमती प्रतिभा ज्योति द्वारा 'एसिड वाली लड़की'।
- 23 मार्च, 2017 को श्री अखिलेश आर्येन्दु द्वारा 'वेद में मातृभूमि की वंदना'।

कार्यक्रम ख: सांस्कृतिक सूचना-विज्ञान प्रयोगशाला

मल्टी–मीडिया शोध केन्द्र–सांस्कृतिक सूचना–विज्ञान का सृजन कला–रूपों से जुड़े विषयों और सूचना–प्रौद्योगिकी के बीच सहयोग स्थापित करने के लिए किया गया है जिसके फलस्वरूप सांस्कृतिक प्रलेखन में नई प्रौद्योगिकी के प्रयोग, विकास और प्रदर्शन का मार्ग प्रशस्त हो सके। इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा कला और संस्कृति के क्षेत्र में प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग के क्षेत्र में इस अवधि में किए गए कुछ अग्रगण्य कार्य इस प्रकार हैं–

देवनारायण पर एक इंटरैक्टिव मल्टीमीडिया प्रस्तुति

राजस्थान की सर्वाधिक लोकप्रिय लोककथाओं में से एक कथा है देवनारायण की, जिसे इन देवता के भक्तों द्वारा सदियों से गाया और प्रसारित किया जाता रहा है। इस कथा में समकालीन सामाजिक संघर्षों, अन्तर्विरोधों और मेल–जोल का एक अति रोमांचकारी, भावपूर्ण एवं जीवन्त दृष्टिकोण दिखाई देता है। देवनारायण एक लोक देवता हैं जिनकी पूजा राजस्थान और मध्य प्रदेश के गुज्जरों के देहाती समुदायों द्वारा की जाती है। देवनारायण के मौखिक महाकाव्य के प्रदर्शन के दौरान भोपा नामक युगल पुरूष गायकों द्वारा सारी रात जागरण किया जाता है। इसमें लम्बी कंठस्थ कथाओं जिसमें गीत एवं संभाषण (गाव और अर्थाव) दोनों शामिल होते हैं, की प्रस्तुति एक रंगीन स्क्रोल जिसे 'फड़' कहा जाता है, के सामने भोपा नामक पेशेवरों द्वारा गीत और अभिनय के माध्यम से की जाती है।

इस डीवीडी के माध्यम से देवनारायण की कथा को बहु–संवेदी मल्टीमीडिया विधि से प्रस्तुत किया जाएगा जिससे मौखिक दर्शन एवं ऑडियो विजुअल के बीच की आवश्यक कड़ियाँ गायब नहीं होंगी। इसी के साथ–साथ अन्य अर्थ जैसे समुदाय, इतिहास एवं पहचान, धार्मिक विचार एवं शक्ति भी उभर कर आएंगे जिससे हमें दूसरे स्तर के अर्थ एवं ध्वनि, छवि, शब्द एवं विश्व के बीच कड़ी बनाने के लिए एक साधन प्राप्त होगा।

देवनारायण मल्टीमीडिया परियोजना डाटा परीक्षण एवं सत्यापन के अंतिम चरण में है एवं जल्दी ही इसका विमोचन किया जाएगा।

वैदिक परम्परा पोर्टल

भारत सरकार, संस्कृति मंत्रालय के तत्वावधान में इं.गां.रा.क.केन्द्र ने वैदिक परम्परा पोर्टल के डिजाइन और विकास पर एक परियोजना प्रारम्भ की है। वैदिक पोर्टल का उद्देश्य–वेदों में व्याप्त संदेश को प्रसारित करना है। वैदिक परंपरा के बारे में किसी प्रकार की सूचना–चाहे वह अमूर्त मौखिक परंपराओं के बारे में हो या फिर प्रकाशित पुस्तकों/पांडुलिपियों, या साधनों (यज्ञ से जुड़ी वस्तुओं) के बारे में हो– चाहने वाले प्रयोक्ता के लिए यह पोर्टल सुलभ समाधान सिद्ध होगा। वैदिक प्रज्ञा को आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टि से समझना, विशेष रूप से विज्ञान, गणित, विमान–शास्त्र, खगोल–विज्ञान, ज्योतिष शास्त्र, आयुर्विज्ञान, वास्तुशिल्प, विधिक प्रणाली, धातु–विज्ञान, पर्यावरणीय अध्ययन, अनुष्ठानिक क्रियाओं आदि को समझना एक वृहद् कार्य है जिसे इस परियोजना के तहत प्रारम्भ किया गया है। आज की तारीख में इस परियोजना की प्रमुख उपलब्धियां इस प्रकार हैं:

- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद सहित सभी वेदों का परिचय और संरचना इस पोर्टल पर उपलब्ध कराई गई है।
- देश के अलग–अलग हिस्सों में वैदिक संहिताओं का सस्वर पाठ/गायन (वेद पाठ)– स्वराघात और रूपांतरों सहित ऑनलाइन उपलब्ध है।

- वैदिक प्रज्ञा के बारे में जागरूकता पैदा करने और उसका प्रचार करने की दृष्टि से प्रतिष्ठित विद्वानों की रिकॉर्डिंग और वर्तमान में उनकी प्रासंगिकता।
- पांडुलिपियों और प्रकाशित ग्रंथों के रूप में उपलब्ध वैदिक संहिताओं, ब्राह्मणों, अरण्यकों, उपनिषदों और वेदांगों आदि के मूल–पाठ और प्रकाशित पुस्तकों को पोर्टल पर एकीकृत किया गया है।

इसके अतिरिक्त, वैदिक उपकरणों की एक स्थायी दीर्घा इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में स्थापित की जाएगी जिसमें यज्ञ में प्रयुक्त होने वाली प्रौद्योगिकी एवं साधनों का प्रदर्शन किया जाएगा। वर्तमान में सभी आंकड़ों को संकलित कर ignca.nic.in पर अपलोड किया गया है। नया पोर्टल मैसर्ज सी. नैट इंफोटेक द्वारा विकसित किया जा रहा है।

राष्ट्रीय सांस्कृतिक श्रव्य–दृश्य अभिलेखागार (एनसीएए)

एनसीएए श्रव्य–दृश्य रूप में सांस्कृतिक संसाधनों का वर्चुअल नेटवर्क होगा जिसमें निम्नलिखित सम्मिलित होंगे –

- ऑडियो–विजुअल संसाधनों के लिए आधुनिकतम डिजिटलीकरण और डिजिटल भंडारण प्रणाली को स्थापित करना।
- इन विजुअल भण्डारों का वर्चुअल नेटवर्क स्थापित करना एवं उनके संसाधनों तक ऑनलाइन पहुंच प्रदान करना।
- श्रव्य–दृश्य संसाधनों के उत्पादन, भंडारण और पुनर्प्राप्ति में प्रयुक्त तरीकों और प्रौद्योगिकियों का मानकीकरण और आवधिक उन्नयन।

इसके तहत मौखिक परंपराएँ, पारंपरिक शिल्प और वस्त्र, नृत्य, संगीत और नाटकीय प्रथाएँ, सांस्कृतिक प्रथाएँ और पारंपरिक ज्ञान इत्यादि शामिल की जाएंगी। आज की तारीख तक निम्नलिखित उपलब्धियां प्राप्त की गई हैं:

- 13 साझेदारी संस्थानों से अर्जित 15000 घंटों की श्रव्य–दृश्य सामग्रियों को डिजिटलाइज किया गया। www.ignca. gov.in पर ऑनलाइन एक्सेस के लिए 4000 घंटों का डेटा उपलब्ध है।
- इसके अतिरिक्त, 2017–18 में 15000 घंटों की श्रृव्य–दृश्य सामग्री को डिजिटलाइज करने का प्रस्ताव है।
- आईएएसए के दिशा–निर्देशों के अनुसरण में मीटाडाटा मानक और डिजिटलीकरण करना।
- दिशा–निर्देश तैयार करने में साझेदारी संस्थानों की मदद करने के लिए आईपीआर सलाहकार समिति की स्थापना करना।
- इस अभिलेखागार के लिए आईएसओ 16363:2012 प्रमाणन (ट्रस्टेड डिजिटल रिपोजिटरी) प्राप्त करने के लिए प्रक्रिया प्रारंभ की।

इ.गां.रा.क.केन्द्र की वेबसाइट

इं.गां.रा.क.केन्द्र के विभिन्न विभागों से एवं क्षेत्रीय केन्द्रों से प्राप्त सूचना वैबसाइट पर अद्यतन की जाती है। नए पोर्टल को विकसित करने के लिए साँस्कृतिक सूचना–विज्ञान प्रभाग मैसर्स सी नैट इन्फोटेक के साथ भी समन्वय कर रहा है।

कलासम्पदा

गतिविधियों के लगभग 21144 चित्र, सीसीआरटी के 12075 संपादित चित्र, रवीन्द्र भवन के 7847 चित्र, 1316 पाण्डुलिपियाँ, 74 पुस्तकें, 1921 एमएसएस कलासंपदा (आईजीएनसीए के इन्ट्रानेट पर पहुंच के लिए) एकीकृत की गईं। एआईसीटीई के 'कुशल ज्ञान भागीदार' के रूप में आईजीएनसीए में साँस्कृतिक सूचना पाठ्यक्रम आयोजित करने के लिए आईजीएनसीए और एआईसीटीई के बीच एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर भी किए गए।

संगोष्ठियां/कार्यशालाएं

- अमृता विश्वविद्यालय के सहयोग से 'केरल स्कूल ऑफ एस्ट्रोनॉमी एण्ड मैथमैटिक्सः कॉन्ट्रीब्यूशन एण्ड कंटेम्पोररी रेलीवेंस' पर एक राष्ट्रीय सेमिनार दिनांक 4 से 5 नवम्बर, 2016 को आयोजित किया गया।
- दिनांक 9 फरवरी, 2017 को सेंचूरियन यूनिवर्सिटी, भुवनेश्वर द्वारा 'रिलीजन इन डिजिटल एशिया' विषय पर आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय गोल मेज सम्मेलन में गीत गोविंद परियोजना प्रस्तुत की गई।

- इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू) एवं भारतीय शिक्षण मंडल के सहयोग से दिनांक 23 से 25 फरवरी, 2017 को आयोजित 'भारत बोध राष्ट्रीय सम्मेलन' में सांस्कृतिक सूचना विज्ञान की टीम ने भाग लिया। गीत गोविंद और वैदिक विरासत पोर्टल पर कियोस्क इस कार्यक्रम के दौरान प्रदर्शित किया गया।
- 26 जून, 2016 को सीसीआरटी द्वारा आयोजित कार्यशाला के प्रतिभागी शिक्षकों के समक्ष 'डिजिटलाइजेशन एण्ड डिस्सेमिनेशन ऑफ आर्ट एण्ड कल्चरल रिसोर्सिस' प्रस्तुत किया गया।
- 22 जनवरी, 2017 को सीसीआरटी द्वारा आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला में संग्रहालयों के क्यूरेटरों के समक्ष 'डिस्सेमिनेशन ऑफ कल्चर इन डिजिटल एज' प्रस्तुत किया गया।

सार्वजनिक व्याख्यान

इस वर्ष निम्नलिखित व्याख्यान आयोजित किए गए–

- दिनांक 10 नवम्बर, 2016 को प्रो. ओम विकास, (पूर्व निदेशक एबीवी–आईआईआईटीएम, ग्वालियर द्वारा 'इवॉलविंग नेशनल स्किल क्वालिफिकेशन फ्रेमवर्क (एनएसक्यूएफ) कॉम्पलाएंट प्रोग्राम ऑन कल्चरल इंफॉर्मेटिक्स' पर व्याख्यान आयोजित किया गया।
- दिनांक 10 जनवरी, 2017 को प्रो. अर्कलगुड रामप्रसाद का 'कल्चरल इंफार्मेटिक्स – एन एप्रोच टु सेटिंग दि एजेंडा फॉर रिसर्च, एजुकेशन, पॉलिसी एण्ड प्रैक्टिस' विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया।
- 22 मार्च, 2017 और 23 मार्च, 2017 को डॉ. सुनील एस. सम्बरे के 'सोमलताः ए प्रीशियस गिफ्ट टु मैनकाइंड' पर 'इफेक्ट ऑफ सोम यज्ञ– ए साइंटिफिक एनालिसिस' पर व्याख्यान क्रमशः आयोजित किए गए।
- श्री आनन्द गायकवाड़ (सेवानिवृत्त कार्यकारी निदेशक एवं कम्पनी सचिव, फिल कॉरपोरेशन लिमिटेड) का 'एंशियंट इंडियन एग्रीकल्चरल हैरिटेजः ऑर्गेनिक फार्मिंग यूजिंग होमा फॉर सस्टेनेबल एग्रीकल्चरल एण्ड क्लाइमेट चेंज अडाप्टेशन' पर एक व्याख्यान 30 मार्च, 2017 को आयोजित किया गया।
- 'एंशियंट इंडियन एग्रोमीटिरोलॉजीः थ्योरी ऑफ वराह मिहिर ऑन रेन कन्सेप्शन एण्ड डिलीवरी– वेलिडेशन एक्सपेरिमेंट फॉर मानसून 2016' पर श्री आनन्द गायकवाड़ द्वारा 31 मार्च, 2017 को एक व्याख्यान प्रस्तुत किया गया।

अध्ययन भ्रमण

आईजीएनसीए के सदस्य सचिव डॉ. सच्चिदानंद जोशी, निदेशक, सांस्कृतिक सूचना विज्ञान श्री पी. झा एवं प्रभारी, दक्षिण पूर्व एशियाई अध्ययन डॉ. बच्चन कुमार के दल ने 5 से 10 मार्च, 2017 के दौरान कम्बोडिया की यात्रा की ताकि अप्सरा राष्ट्रीय प्राधिकरण और इं.गा.रा.क.केन्द्र के बीच पारस्परिक रुचि वाली शोध परियोजनाओं पर चर्चा कर कार्य शुरू किया जा सके।

कार्यक्रम गः सांस्कृतिक अभिलेखागार

5 सितम्बर, 2016 को राजा दीनदयाल की स्थायी गैलरी का उद्घाटन किया गया। वर्ष के दौरान इसे देखने के लिए 1000 से अधिक आगंतुक पधारे और 700 गाइडिड टूर संचालित किए गए। गैलरी के प्रचार के लिए डैस्क कलेंडर भी तैयार किए गए।

साँस्कृतिक अभिलेखागार ने दूसरी स्थायी गैलरी की स्थापना के लिए डॉ. कपिला वात्स्यायन के संग्रहण की छंटाई व एसेसिंग का कार्य भी किया। प्राप्ति क्रमांक अंकित 1600 फोटोग्राफों को अलग फोल्डरों में रखा गया।

साँस्कृतिक अभिलेखागार में एलिजाबेथ ब्रूनर की पेंटिंग्स को उचित तरीके से स्टोर किए जाने के लिए 200 चित्रकलाओं को छांटकर उनके लिए फोल्डर और कैप्शन तैयार किए गए।

'विश्व–स्मृति' कार्यक्रम, यूनेस्को

भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय ने इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र को यूनेस्को के 'विश्व–स्मृति' कार्यक्रम के कार्यान्वयन से संबंधित सभी मामलों में नोडल एजेंसी के रूप में अभिनिर्धारित किया है। विश्व की दस्तावेजी संपदा को परिरक्षित कर सुगम्य बनाने और संरक्षित और परिवर्धित करने के लिए यह कार्यक्रम 1992 में शुरू किया गया था। 'विश्व–स्मृति' कार्यक्रम का मिशन है– विश्व की दस्तावेजी संपदा का संरक्षण करना और इसकी सार्वभौम एवं स्थायी सुलभता सुनिश्चित करना। उप–समूह एवं विशेषज्ञ समिति की सिफारिशों के आधार पर इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने हाल ही में 'विश्व–स्मृति' रजिस्टर, 2016' में भारत की प्रविष्टियों के रूप में दर्ज कराने के लिए दो विरासती दस्तावेजों को चिह्नित किया है। ये दो दस्तावेज हैं– i) भारतीय अभिलेखागार से प्राप्त गिलगित पांडुलिपि, और ii) एशियाटिक सोसाइटी, कोलकाता से प्राप्त 'मैत्रेय–व्याकरण'। विशेषज्ञ समिति ने इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र को यह सुझाव भी दिया है कि वह 'विश्व–स्मृति' कार्यक्रम के अंतर्गत कतिपय प्रोत्साहक गतिविधियां भी संचालित करे जिनमें ये गतिविधियां शामिल हो सकती हैं– क) पुरातन एवं दुर्लभ दस्तावेजों की महत्ता के बारे में विरासती संस्थाओं में जागरूकता पैदा करना; (ख) दस्तावेजी संपदा का एक राष्ट्रीय रजिस्टर संकलित करना; और (ग) 'विश्व–स्मृति' कार्यक्रम से जुड़े सभी मामलों को संभालने के लिए इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में एक विशेष प्रकोष्ठ की स्थापना करना।

परियोजनाः इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की स्रोत सामग्री का पुरालेखन करना

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र ने 'इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की स्रोत सामग्री की पुरालेखन परियोजना' शुरू की है। इसका प्रयोजन है कि इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के विभिन्न प्रभागों में उपलब्ध समस्त पुरालेखीय सामग्री की एक सूची तैयार की जाए। इस परियोजना के प्रथम चरण के अंतर्गत विभिन्न प्रकार की पुरालेखीय सामग्री की एक सूची तैयार की जा चुकी है। सभी संग्रहों की दशा और उनके सूचीकरण एवं प्राप्ति–क्रमांकन की स्थिति का मोटा–मोटी लेखा–जोखा तैयार कर लिया गया है। इसका प्रथम चरण 2015 में पूरा किया जा चुका है। इस परियोजना का दूसरा चरण दिसम्बर, 2015 में शुरू कर दिया गया है। इस चरण में प्रत्येक मद के अलग–अलग रिकॉर्ड एक मानक प्रारूप में तैयार किए जा रहे हैं। इस परियोजना में इं.गां.रा.क.केन्द्र के विभिन्न विभागों में संग्रहीत समस्त सामग्री के लिए एक यूजर इंटरफेस प्रदान करने के लिए एवं सामग्री के संगठन हेतु परामर्श भी प्रदान किया जाएगा। परियोजना का परामर्शी भाग अभिलेखागार एवं एथ्नोम्यूजिकोलॉजी शोध केन्द्र (एआरसीई), अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडियन स्टडीज (एआईएसएस), गुडगाँव को सौंपा गया है।

भिन्न–भिन्न विभागों में श्रव्य–दृश्य सामग्री की संख्या के बारे में तैयार की गई विवरणी निम्न प्रकार है–

साँस्कृतिक अभिलेखागार	11476
जनपद–सम्पदा	6564
मीडिया सेंटर	15284

इसके अतिरिक्त जनपद–सम्पदा विभाग में (1) मास्कों; (2) स्क्रोलों; और (3) उत्तर–पूर्व केन ऑब्जेक्ट्स (आंशिक) के रिकार्ड सृजित किए गए।

इस परियोजना के नियम एवं शर्तों के अनुसार, 27 मार्च, 2017 को इस परियोजना की अवधि पूरी हो गई है।

कार्यक्रम घः मीडिया केन्द्र

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के मीडिया केन्द्र का प्रमुख दायित्व श्रव्य/दृश्य प्रलेखन/शोध और इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की समस्त गतिविधियों को आगे बढ़ाना है। वर्ष 2016–17 के दौरान मीडिया केन्द्र ने अपने शोध प्रलेखनों और पुरालेखन भंडारण का कार्य आगे बढ़ाया और डीडी–भारती पर नियमित प्रसारण के माध्यम से तथा नियमित फिल्म शो, विशेष स्क्रीनिंग, डीवीडी प्रकाशन के माध्यम से जन साधारण में प्रलेखन के प्रसार की दिशा में कई महत्वपूर्ण प्रयास किए। मीडिया केन्द्र ने 'वैदिक विरासत' संबंधित इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अनन्य पोर्टल के लिए सॉफ्टवेयर भेजे तथा इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के विभिन्न प्रभागों की वर्तमान परियोजनाओं के बारे में आईजीएनसीए की वेबसाइट को नियमित रूप से अद्यतन किया।

प्रलेखन

उत्तराखण्ड के 'रम्माण' लोक थिएटर का गहन प्रलेखन

मीडिया केन्द्र ने 12 से 24 अप्रैल 2016 तक यूनेस्को से मान्यता प्राप्त अमूर्त विरासत 'रम्माण' का विस्तृत प्रलेखन कार्य आरंभ किया। उत्तराखण्ड, जिला चमोली के, सलूर डूंगरा गाँव में 15 दिनों तक कई कैमरों के साथ 50 से अधिक दस्तावेजों को कवर कर व्यापक प्रलेखन कार्य किया।

क्षेत्रीय प्रलेखन

- गुवाहाटी, असम के कामाख्या मंदिर के अनुष्ठानों का दो कैमरों द्वारा वीडियो प्रलेखन।

आईजीएनसीए के मीडिया केन्द्र द्वारा 'रम्माणः फोक थिएटर ऑफ उत्तराखंड' का गहन प्रलेखन।

- आगरा में राम बारात का दो कैमरों से वीडियो प्रलेखन।
- जनपद–सम्पदा विभाग के लिए वाराणसी में अलग–अलग रामलीलाओं के 'नकटई' अध्यायों का दो कैमरों से क्षेत्रीय प्रलेखन।
- वृतचित्र परियोजना, 'इन्द्रप्रस्थ' के लिए एकल कैमरे से क्षेत्रीय प्रलेखन।

अन्य प्रमुख प्रलेखन

- 'कथाकारः इंटरनेशनल स्टोरीटैलर्स फेस्टीवल'–फरवरी 2016 से नवम्बर, 2016।
- 'स्वच्छ सृष्टि' कार्यक्रम।
- 'भिन्न शड्ज' संगीत श्रृंखला।
- 'अभिनवगुप्तः दि जीनियस ऑफ कश्मीर' पर एक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी।
- 'थ्योरेटिकल एंड कॉग्निटिव आस्पेक्ट्स ऑफ रॉक आर्ट' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी।
- अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनः 'वीमन एंड बुद्धिज्मः पर्सपेक्टिव्स ऑन जेण्डर, कल्चर एण्ड एम्पॉवरमैंट' पर।
- 'शीरी होड़ूः सेलिब्रेटिंग दि ज्युइश सागा ऑफ इंडिया' पर अंतर–राष्ट्रीय विचार–गोष्ठी।

'पोस्ट प्रोडक्शन' (परवर्ती निर्माण)

वृत्तचित्र

- बी.डी.गर्ग कलेक्शन के बारे में 'हिस्ट्री ऑफ इमोशन्स एण्ड इमेज़िज'
- डॉ. नामवर सिंह
- प्रोफेसर देवेन्द्र स्वरूप
- 'इन्द्रप्रस्थ' पर फिल्म

परवर्ती निर्माण (रुटीन पोस्ट प्रोडक्शन)

मीडिया सेन्टर ने गत वर्ष के दौरान किए गए प्रलेखनों के संबंध में विशाल परवर्ती निर्माण का कार्य एवं इं.गां.रा.क.केन्द्र के अन्य विभागों की परियोजनाओं के लिए शोध, प्रलेखन एवं प्रचार के उद्देश्य से भी कार्य किया। कुल मिलाकर 70 विषयगत (थीमेटिक) परवर्ती निर्माण शोध, प्रलेखन, प्रसार के उद्देश्य से शुरू करके पूरे किए गए।

मीडिया सेन्टर की नियमित फिल्म स्क्रीनिंग (प्रत्येक माह के दूसरे और चौथे शुक्रवार को)

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के निजी संग्रह से एवं अन्य संगठनों से प्राप्त संग्रह से नियमित फिल्म स्क्रीनिंग मीडिया सेन्टर में की जाती है। फिल्म स्क्रीनिंग के पश्चात् अधिकांश फिल्मों के निर्देशक के साथ प्रश्नोत्तर सत्र का दौर चलता है। कुछ प्रदर्शित फिल्मों की सूची निम्नलिखित है–

- श्रीमती मधुमिता नाग द्वारा 'त्रिपुरा की बहुसंख्यक जनजातीय संस्कृति'।
- डॉ. जी.एस. रैना द्वारा 'आगा हशर– एक परम्परा'
- श्री महेश तिवारी द्वारा 'फ्रॉम पाइटी टु प्लेंटी'
- श्रीमती रुम्पा गुइन (संस्कृति मंत्रालय द्वारा समर्थित) द्वारा 'ब्लेसिंग्सः गुरू ड्राक्मार चाम'
- श्री अरिबम श्याम शर्मा द्वारा 'यल्हो जागोई'

- श्री सुजीत चक्रवर्ती द्वारा 'नागालैंड की कोन्याक्स एवं अन्य जनजातियाँ'
- श्री गौतम घोष द्वारा 'दि मैजिक ऑफ मेकिंग–के.जी. सुब्रमण्यम्'
- श्री बप्पा रे द्वारा 'उत्तर–पूर्व भारत में रामकथा की लोक परम्परा' एवं श्री हिमांशु जोशी द्वारा 'कुमाऊंनी रामलीलाः एक दुर्लभ परम्परा'
- श्री सौरभ किशोर द्वारा 'ताना भक्त की कथा–नाटक विरासत'
- श्री एम.के. रैना द्वारा 'कश्मीर के भाण्ड पाथर लोक थियेटर पर पुनर्विचार'
- श्री एन. राधाकृष्णन द्वारा 'कथकली–केरल की कला' (भाग 1 और 2)
- श्री एम. लिंगराज द्वारा 'मैसूर का लोककला संग्रहालय'
- श्री एस.एस. राजेश द्वारा 'दक्षिण कन्नड़– दि लैंड ऑफ दी मदर गॉडेस'
- डॉ. लवलिन थडानी द्वारा 'आशिक–ए–वतनः मौलाना आज़ाद'
- श्री संजीव भट्टाचार्य द्वारा 'मुखौटे के पीछे'
- श्री एस. विजय गोपाल द्वारा 'टर्निंग दि टाइड– दि फिशरमैन एण्ड बोटमैन ऑफ केरला'
- श्री एस. विजय गोपाल द्वारा 'टर्निंग दि टाइड– फिशर फोक ऑफ तमिलनाडु'
- श्री श्याम शर्मा द्वारा 'नाद नगर ना उजारो'
- श्री बी.आर. भरथाद्री द्वारा 'दि टॉकिंग रॉक्स ऑफ बादामी'
- श्रीमती उषा जोशी द्वारा 'ताबो चोस खोर'
- स्पेशल स्क्रीनिंगः 'दि हिस्ट्री ऑफ इमोशन्स एण्ड इमेज़ेज'
- डॉ. मौली कौशल द्वारा 'लीला इन खेरिया'

दूरदर्शन पर प्रसारण

इ.गां.रा.क.केन्द्र की श्री गौतम घोष द्वारा निर्देशित फिल्म 'दि मैजिक ऑफ मेकिंग के.जी. सुब्रमण्यम्' फिल्म को डी.डी. राष्ट्रीय चैनल पर प्रसारित किया गया एवं उसी फिल्म को एक घंटे के संस्करण में राज्यसभा टी.वी. पर प्रसारित किया गया।

लोकसभा टेलीविजन पर प्रसारण

'श्री रामलीला ऑफ रामनगर, वाराणसी' की श्री रामलीला पर इं.गां.रा.क. केन्द्र द्वारा निर्मित वृतचित्र के भाग 1 से 31 को लोकसभा टी.वी. और डी.डी. भारती चैनल पर सितम्बर एवं अक्तूबर, 2016 माह में प्रसारित किया गया।

डी.वी.डी. का प्रकाशन

गत वर्ष, केन्द्र द्वारा निम्नलिखित डीवीडी प्रकाशित किए गए– 'लीला इन खेरिया', 'मास्टर्स ऑफ हिन्दुस्तानी क्लासिकल म्यूजिक सीरीज'– पं. डालचन्द शर्मा, पं. मणि प्रसाद, विदुशी डॉ. सुहासिनी कोरटकर, पं. श्रीकृष्ण बबनराव हल्दणकर, प्रो. नामवर सिंह पर संस्कृति संवाद श्रृंखला के चार भागों की श्रृंखला का भाग II एवं 'रामानुजीयम'।

विषयगत प्रदर्शनियाँ एवं व्याख्यान माला

इं.गां.रा.क.केन्द्र ने श्री बी.डी. गर्ग से भारतीय सिनेमा के बारे में दुर्लभ अभिलेखीय सामग्री से संबंधित 5809 वस्तुएं अवाप्त कीं हैं।

प्रदर्शनी 'ए स्टोरी कॉल्ड सिनेमाः दि बी.डी. गर्ग आर्काइव्स' का उद्घाटन और केटालॉग का लोकार्पण।
(बाएं से दाएं): डॉ. गौतम चटर्जी, नियंत्रक, मीडिया केन्द्र, श्री ए. सूर्य प्रकाश, अध्यक्ष, प्रसार भारती बोर्ड, डॉ. सच्चिदानंद जोशी, सदस्य सचिव, आईजीएनसीए और श्रीमती विनीता श्रीवास्तव, संयुक्त सचिव, आईजीएनसीए।

मीडिया सेन्टर द्वारा दिनांक 9 फरवरी से 3 मार्च, 2017 तक 'ए स्टोरी कॉल्ड सिनेमाः दि बी.डी.गर्ग आर्काइव्स' पर विषयगत प्रदर्शनी का एवं 13 से 17 फरवरी, 2017 तक पाँच दिवसीय व्याख्यान माला का आयोजन इस प्रकार किया गयाः

- 'हिस्ट्री ऑफ इमोशंस एण्ड इमेज़िज' फिल्म की स्क्रीनिंग के पश्चात् डॉ. जी.एस. रैना, कार्यकारी निर्माता (मीडिया सेन्टर) द्वारा एक वार्ता 13 फरवरी, 2017 को।
- श्री रविकान्त, द्विभाषी इतिहासकार, लेखक एवं अनुवादक (सीएसडीएस) द्वारा 'सिनेफीलिया इन इंडिया' पर 14 फरवरी, 2017 को।
- महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के प्रो. सुरेश शर्मा जो कि परफार्मिंग आर्ट्स विभाग के फिल्म एवं थियेटर प्रमुख हैं, द्वारा 'गर्ग– डाक्यूमैंटेरियन फस्ट, हिस्टोरियन लेटर' विषय पर 15 फरवरी, 2017 को।
- विद्वान, फिल्म इतिहासकार एवं सिनेमा समालोचक श्री अनिल चौबे द्वारा 'सिनेमाः ए विटनैस ऑफ अवर टाइम्स' पर 16 फरवरी, 2017 को।
- राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता फिल्म समीक्षक, लेखक एवं पटकथा लेखक (एफटीआईआई, पुणे) श्री मनमोहन चड्डा द्वारा 'ए सिनेमेटिक कलाइडोस्कोपः राइटिंग्स ऑफ बी.डी. गर्ग' 17 फरवरी, 2017 को।

'ए स्टोरी कॉल्ड सिनेमाः दि बी.डी. गर्ग आर्काइव्स' प्रदर्शनी का फोल्डिड केटालॉग।

इंटरैक्टिव मीडिया कार्यशाला

दिल्ली विश्वविद्यालय एवं अन्य विश्वविद्यालयों के मीडिया विद्यार्थियों के लिए एक इंटरैक्टिव मीडिया कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें विद्यार्थियों की चर्चा मीडिया केन्द्र में मीडिया पेशेवरों से कराना शामिल था।

सहयोजन के माध्यम से विस्तार

केन्द्र द्वारा गुरु गोविन्द सिंह इन्द्रप्रस्थ विश्वविद्यालय, द्वारका, नई दिल्ली में एक सहयोजन विस्तार कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें इं.गां.रा.क.केन्द्र और 'स्वच्छता–देवता एक समान' पर एक फिल्म दिखाई गई और इसके बाद वृत्तचित्र फिल्म निर्माण पर एक इंटरैक्टिव सत्र किया गया।

कार्यक्रम ङः संरक्षण

संरक्षण इकाई, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की भौतिक विरासत के संरक्षण और परिरक्षण का काम करती है। इसमें कला–कृतियों की दशा की जाँच के लिए वैज्ञानिक तकनीकों का प्रयोग करके उन्हें इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के अभिलेखागार के लिए अनुरक्षित किया जाता है।

पुस्तकों का संरक्षण

संरक्षण एकक में राष्ट्रपति भवन से और इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र पुस्तकालय से प्राप्त 90 पुस्तकों का पुनरुद्धार किया गया। इसके अलावा संरक्षण एकक को इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सांस्कृतिक अभिलेखागार, कलादर्शन और जनपद संपदा प्रभाग में मौजूद कला एवं मानव–जाति संबंधी वस्तुओं के संरक्षण में भी लगाया गया।

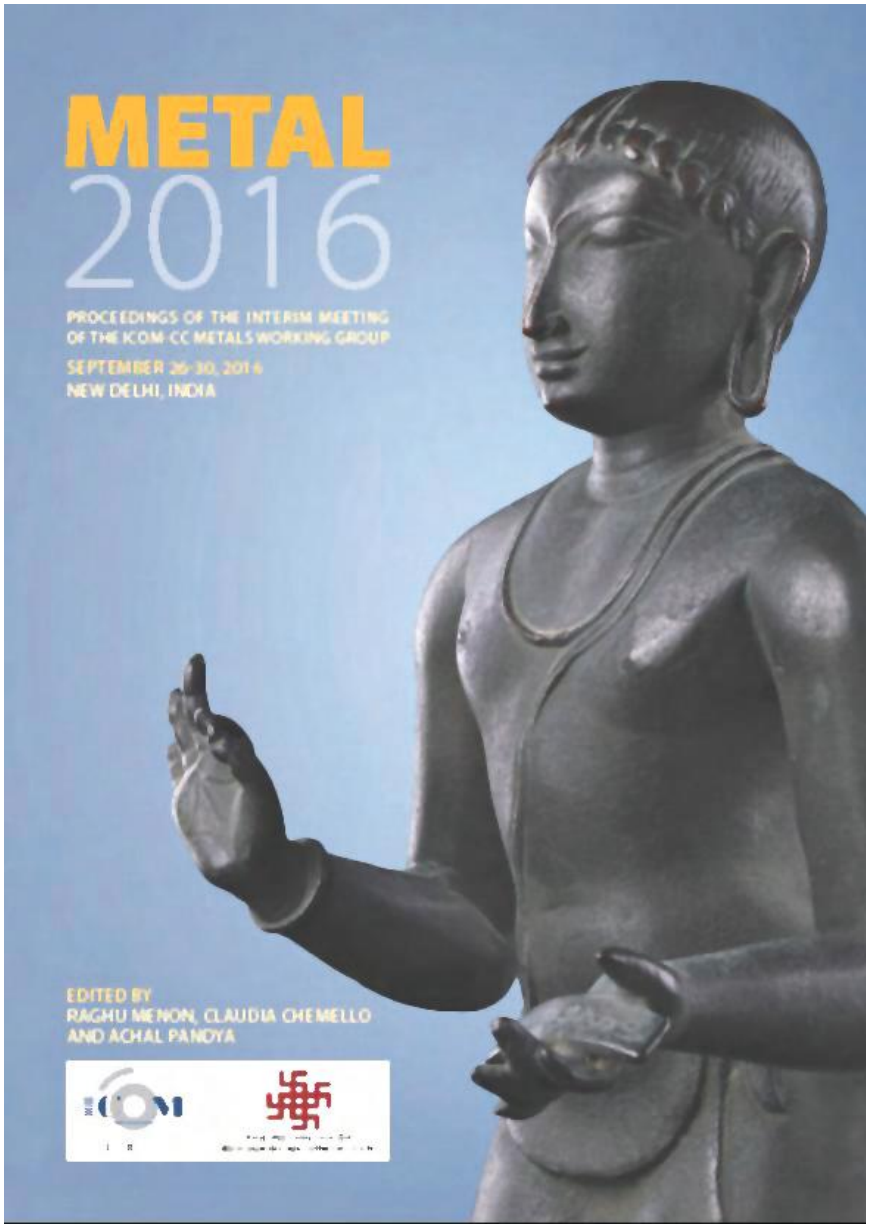

कार्यवाही का कवर पेज

सम्मेलन

- संरक्षण इकाई ने 'इंटरनेशनल कांउसिल और म्यूजियमः कमेटी फॉर कंजर्वेशन' (आईसोएमसीसी) के सहयोग से दिनांक 26 से 30 सितम्बर, 2016 को 'मेटल, 2016' विषय पर एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया। सम्मेलन में लगभग 39 शोधपत्र और 27 पोस्टर प्रस्तुत किए गए। इस सम्मेलन में 100 विदेशी पेशेवर एवं 20 भारतीय पेशेवर संरक्षकों ने प्रतिभागिता दर्ज कराई। सम्मेलन में गोल–मेज चर्चा, विद्यार्थी सत्र, संवाद सत्र, पैनल चर्चा, वाद–विवाद, वार्तालाप सत्र एवं कार्यशालाएं इत्यादि शामिल थीं। समकक्षों द्वारा सम्मेलन की कार्यवाही की समीक्षा जिसमें प्रतिभागियों द्वारा पढ़े गए वैज्ञानिक शोधपत्र शामिल थे, भी सम्मेलन के दौरान निकाली गई।

- इं.गां.रा.क.केन्द्र एवं भारतीय सांस्कृतिक सम्पत्ति संरक्षण अध्ययन संगठन (आईएएससी) ने 'पर्यावरण एवं साँस्कृतिक सम्पत्ति' विषय पर 28 से 30 नवम्बर, 2016 तक एक सम्मेलन का आयोजन किया। यह सम्मेलन आईएएससी स्वर्ण जयंती समारोह का हिस्सा था।

- इं.गां.रा.क.केन्द्र ने हरदयाल म्यूनिसिपल पबलिक लाइब्रेरी एवं दक्षिण एशियाई विश्वविद्यालय के सहयोग से 11 से 13 दिसम्बर, 2016 को 'प्रोटेक्टिंग, कंजर्विंग एण्ड प्रिजर्विंग कलेक्शन्स ऑफ लिटरेरी हैरिटेजः चैलेंजिंग इंटरनेशनल कॉलेबोरेशन' विषय पर सीपीएलएच 2016 अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन की मेज़बानी की। इस सम्मेलन का उद्घाटन हरदयाल म्यूनिसिपल पब्लिक लाइब्रेरी में किया गया एवं इं.गां.रा.क.केन्द्र में दो दिन इसकी मेजबानी की गई।

- इस इकाई ने 'प्रिवेंटिव कंजर्वेशन, लो टैक मेथड्स फॉर क्लाइमेट कंट्रोल' विषय पर भी एक कार्यशाला का आयोजन किया। डॉ. डेविड थिकट, वरिष्ठ संरक्षण वैज्ञानिक ने कार्यशाला का संचालन किया। कार्यशाला में सापेक्षिक आर्द्रता, प्रकाश, प्रदूषण और तापमान के नुकसान और माप के बुनियादी तरीकों को भी विस्तार से समझाया गया। कार्यशाला के दौरान पर्यावरण परिवर्तनों के कारण हुई क्षति का आकलन करने के लिए तकनीक का प्रयोग और इसके नियन्त्रण पर भी चर्चा की गई।

- 'सूती वस्त्र चित्रकलाओं का निरीक्षण एवं प्रलेखन' पर अलवर राज्य संग्रहालय, अलवर में दिनांक 1 से 4 मार्च, 2017 तक चार दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला में राष्ट्रीय संग्रहालय संस्थान के विद्यार्थियों एवं इं.गां.रा.क.केन्द्र के कर्मचारियों सहित 26 प्रतिभागियों एवं व्यवसायी संरक्षकों, क्यूरेटरों, कलाकारों एवं कलेक्टरों ने भाग लिया।

- 'भारत के उत्तर पूर्व क्षेत्र पुस्तकालय एवं संग्रहालय व्यवसायिकों के लिए 'कैपेसिटी बिल्डिंग एण्ड स्किल डवलपमैंट' विषय पर एक कार्यशाला आयोजित की गई। गुवाहाटी में श्रीमंत शंकरदेव कलाक्षेत्र, गुवाहाटी के सहयोग से आयोजित कार्यशाला में मेघालय, असम, मणिपुर और सिक्किम से प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रतिभागियों को पुस्तकों एवं पाण्डुलिपियों की हैंडलिंग, अभिलेखीय बॉक्स की तैयारी आदि के बारे में सिखाया गया।

व्याख्यान

संरक्षण एकक ने 5 अगस्त, 2016 को संरक्षण वास्तुशिल्पी सुश्री उर्वशी श्रीवास्तव के एक व्याख्यान 'शेखावाटीः संरक्षण एवं प्रबंध भागीदारी की ओर' का आयोजन किया।

संरक्षण परियोजना

संरक्षण एकक 'ग्रीन रस्ट इन्हीबिटर प्रोजेक्ट' पर कार्य कर रही है । इस परियोजना के लिए राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में चार शोध पत्र प्रकाशित किए गए। वे हैं–

- 'एन इको–फ्रेंडली मेथड टु स्टैबलाइज अनस्टैबल रस्ट्स' जिसे अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन 'मेटल, 2016' की कार्यवाही में प्रकाशित किया गया।

- 'यूज ऑफ फ्रूट एक्स्ट्रेक्ट ऑफ इंडियन गूज़बेरी फॉर एक्स्ट्रेक्शन ऑफ अकॉगनाइट फेसेसेज फ्रॉम स्टील रस्ट', इसे भारत में सांस्कृतिक संपत्ति का संरक्षण जर्नल खण्ड 41 (2016) 33 से 41 में प्रकाशित किया गया।

- 'रोल ऑफ इनवायरनमेंटल पर्टिक्यूलेट मैटर ऑन करोजन ऑफ कॉपर', इसे ऐटमॉस्फेरिक पलूशन रिसर्च, एल्सेविएर के जर्नल में प्रकाशित किया गया।

- 'इफैक्ट ऑफ इनवायरनमेंटल पलूशन मैटर ऑन करोजन कैरक्टरिस्टिक ऑफ 3003 एलुमिनियम एलॉय एक्स्पोज्ड इन डिफरेन्ट पार्ट्स ऑफ इंडिया', इसे 'ट्रांजेक्शंस ऑफ दि इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मेटल्स, स्प्रिंगर' जर्नल में प्रकाशित किया गया।

अन्य गतिविधियाँ

- संरक्षण एकक द्वारा नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस स्टडीज, बंगलुरु' की सहायता से इं.गां.रा.क.केन्द्र में 26 से 30 सितम्बर, 2016 तक 'एक्जोटिक मेटल क्राफ्ट ऑफ इंडिया' पर प्रदर्शनी एवं कार्यशाला का आयोजन किया गया।

- इस एकक ने 8 सितम्बर से 25 अक्टूबर, 2016 तक 'मैपिंग इंडियन हैंडक्राफ्ट टेक्सटाइल्स–मेटिरियल, टेकनीक, ट्रेडिशन' प्रदर्शनी की मेज़बानी की। संरक्षण एकक ने इस प्रदर्शनी के आयोजन में क्यूरेटर डॉ. रुचिरा घोष, टैगोर नेशनल फैलो की सहायता की।

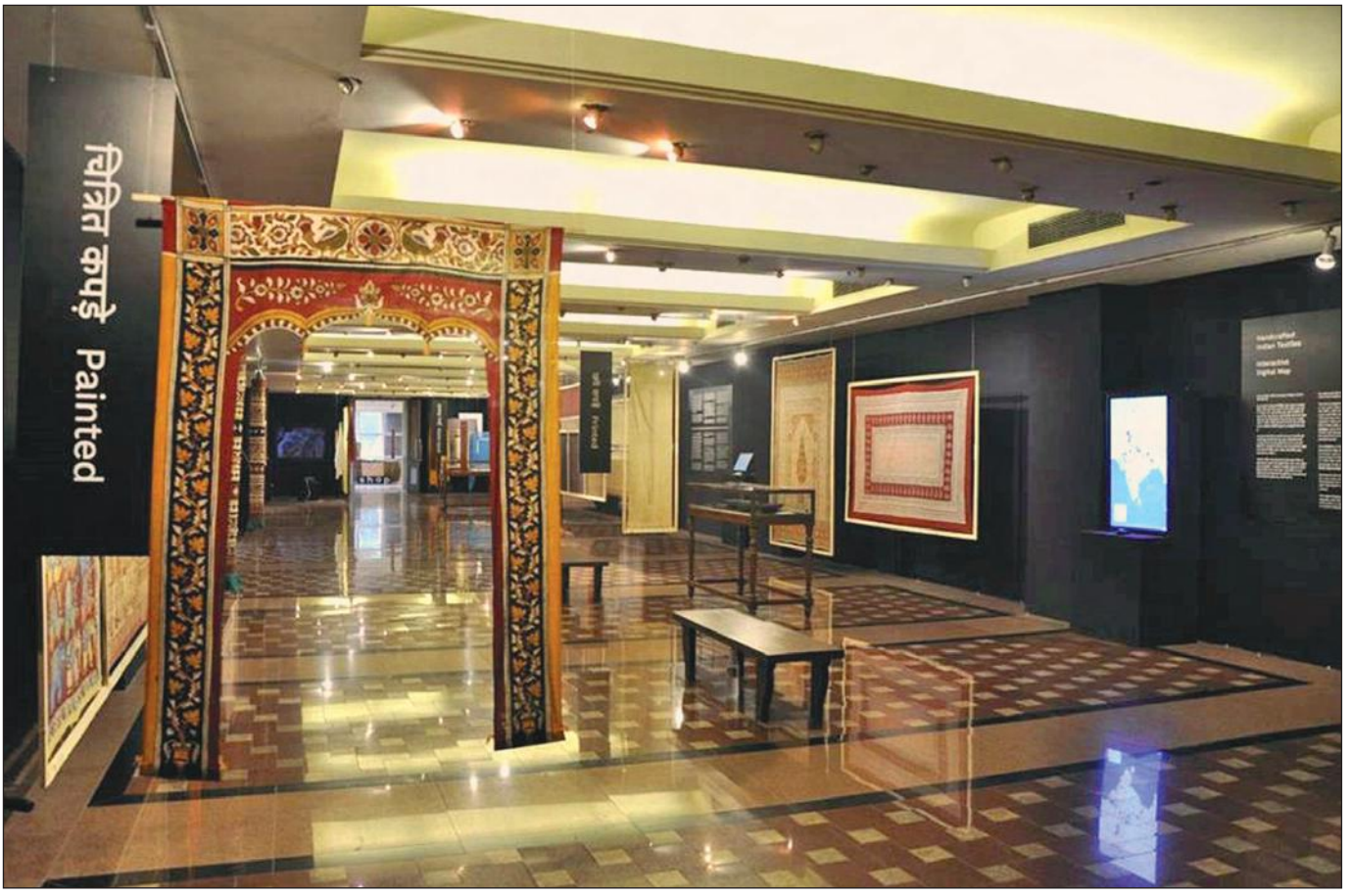

'मैपिंग इंडियन हैंडक्राफ्टिड टैक्सटाइल्सः मटीरियल, टैक्नीक, ट्रेडीशन'।

कलाकोश

(शोध, भारत विद्या परियोजना, नारीवाद और क्षेत्र अध्ययन संबंधी प्रभाग)

कलाकोश प्रभाग कलाओं से जुड़ी बौद्धिक तथा पाठ्य परम्पराओं का उनके बहुस्तरीय एवं विविध विधापरक संदर्भों में अनुसंधान करता है। अनुसंधान तथा प्रकाशन प्रभाग के रूप में यह दृश्य को श्रवण के साथ, मूल ग्रन्थों को मौखिक के साथ और सिद्धान्त पक्ष को व्यवहार पक्ष के साथ जोड़ते हुए, कलाओं को एक साँस्कृतिक प्रणाली के समग्र ढांचे के भीतर स्थापित करने का प्रयास करता है। इसके कार्यक्रम निम्नवत् हैं:

कार्यक्रम कः कलातत्वकोश

(भारतीय कलाओं की मूलभूत संकल्पनाओं की श्रृंखला)

भारतीय कलाएँ, सैद्धांतिक और व्यावहारिक दोनों ही रूपों में एक ऐसी विश्व–दृष्टि में गहराई से समाविष्ट हैं जिसमें मिथक, अनुष्ठान, वैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक परम्परा के साथ–साथ स्थान एवं काल की, शरीर, इन्द्रियों और मन की अवधारणाएं शामिल हैं। यह अंतर्संबद्धता कतिपय मूलभूत संकल्पनाओं में अभिव्यक्त होती है जो भारतीय संस्कृति एवं चिंतन धारा में व्याप्त दिखाई देती है। कलातत्वकोश, भारतीय कला शब्दावली की मूलभूत संकल्पनाओं से जुड़ी प्रकाशन श्रृंखला है। व्यापक शोध एवं विशिष्ट विद्वानों के साथ विचार–विमर्श के पश्चात लगभग 250 संकल्पनाओं की एक शब्दसूची तैयार की गई है। इन शब्दों के चयन के मानदंड, इन शब्दों की व्यापकता के सर्वेक्षण और उनकी अंतर–विषयी प्रकृति पर आधारित है। इस श्रृंखला में किसी संकल्पना का विकास, उस संकल्पना के सूक्ष्मतम स्तर से लेकर अनुप्रयोग के स्थूल क्षेत्रों तक होने की घटना की गवेशणा की जाती है। प्रत्येक संकल्पना का अन्वेषण विभिन्न विषयों के लगभग 300 मूलग्रन्थों से किया जाता है। इस श्रृंखला का प्रथम ग्रन्थ वर्ष 1988 में प्रकाशित हुआ था, तब से लेकर अब तक सात खंड प्रकाशित किए जा चुके हैं जिनमें से प्रत्येक खंड में विषयवार चयनित समूहों को शामिल किया गया है।

कार्यक्रम खः कलामूलशास्त्र

(कला–रूपों पर प्रभाव रखने वाले मूल–पाठों की श्रृंखला)

दीर्घ–विस्तार वाले इस शोध कार्यक्रम के अंतर्गत मूल ग्रन्थों के साथ उनके विवेचनात्मक संस्करण और अनुवाद प्रकाशित किए जाते हैं; जो भारतीय कलात्मक परम्पराओं के मूल आधार हैं; साथ ही ऐसे मुख्य ग्रन्थों का भी प्रकाशन किया जाता है जो किसी कला विशेष से संबद्ध हैं। मूल–पाठ के साथ अंग्रेजी अनुवाद एवं संगत टिप्पणियां आदि, यदि उपलब्ध हों तो भी उपलब्ध कराई जाती हैं।

प्रकाशित मूल–पाठ भारतीय कला–रूपों अर्थात् वैदिक साहित्य, आगम, तंत्र से लेकर वास्तुकला, मूर्तिकला और चित्रकला, संगीत, नृत्य और थिएटर से संबंधित हैं। अभी तक 78 जिल्दों में 32 मूल–पाठ इस श्रृंखला के अंतर्गत प्रकाशित किए जा चुके हैं।

कार्यक्रम गः कलासमालोचना

(कला–रूपों के बारे में विवेचनात्मक एवं व्याख्यात्मक लेख)

यह श्रृंखला कला–रूपों एवं सौन्दर्यशास्त्रों के भिन्न–भिन्न स्वरूपों के बारे में किए जाने वाले विवेचनात्मक लेखन के प्रकाशन की है। इस श्रृंखला के एक हिस्से में उन प्रतिष्ठित विद्वानों की कृतियों पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है जिन्होंने विविध परंपराओं के सन्निधान के माध्यम से मौलिक संकल्पनाओं पर चर्चा की है, चिर–स्थायी स्रोतों का अभिनिर्धारण

किया है और संप्रेषण के नए सेतु बनाए हैं। अभिनिर्धारण का मानदंड है– अपनी पार–सांस्कृतिक अवधारणा, बहु–विषयी दृष्टिकोण और भाषायी कारणों से अगम्यता अथवा प्रकाशित प्रतियों की अनुपलब्धता की दृष्टि से कृतियों की महत्ता। इस श्रृंखला के दूसरे हिस्से में कृतियों के संशोधित संस्करण और कथ्यपरकता की दृष्टि से पुनर्गठित संस्करण तथा चयनित रचनाकारों के अनूदित संस्करण शामिल हैं। इस कार्यक्रम का सर्वाधिक महत्वपूर्ण हिस्सा लेखक डॉ. आनंद के. कुमारस्वामी के कतिपय मामलों में उनके स्वयं के प्रामाणिक संशोधन पर आधारित उनके संकलन का पुनर्मुद्रण है।

कार्यक्रम घः भारत विद्या परियोजना

(इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की दीर्घ–कालिक अकादमिक कार्यक्रम)

भारतीय कला और संस्कृति के बिखरे कणों को समेटकर परिरक्षित करने के उद्देश्य से तथा भारतीय साकल्यवादी दृष्टिकोण से भारत विद्या (इंडोलॉजी) के विभिन्न पक्षों के अध्ययन को ध्यान में रखते हुए, इ.गां.रा.क.केन्द्र की कार्यकारिणी परिषद् द्वारा इसकी 70वीं बैठक में यह निर्णय लिया गया कि इस दिशा में भारत विद्या परियोजना नाम से एक दीर्घकालिक परियोजना शुरू की जाए।

हाल में यह देखा गया है कि भारत के आदि ग्रंथों और ज्ञान परंपराओं के अपर्याप्त ज्ञान, गलत अर्थ–निर्धारण और समझ के कारण भारत विद्या से संबंधित बहुत सी गलत और भ्रामक अवधारणाएँ उत्पन्न हो गई हैं। यहाँ यह भी बताना समीचीन होगा कि भारत के अधिकांश विश्वविद्यालयों में इंडोलॉजी को एक विषय के रूप में पढ़ाया नहीं जाता, बल्कि इसे संस्कृत विभाग या सामाजिक विज्ञान के पाठ्यक्रम के एक अंश के रूप में पढ़ाया जाता है। विदेशी विश्वविद्यालयों की तुलना में यह ठीक विपरीत है, जहाँ इंडोलॉजी को एक अलग विषय के रूप में पढ़ाया जाता है और बड़ी संख्या में छात्र इस विषय में व्यवसायिक रूप से प्रशिक्षित किए जाते हैं।

भारत में इंडोलॉजी पर संस्थागत अध्ययन और अनुसंधान की कमी ने उक्त ग्रंथों और परंपराओं में निहित विचारों की समझ और अवगाहन में गंभीर विरोधाभास पैदा कर दिया है, विशेष रूप से युवा पीढ़ी में। हालांकि भारतीय परंपराओं से संबंधित प्रचलित अवधारणाओं एवं दृष्टिकोण पर प्रश्नों का स्वागत किया गया है परन्तु इसमें स्वस्थ संवाद की कमी है और ये अधिकतर एकपक्षीय, नकारात्मक, निर्देशनात्मक और भारत की समय–सिद्ध ज्ञानधारा एवं परम्पराओं के संस्थागत विरोध की भावना से ग्रस्त हैं। इसलिए भारत विद्या परियोजना के तहत इ.गां.रा.क.केन्द्र भारतीय परिदृश्य में इंडोलॉजी के अध्ययन को पुनः संदर्भित करने का प्रयास कर रहा है और विषय विशेष के विद्वानों द्वारा व्याख्यान, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार, विषय केन्द्रित कार्यशालाओं और अन्य अनेक संबंधित शैक्षणिक गतिविधियों के माध्यम से संवाद स्थापित करने के लिए उचित मंच प्रदान करने का प्रयास कर रहा है जो भारत विद्या की बेहतर समझ का मार्ग प्रशस्त करेगा।

इ.गां.रा.क.केन्द्र ने 2016–17 के दौरान भारत विद्या परियोजना के तत्वावधान में निम्नलिखित गतिविधियों का आयोजन किया–

- श्री रवीन्द्र शर्मा, विख्यात विचारक, लेखक और वक्ता द्वारा 'चिंतन, परम्परा और वर्तमान संदर्भ' पर (हिन्दी में) इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के प्रेक्षागृह में 5 अक्टूबर, 2016 को सार्वजनिक व्याख्यान के आयोजन के साथ इस दीर्घकालिक परियोजना का उद्घाटन किया गया। इस व्याख्यान की अध्यक्षता श्री रामबहादुर राय, अध्यक्ष, आईजीएनसीए ट्रस्ट ने की।

- इ.गां.रा.क.केन्द्र के स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर श्री बाल्मीकि प्रसाद सिंह, पूर्व माननीय राज्यपाल, सिक्किम और विशिष्ट विद्वान, विचारक और लोक सेवक का 'संस्कृति और शांति' पर 19 नवम्बर, 2016 को विशेष व्याख्यान आयोजित किया गया। इ.गां.रा.क.केन्द्र ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री राम बहादुर राय ने इस व्याख्यान की अध्यक्षता की।

'ग्लोबल पर्सेप्शंज ऑफ इंडियन हेरिटेज' का उद्घाटन।
(बाएं से दाएं): श्री रवि शंकर प्रसाद, माननीय केन्द्रीय विधि एवं न्याय और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री; श्री राजीव मल्होत्रा, नामी लेखक और वक्ता; डॉ. सुब्रमण्यम स्वामी, भाजपा राज्यसभा सांसद और पूर्व केन्द्रीय मंत्री तथा डॉ. सच्चिदानंद जोशी, सदस्य सचिव, आईजीएनसीए।

- नामी इंडो–अमरीकी शोधार्थी, लेखक, वक्ता तथा सभ्यता, सांस्कृतिक अंतर–मिलनों, धर्म और विज्ञान जैसे सम–सामयिक विषयों के बुद्धिजीवी श्री राजीव मल्होत्रा का 20 नवम्बर, 2016 को विशेष व्याख्यान आयोजित किया गया। उनका व्याख्यान 'दि केस फॉर स्वदेशी इंडोलॉजी' विषय पर था जिसे इ.गां.रा.क.केन्द्र के स्थापना दिवस समारोह के अवसर पर आयोजित किया गया था। इस व्याख्यान की अध्यक्षता इ.गां.रा.क.केन्द्र ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री राम बहादुर राय ने की।

- इन्फिनिटी फाउंडेशन इंडिया (आईएफआई) स्वदेशी इंडोलॉजी कॉन्फ्रेंस सीरीज (एसआई 2) के सहयोग से 'भारतीय विरासत की वैश्विक धारणा' पर तीन दिवसीय सम्मेलन का आयोजन 17 से 19 फरवरी, 2017 तक इ.गां.रा.क.केन्द्र में किया गया। इस सम्मेलन का उद्घाटन इ.गां.रा.क.केन्द्र, नई दिल्ली के सभागार में श्री रविशंकर प्रसाद, माननीय केन्द्रीय केबिनेट मंत्री, कानून, न्याय और सूचना प्रौद्योगिकी, डॉ. सुब्रमण्यम स्वामी, भाजपा (माननीय राज्यसभा सदस्य और पूर्व केन्द्रीय मंत्री) (सेवानिवृत्त) जनरल जी.डी. बक्शी, श्री राजीव मल्होत्रा, नामी सार्वजनिक बौद्धिक और सदस्य सचिव, इ.गां.रा.क.केन्द्र डॉ. सच्चिदानंद जोशी की गरिमामयी उपस्थिति में हुआ। सम्मेलन में 3 समानांतर सारणियाँ और 14 सत्र थे जिसमें 39 श्रेष्ठ विद्वानों ने अपनी प्रस्तुतियां दीं। इन प्रस्तुतियों के माध्यम से 'रस', 'भाषा विज्ञान' 'संस्कृत ग्रंथों के कालक्रम', 'मीमांसा', 'बौद्ध धर्म और वैदिक परंपराओं के साथ उसके संबंध', 'संस्कृत में अपवित्रीकरण' के बारे में विचारों और व्याख्याओं से संबंधित विषयों पर विचार–विमर्श किया गया। इसके अतिरिक्त, सम्मेलन के दौरान 'शास्त्र', संस्कृत और नाजी विचारधारा', 'संस्कृत की मौत', 'एक राजनैतिक साधन के रूप में रामायण' आदि विषयों पर भी शोध पत्र प्रस्तुत किए गए। डॉ. आर. नागस्वामी, डॉ. मीनाक्षी जैन, डॉ. पप्पु वेणुगोपाल राव और डॉ. लोकेश चन्द्र ने संबंधित विषयों पर व्यापक वार्ताएँ प्रस्तुत कीं। प्रख्यात विद्वान प्रो. शशि तिवारी,

प्रो. कोरादा सुब्रमणियम, प्रो. पप्पु वेणुगोपाल राव, डॉ. अरविन्द राव, डॉ. अमर जीवलोचन, डॉ. (श्रीमती) सोनल मानसिंह, डॉ. आर. नागस्वामी और डॉ. श्रीनिवास तिलक ने विभिन्न अकादमिक सत्रों की अध्यक्षता की। सम्मेलन में तीनों दिन 'वाक्यार्थ सदास' (परंपरागत भारतीय वाद–विवाद पद्धति) के विशेष सत्र आयोजित किए गए जिसमें पारंपरिक भारतीय वाद–विवाद परंपरा के महत्व को उजागर करते हुए इसके पुनरुद्धार के लिए विशद् विद्वानों की सभा को संबोधित किया गया जिससे भारतीय ज्ञान की प्रामाणिक पद्धति को उजागर करने में मदद मिली। यह सम्मेलन परंपरागत विद्वत् समुदाय को एक तरफ इंडोलॉजी प्रवचन में अत्यधिक सक्रियता के साथ भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए तो दूसरी तरफ आधुनिक पंडितों में प्राचीन भारतीय परंपराओं का ज्ञान प्रस्तुत करने के लिए था। मद्रास संस्कृत कॉलेज के तीन परम्परागत विद्वान नामतः विद्वान के.एस. महेश्वरन, विद्वान सी हरिहरन और विद्वान सौजन्य कुमार ने इसमें भाग लिया। ये सभी चैन्नई के ब्रह्मर्षि महामहोपाध्याय आचार्य मणि द्रविड़ शास्त्रीगल के कुशल मार्गदर्शन में प्रशिक्षण प्राप्त हैं। इन सत्रों में सभी प्रतिभागियों द्वारा बहुत ही रूचि के साथ भाग लिया गया। इ.गां.रा.क.केन्द्र ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री राम बहादुर राय इन सत्रों के दौरान मौजूद रहे। 'कांट्रीब्यूशन ऑफ इंडियन इंडोलॉजिस्ट' विषय पर इ.गां.रा.क.केन्द्र में विशेष पैनल चर्चा आयोजित की गई जिसमें विद्वानों ने उन भारतीय विद्वानों के बारे में प्रस्तुतीकरण दिया, जिन्होंने भारत विद्या के अध्ययन और शोध पर गहरा योगदान दिया है लेकिन उनके अध्ययन की स्वीकार्यता कम है। डॉ. शशि तिवारी, डॉ. राधा बनर्जी सरकार, डॉ. सुषमा जाटू और डॉ. सुधीर लाल ने क्रमशः श्री अरबिंदो, डॉ. पी.एस. बागची, श्री रामचन्द्र काक, डॉ. एस राधाकृष्णन और डॉ. आर वी. काणे के बारे में प्रस्तुतीकरण दिया। सम्मेलन का सबसे महत्वपूर्ण सत्र 19 फरवरी, 2017 को आयोजित किया गया। प्रो. के. एस कण्णन ने सम्मेलन के अकादमिक निदेशक के रूप में अपनी टिप्पणी प्रस्तुत की। इ.गां.रा.क.केन्द्र के सदस्य सचिव डॉ. सच्चिदानंद जोशी ने सम्मेलन के बारे में अपनी प्रतिपुष्टि और प्रतिक्रिया दी। श्री राजीव मल्होत्रा और डॉ. टी.एस. मोहन ने इन्फिनिटी फाउंडेशन इंडिया की ओर से समापन वक्तव्य दिया। इ.गां.रा.क.केन्द्र के माननीय ट्रस्टी और प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान डॉ. के. अरविन्द राव ने समापन व्याख्यान दिया और औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया। विद्वानों ने इस तरह के समृद्ध शैक्षणिक एवं विचारोत्तेजक सम्मेलन के आयोजन के लिए इ.गां.रा.क.केन्द्र के प्रयास की भूरि–भूरि प्रंशसा की।

आलोच्य वर्ष के दौरान कलाकोश प्रभाग द्वारा निम्नलिखित गतिविधियों का आयोजन किया गयाः

प्रकाशन

- 'बौधायन श्रौत सूत्र' 5 खण्डों में (कलामूलशास्त्र श्रृंखला के अन्तर्गत)
- श्री ब्रूनो डाजेन्स द्वारा 'दि इंडियन टेम्पल–मिरर ऑफ द वर्ल्ड' (कलामूलशास्त्र श्रृंखला के अन्तर्गत)
- 'भांड पाथर – दि फोक थियेटर ऑफ कश्मीर'–एक सचित्र मोनोग्राफ

राष्ट्रीय/अंतर–राष्ट्रीय सम्मेलन/संगोष्ठियाँ

'अभिनवगुप्तः दि जीनियस ऑफ कश्मीर': आईजीएनसीए द्वारा भारत के विभिन्न भागों में भारतीय कला और संस्कृति के क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठतम विद्वान आचार्य अभिनव गुप्त पर सहस्राब्दी उत्सवों को आगे बढ़ाने के लिए तीन राष्ट्रीय व एक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया जो कि निम्न प्रकार हैं–

- 'अभिनवगुप्तः दि जीनियस ऑफ कश्मीर' विषय पर प्रथम राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन कटरा, जम्मू–कश्मीर में श्री माता वैष्णों देवी विश्वविद्यालय (दर्शन विभाग) के सहयोग से 3 से 4 सितम्बर, 2016 को किया गया। छह सत्रों में आयोजित इस संगोष्ठी में उत्तर भारत के विभिन्न भागों से आए विद्वानों द्वारा 17 प्रस्तुतियां की गईं। आचार्य अभिनव गुप्त के जन्म स्थान (कश्मीर) में आयोजित यह संगोष्ठी इस महोत्सव की शुरुआत का प्रतीकात्मक संकेत था। इस सेमिनार में विश्वविद्यालय के युवा शोधकर्ताओं के साथ–साथ जम्मू के अन्य विश्वविद्यालयों और अन्य संस्थानों की भागीदारी देखी गई।

'आचार्य अभिनवगुप्तः दि जीनियस ऑफ कश्मीर' पर पहली राष्ट्रीय संगोष्ठी श्री माता वैष्णों देवी विश्वविद्यालय, कटरा, जम्मू एवं कश्मीर में।

- दूसरी राष्ट्रीय संगोष्ठी भारत भवन, भोपाल के सहयोग से 'अभिनव गुप्त सहस्राब्दीः विमर्श' 4 से 6 नवम्बर, 2016 तक आयोजित की गई। वाराणसी, जयपुर दिल्ली और भोपाल से आए प्रख्यात विद्वानों द्वारा इस सेमिनार के 4 सत्रों में 9 शोधपत्र प्रस्तुत किए गए।

- तीसरी राष्ट्रीय संगोष्ठी की मेजबानी कलाक्षेत्र फाउंडेशन (चैन्नई) और भरत इलान्गो फाउंडेशन फॉर एशियन कल्चर (चैन्नई) के सहयोग से 'आचार्य अभिनवगुप्तः ए रेवरेंशियल रिवेलेशन ऑफ इटरनल रेलीवेंस' पर आयोजित की गई जिसमें 7 अकादमिक सत्रों का आयोजन किया गया और जिनको अलंकार, कश्मीरी शैववाद, तंत्र और नाट्य जैसे 4 वर्गों में रखा गया। प्रमुख रूप से दक्षिण भारत के भिन्न–भिन्न क्षेत्रों से आए प्रख्यात विद्वानों द्वारा कुल 14 शोधपत्र प्रस्तुत किए गए। कलाक्षेत्र फांउडेशन के युवा छात्रों के लाभ के लिए प्रत्येक पेपर का एक सारांश तमिल में प्रस्तुत किया गया।

- इस श्रृंखला की चौथी संगोष्ठी 'अभिनवगुप्तः दि जीनियस ऑफ कश्मीर' एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी थी जो इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली में 15 से 17 दिसम्बर, 2016 तक आयोजित की गई। माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्री प्रकाश जावडेकर ने संगोष्ठी का उद्घाटन 15 दिसम्बर, 2016 को किया और इस संगोष्ठी में भारत और विदेश के विभिन्न भागों से आए कुछ प्रख्यात और वरिष्ठ विद्वानों को सम्मानित किया। 9 शैक्षिक सत्रों में 22 शोध पत्र प्रस्तुत किए गए जिनमें से प्रत्येक आचार्य अभिनव गुप्त के योगदान के विशेष पहलुओं पर केन्द्रित था। विभिन्न विश्वविद्यालयों, कॉलेजों और संस्थानों से आमंत्रित युवा विद्वानों और संकाय सदस्यों ने भी संगोष्ठी में भाग लिया और शोधपत्र प्रस्तुत किए। संगोष्ठी में दर्शन, धर्म, तत्व मीमांसा, ज्ञान–मीमांसा, कविता–शास्त्र, साहित्यिक आलोचना, सौंदर्यशास्त्र, नाटक–शास्त्र, इतिहास लेखन, तंत्र अध्ययन, भक्ति साहित्य और प्रदर्शन कला जैसे कई विषयों को एक साथ रखा गया। अभिनव गुप्त पर एक और परिप्रेक्ष्य, आधुनिक विज्ञान विशेषतया क्वांटम भौतिकी तथा तंत्रिका विज्ञान और सूक्ष्म जीव विज्ञान के साथ अन्य विज्ञानों के संबंध पर चर्चा कर उद्घाटित किया गया।

इस संगोष्ठी में आचार्य अभिनवगुप्त को समर्पित दो प्रस्तुतियां भी शामिल थीं। 15 दिसम्बर को नामी विद्वान और भरतनाट्यम कलाकार डॉ. पद्मा सुब्रमण्यम और नृत्योदय, चेन्नई के कलाकारों द्वारा आचार्य अभिनव गुप्त के सम्मान में एक नृत्य नाटिका 'अभिनवगुप्त आचार्य नमः' भी प्रस्तुत की गई। इस नृत्य प्रस्तुति ने भाव और कारण के संयोग से आध्यात्म का प्रभामंडल सृजित किया। इस प्रस्तुति का समापन सुप्रसिद्ध भरतनाट्यम कलाकार/नृत्यसंयोजक डॉ. पद्मा सुब्रमण्यम की प्रस्तुति आचार्य अभिनवगुप्त के 'नृत्य ऑन भैरव स्तव' से हुई।

आईजीएनसीए, नई दिल्ली में 15 दिसम्बर, 2016 को 'आचार्य अभिनवगुप्तः दि जीनियस ऑफ कश्मीर' विषय पर अंतर–राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन के अवसर पर माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री श्री प्रकाश जावड़ेकर (दाएं)। माननीय मंत्री ने संगोष्ठी के दौरान प्रोफेसर नवजीवन रस्तोगी (बाएं) को सम्मानित किया। इस अवसर पर आईजीएनसीए न्यास के अध्यक्ष श्री राम बहादुर राय (बीच में) भी मौजूद थे।

16 दिसम्बर, 2016 को 14वीं सदी की कश्मीरी संत कवयित्री 'लालेश्वरी की वाख' के एक आध्यात्मिक सार से दर्शकों को परिचित कराया गया। मूल रूप से कश्मीरी में बोली जाने वाली 'वाख', कश्मीर शैववाद की परंपरा में लालेश्वरी के आध्यात्मिक उद्गार हैं। ये वाख अब लिखित दस्तावेजों में दर्ज हैं। इस प्रस्तुति के दौरान पहले नामी शास्त्रीय और लोक गायक श्री धनंजय कौल द्वारा चुने गए वाख का पहले कश्मीरी भाषा में वाचन किया गया। तदुपरान्त इसके हिन्दी रूपांतरित पाठ का वाचन शास्त्रीय संगीतज्ञ डॉ. सुभद्रा देसाई की अभिव्यक्ति द्वारा किया गया। इस काव्यात्मक प्रस्तुति के दौरान हिन्दी में इसका अनुवाद डॉ. अद्वैतवादिनी कौल और अंग्रेजी में अनुवाद प्रोफेसर नीरजा मट्टू द्वारा किया गया। बेहतर समझ के लिए इसे सभागार की स्क्रीन पर वाचन के साथ स्क्रॉल किया गया ।

कार्यक्रम घः क्षेत्रीय अध्ययन

पूर्व एशिया कार्यक्रम

पूर्व एशिया कार्यक्रम विशिष्ट बहु–विषयी क्षेत्र है जिसमें चीन, जापान और कोरिया की संस्कृतियों पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है। पूर्व एशिया को परा–सांस्कृतिक संबंधों के एक गतिशील स्थल के रूप में देखा जाना चाहिए। सामाजिक शास्त्रों, अर्थशास्त्र, धर्म से लेकर वैश्विक मानविकी क्षेत्रों के विविध विन्यासों में से विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों को एक मंच पर लाने से अति अंतर–विषयी इस अध्ययन के तहत शोधार्थी समुदाय ज्ञान समृद्ध होगा। पूर्व एशिया कार्यक्रम 27 वर्ष से चल रहा है और भारत एवं विश्व के बीच 1990 से सहयोजन करता आ रहा है ताकि हमारे बीच के निकट ऐतिहासिक संबंधों का अभिनन्दन किया जा सके।

2016–17 में पूर्व एशिया कार्यक्रम के तहत निम्नलिखित कार्य सफलतापूर्वक पूरे किए गएः

सम्मेलन/संगोष्ठी

- पूर्व एशिया कार्यक्रम के तत्वावधान में क्षेत्रीय प्राकृतिक विज्ञान संग्रहालय (आरएमएनएच), भुवनेश्वर, ओडिशा में 8 से 10 दिसम्बर, 2016 तक 'सेक्रेड हेरिटेज ऑफ जगन्नाथः ट्राइबल एंड रीजनल कल्चरल इंटरफेस' विषय पर राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया। भारत भर से आए प्रतिष्ठित विद्वानों ने इसमें हिस्सा लिया और अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए।

- मार्च, 2017 में इस एकक द्वारा 'वीमन एंड बुद्धिज्मः पर्सपेक्टिव्स ऑन जेंडर, कल्चर एंड एम्पावरमेंट' पर एक अंतर–राष्ट्रीय सम्मेलन (27 से 29 मार्च, 2017) आयोजित किया गया। अमेरिका, पोलैण्ड, थाईलैण्ड, सिंगापुर, वियतनाम, श्रीलंका और भारत से नामी विद्वानों, साध्वियों और भिक्षुओं ने सम्मेलन में हिस्सा लिया। कुल मिलाकर साठ से अधिक भारतीय और अंतर–राष्ट्रीय शोधार्थी सम्मेलन में आए और उन्होंने तीन दिवसीय सम्मेलन में सम्मेलन की विषय–वस्तु से जुड़े शोध–पत्र प्रस्तुत किए। 27 से 29 मार्च, 2017 तक एक समानांतर सत्र भी आयोजित किया गया।

प्रदर्शनियां

पूर्व एशिया अध्ययन के तहत निम्नलिखित प्रदर्शनियां आलोच्य अवधि के दौरान आयोजित की गईंः

- 'मार्क ऑरेल स्टीन विद स्पेशल रिफरेंस टु साउथ एंड सेन्ट्रल एशियन लैगेसीः रीसेंट डिस्कवरीज एंड रिसर्च' नामक एक प्रदर्शनी असम के तेजपुर विश्वविद्यालय में और पूर्वोत्तर भारत के अन्य हिस्सों में अप्रैल से मई, 2016 तक आयोजित की गई। सर मार्क ऑरेल स्टीन एक हंगेरियाई विद्वान थे जिन्हें भारतीय एवं केन्द्रीय एशियाई वास्तुशिल्प तथा बौद्ध अध्ययन के क्षेत्र में अपने योगदान के लिए प्रतिष्ठा प्राप्त है।

- उड़ीसा, भुवनेश्वर के क्षेत्रीय प्राकृतिक विज्ञान संग्रहालय और सेंचूरियन विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर, ओडिशा में 'नवकलेवर ऑफ श्री जगन्नाथ' विषय पर दिसम्बर, 2016 में एक फोटो प्रदर्शनी आयोजित की गई।

- 'अवलोकितेश्वर/गुआनशियिनः फेमिनिन प्रिंसिपल इन बुद्धिस्ट आर्ट' विषय पर फोटोग्राफिक प्रदर्शनी 27 मार्च से 18 अप्रैल, 2017 तक इं.गां.रा.क.केन्द्र में प्रदर्शित की गई। यह प्रदर्शनी 'वीमन एंड बुद्धिज्मः पर्सपेक्टिव ऑन जेंडर, कल्चर एंड एम्पावरमेंट' पर हुए अंतर–राष्ट्रीय सम्मेलन का हिस्सा थी। प्रदर्शनी में भारत के अजंता की गुफा कलाओं, चीन के दुनहुआंग और जापान की बौद्ध गुफाओं में अवलोकितेश्वर के विभिन्न स्वरूपों का प्रदर्शन किया गया।

सहयोजन

पूर्व एशियाई अध्ययन प्रकोष्ठ और एशियन इंस्टीट्यूट, कोरिया मिलकर 'एशियन आर्ट एंड कल्चर' पर एक प्रदर्शनी आयोजित करेंगे।

प्रकाशन

निम्नलिखित दो संगोष्ठी की कार्यवाहियां जल्दी ही पूरी कर ली जाएंगीं और इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र की वेबसाइट पर प्रकाशित कर दी जाएंगी। इनकी स्थिति इस प्रकार है:

- 'बुद्धिस्ट ट्रांसक्रिएशन इन तिबेतन लिटरेचर एंड आर्टः सातवें अंतर–राष्ट्रीय अलेक्जेंडर दे कोरोस सिंपोजियम की कार्यवाही। इसके मसौदे के अंतिम संपादन का काम चल रहा है।
- 'सर मार्क ऑरेल स्टीनः विद स्पेशल रिफरेंस टु साउथ एंड सेंट्रल एशियन लीगेसीः रीसेंट डिस्कवरीज एंड रिसर्चः अंतर–राष्ट्रीय सम्मेलन की कार्यवाही। इसके मसौदे के अंतिम संपादन का काम चल रहा है।

दीर्घकालीन परियोजनाएं

पूर्वी एशिया कार्यक्रम में निम्नलिखित दीर्घकालिक परियोजनाओं पर काम चल रहा है–

- 'असम के निचले क्षेत्र में कामाख्या और माधव मंदिर और अन्य अनन्वेषित बौद्ध स्थलों के विशेष संदर्भ के साथ अदृश्य सांस्कृतिक विरासत' पर प्रलेखीकरण। प्रलेखन के पहले चरण की शुरूआत 10 जनवरी, 2017 को की गई थी और यह कार्य 15 जनवरी, 2017 तक पूरा कर लिया गया।
- 'तवांग मठ, अरुणाचल प्रदेश, सिक्किम': इस के लिए क्षेत्रीय सर्वेक्षण और प्रलेखन जून, 2017 में शुरू हो गया है।
- 'ताबो, लाहौल एवं स्पीति तथा किन्नौर मठ का दृश्य–श्रव्य प्रलेखीकरण': 2016 में एक दिन की एक कार्यशाला आयोजित की गई और इस क्षेत्र का प्राथमिक सर्वेक्षण शुरू कर दिया गया।
- 'सुभाष चंद्र बोस और पूर्व एशिया'– इस परियोजना के तहत एक ग्रंथ सूची तैयार की जा रही है।

दक्षिण पूर्व एशियाई अध्ययन

इस कार्यक्रम का प्रयोजन इंडोनेशिया, फिलीपीन्स, वियतनाम, लाओस, कंबोडिया, थाईलैण्ड, मलेशिया और म्यांमार के साथ भारत के प्राचीन सांस्कृतिक संबंधों के अध्ययन का है। इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के संदर्भ पुस्तकालय में इन देशों के बारे में अनुसंधान सामग्री (पुस्तकें, माइक्रोफिश, माइक्रोफिल्में, स्लाइडें आदि) का एक आधारिक संग्रह तैयार कर लिया गया है। इसके अलावा, यह कार्यक्रम शोध सामग्री एवं शोधार्थियों के विनिमय के लिए भी उत्तरदायी है। हाल ही में, बाली (इंडोनेशिया) के विभिन्न प्राचीन मंदिरों की कला शैलियों का प्रलेखन किया गया है। इसके अतिरिक्त, इस कार्यक्रम में एशिया के इन क्षेत्रों की प्राचीन कला एवं संस्कृति के अध्ययन पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है और बौद्ध धर्म एवं इसके अन्य सहवर्ती संप्रदायों पर पर्याप्त ध्यान देते हुए भारतीय महाकाव्यों: रामायण एवं महाभारत पर आधारित प्राचीन साहित्य पर अध्ययन कराए जाते हैं। आवधिक रूप से सम्मेलनों, संगोष्ठियों, प्रदर्शनियों और शोधपूर्ण चर्चा के रूप में व्याख्यान के आयोजन इस कार्यक्रम की गतिविधियों के केन्द्र में रहे हैं।

दक्षिण–पूर्व एशियाई अध्ययन प्रकोष्ठ के तहत निम्नलिखित गतिविधियां आयोजित की गईं:

- मणिपुर विश्वविद्यालय, इम्फाल के सहयोग से 'नॉर्थ ईस्ट इंडिया एंड म्यांमार (बर्मा): एथनिक एंड कल्चरल लिंकेजिज' पर एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। यह संगोष्ठी मणिपुर विश्वविद्यालय परिसर में 28–29 सितम्बर, 2016 को आयोजित की गई। सम्मेलन का उद्घाटन डॉ. (श्रीमती) नजमा हेपतुल्ला, माननीय राज्यपाल, मणिपुर द्वारा किया गया। भारत के विभिन्न भागों से आए प्रतिभागियों के अलावा इसमें श्रीलंका, म्यांमार, कंबोडिया, वियतनाम से प्रख्यात विद्वानों ने भाग लिया और अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए।
- सच्चिदानंद सहाय द्वारा क्यूरेटिड फोटो प्रदर्शनी 'दि आर्ट ऑफ अंकोर इन बेयन' का आयोजन इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में 10 से 17 जून, 2016 को किया गया। प्रदर्शनी का उद्घाटन नई दिल्ली, भारत में कम्बोडिया के राजदूत महामहिम श्री पिचखुन पन्हा द्वारा किया गया।

'कंटेम्परेरी आर्टिस्ट्स फ्रॉम वियतनामः एन एक्जिबिशन ऑफ आर्ट वर्क्स एट आईजीएनसीए' प्रदर्शनी में वियतनाम से आए कलाकार। केन्द्र में इनकी भी उपस्थिति थीः प्रोफेसर लोकेश चन्द्रा, अध्यक्ष, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद्, महामहिम श्री तोन सीन थान (दाएं), भारत में वियतनाम के राजदूत और डॉ. सच्चिदानंद जोशी (बाएं), सदस्य सचिव, आईजीएनसीए।

- नई दिल्ली स्थित वियतनामी दूतावास–इम्बेसी ऑफ दि सोशलिस्ट रिपब्लिक ऑफ वियतनाम के सहयोग से इ.गां. रा.क.केन्द्र, नई दिल्ली में ''कनटेम्परेरी आर्टिस्ट ऑफ वियतनामः एन एक्जीबिशन ऑफ आर्ट वर्क्स' पर 5 से 10 जनवरी, 2017 तक एक फोटो एवं चित्रकला प्रदर्शनी लगाई गई। इस अवसर पर वियतनाम के नामी कलाकारों और चित्रकारों ने इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का दौरा किया और इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के शोधार्थियों के साथ चर्चा की।

- इंडोनेशियाई बाटिक पेंटिंग प्रदर्शनी के एक हिस्से के रूप में इंडोनेशिया की बाटिक पेंटिंग पर एक प्रदर्शनी भारत में इंडोनेशिया के दूतावास के सहयोग से 19 से 25 फरवरी, 2017 तक इ.गां.रा.क.केन्द्र परिसर में आयोजित की गई। प्रदर्शनी के हिस्से के तौर पर एक कार्यशाला का आयोजन भी 20 फरवरी, 2017 को किया गया जिसमें जावा द्वीप (इंडोनेशिया) से जाने–माने वस्त्र चित्रकारों ने भाग लिया और इ.गां.रा.क.केन्द्र के विद्वानों तथा अन्य संस्थाओं के विद्वानों के साथ विचार विमर्श किया। इंडोनेशिया से पधारे पारम्परिक जावानी नर्तकों के एक दल ने इस अवसर पर अपनी प्रस्तुति भी दी।

- 3 जून, 2016 को इ.गां.रा.क.केन्द्र में प्रो. सच्चिदानंद सहाय द्वारा ''अंकोरः भारत और दक्षिण पूर्व एशिया की सांझी सांस्कृतिक विरासत'' पर व्याख्यान दिया गया।

- 3 अक्टूबर, 2016 को वियतनाम में हनोई स्थित वियतनाम नेशनल यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर दो थू हा द्वारा 'इंडिया–वियतनाम रिलेशंस इन कल्चरल पर्सपेक्टिव' पर व्याख्यान दिया गया।

बाटिक पेंटिंग्स' पर कार्यशाला में प्रतिभागी।

जनपद संपदा विभाग

(नृजातीय विज्ञान संग्रहों, जीवनशैली अध्ययनों, आदि दृश्य एवं क्षेत्रीय संस्कृति शोध प्रभाग)

जनपद संपदा प्रभाग के तहत आर्थिक–सांस्कृतिक और सामाजिक–आर्थिक दृष्टिकोण से विभिन्न समुदायों की संस्कृतियों के अलग–अलग पक्षों जैसे उनकी जीवनशैली, परंपराएँ, लोक साहित्य, कलात्मक प्रथाएँ आदि का अध्ययन और प्रलेखन किया जाता है। मूलतः मौखिक परंपराओं पर केंद्रित इस विभाग की परिधि अत्यंत व्यापक है जिससे बहु–विषयक परिप्रेक्ष्यों एवं संदर्भों में भिन्न–भिन्न सांस्कृतिक समुदायों का क्षेत्रवार अध्ययन शामिल है। इस प्रभाग की गतिविधियां मोटे तौर पर निम्नलिखित के तहत संचालित की जाती हैं: (1) नृजातीय विज्ञान संग्रह, (2) जीवन–शैली अध्ययन जिसमें दो कार्यक्रम शामिल हैं– (क) लोक परंपरा और (ख) क्षेत्र संपदा (ग) मल्टीमीडिया प्रस्तुतीकरण, प्रकाशन और अन्य गतिविधियाँ।

कार्यक्रम कः नृजातीय विज्ञान संग्रह

शोध, विश्लेषण और प्रसार के लिए बीजकोशीय सामग्री अर्जित की जाती है जिसमें दस्तावेजों की मूल प्रति, पुनर्निर्मित प्रति और रिप्रोग्राफिक प्रारूप होते हैं।

दृश्य भंडारणः प्रभाग में एक दृश्य भंडारण प्रणाली विकसित की गई है।

अर्जन

- कर्नाटक से रामायण पर आधारित 46 छाया पुत्तलिकाएँ।
- ओडिशा से 4 सौरा चित्र।
- रिलिजियस एंड रिचुअल थियेटर गढ़वाल से रम्माण के 5 मुखौटे एवं 20 पोशाकें।

प्रदर्शनियाँ

- जनपद–सम्पदा विभाग द्वारा निम्नलिखित प्रदर्शनियाँ आयोजित की गईं–
- 'गोल्ड डस्ट ऑफ बेगम सुल्तान्सः ए फैमिली सागा' अप्रैल से मई, 2016 तक।
- जनपद–सम्पदा विभाग के वार्षिक महोत्सव के भाग के रूप में दिनांक 5 से 14 अगस्त, 2016 तक जनपद–सम्पदा के अभिलेखागार से 'राबड़ी कढ़ाई' प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।
- 'आख्यान'– भारतीय लोक कथा परम्परा में मुखौटों, कठपुतलियों एवं चित्र कलाओं की एक प्रदर्शनी' लोक मंथन, विधान भवन, भोपाल में 11 से 14 नवम्बर, 2016 को लगाई गई।
- राष्ट्रीय संस्कृति महोत्सव में निम्नलिखित प्रदर्शनियों का आयोजन भारत कला भवन, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी में 17 से 24 दिसम्बर, 2016 तक किया गया।

    1) 'आख्यान– भारतीय लोक कथा परम्परा में मुखौटों, कठपुतलियों एवं चित्रकलाओं की एक प्रदर्शनी'

    2) 'सन्तोकबा द्वारा महाभारत पर्व' (1200 मीटर की पेंटिग में से 200 मीटर की प्रदर्शनी लगाई गई)

3) 'रामायण–महाभारत कालीन पूर्वोत्तर राज्यों के सांस्कृतिक संबंध'

4) 'गौंडी रामायण'

5) 'इसीलिए मेरा भारत महान'– भारतीय संस्कृति पर फोटो प्रदर्शनी' संस्कार भारती से प्राप्त फोटोग्राफिक प्रदर्शनी इं.गां.रा.क.केन्द्र द्वारा लगाई गई

6) इं.गां.रा.क.केन्द्र के प्रकाशनों की प्रदर्शनी

7) 'संस्कारों और कलाओं में बाँस की महिमा' प्रदर्शनी का आयोजन दिनांक 26 से 30 जनवरी, 2017 तक भोपाल के आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास परिषद् के लोकरंग महोत्सव के भाग के रूप में सम्पन्न हुआ।

8) 'रामायण की गौंड पेंटिंग्स' पर प्रदर्शनी का आयोजन ओडिशा की सेंचुरी यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी एण्ड मैनेजमैंट में दिनांक 24 से 27 फरवरी, 2017 तक किया गया।

कार्यक्रम – खः मल्टी–मीडिया प्रस्तुतियां और आयोजन

इस कार्यक्रम के माध्यम से नियोजित प्रस्तुतियों एवं आयोजनों का प्रयोजन पूरी सहस्राब्दी में भारतीय समाज से जुड़ी कला सामग्री तक पहुंच बनाने का है। इसके अंतर्गत दो प्रमुख कार्यक्रम शामिल हैंः (1) आदि दृश्य और आदि श्रव्य। आदि दृश्य कार्यक्रम का महत्वपूर्ण घटक है–शैल–कला के बारे में गंभीरता से अन्वेषण। ध्वनि, संगीत और सांगीतिक रूपों की गवेषणा ही आदि–दृश्य का आधार है।

आदि दृश्य (शैल कला अध्ययन)

क्षेत्र प्रलेखनः आदि दृश्य कार्यक्रम के तहत केरल 'केरल' (चरण–II) और 'महाराष्ट्र एवं इसके निकटवर्ती क्षेत्रों (चरण–I) में स्थित शैल कला स्थलों का क्षेत्रीय प्रलेखन कार्य 29 अक्टूबर से 3 नवम्बर, 2016 और 12 से 19 नवम्बर, 2016 तक किया गया।

स्थल डाटा समेकनः असम (चरण–।।), केरल (चरण–I), उत्तर प्रदेश (चरण–I) एवं हिमाचल प्रदेश (चरण–I) के शैल कला स्थलों के फोटोग्राफों का हस्तलिखित और डिजिटल प्रविष्टिकरण एवं सूचीकरण, विवरण लेखन किया गया। तमिलनाडु (चरण–II) एवं असम (चरण–I एवं II), केरल (चरण–I) एवं उत्तर प्रदेश (चरण–I) के शैल कला स्थलों का मीटाडेटा तैयार किया गया।

वेबसाइट के माध्यम से संपर्क विस्तारः (1) 'दि वर्ल्ड ऑफ रॉक आर्ट' प्रदर्शनी लखनऊ, शिमला, चण्डीगढ़, भोपाल के आंकड़े इं.गां.रा.क.केन्द्र की वेबसाइट पर अद्यतन किए गए; (2) महाराष्ट्र और केरल में किए गए क्षेत्रीय कार्यों के प्रथम एवं द्वितीय चरण के प्रतिवेदन की जानकारी; (3) मेघालय में 'रॉक आर्ट ऑफ नार्थ–ईस्टः मेथडोलॉजिकल एण्ड टेक्नीकल इश्यूज' पर राष्ट्रीय सेमिनार के प्रतिवेदन की जानकारी इं.गां.रा.क.केन्द्र की वेबसाइट पर अद्यतन की गई।

चल प्रदर्शनी के माध्यम से संपर्क विस्तारः 'दि वर्ल्ड ऑफ रॉक आर्ट' प्रदर्शनी को भिन्न–भिन्न शहरों में ले जाया गया। यह प्रदर्शनी (i) 26 अप्रैल से 31 मई, 2016 तक क्षेत्रीय विज्ञान शहर, लखनऊ में, (ii) 15 जून से 24 जुलाई, 2016 तक हिमाचल राज्य संग्रहालय शिमला में, (iii) 10 अगस्त से 24 सितम्बर, 2016 तक पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ में एवं (iv) 17 फरवरी से 31 मार्च, 2017 तक इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, भोपाल में प्रदर्शित की गई।

प्रकाशन

आलोच्य वर्ष के दौरान आदि–दृश्य परियोजना के तहत विभिन्न प्रकाशनों की स्थिति रिपोर्ट इस प्रकार हैः

- 'साइलेंट रॉक्स एन इलोक्वेंट टेस्टीमनीः रॉक आर्ट हैरिटेज ऑफ ओडिशा' : पूरी की गई और 3 अप्रैल, 2017 को डॉ.वी.एस. वाकणकर स्मारक व्याख्यान के अवसर पर इसका विमोचन किया गया।
- 'कल्चरल इकोलॉजीः प्रीहिस्ट्री एण्ड एथनो–आर्कियोलॉजिकल कॉन्टेक्स्ट ऑफ इंडियन रॉक आर्ट विद एम्फेसिस ऑन नार्थ ईस्टर्न स्टेट्स' पूरी की गई और 3 अप्रैल, 2017 को इसका विमोचन किया गया।
- 'प्रथम डॉ. वी.एस. वाकणकर स्मारक व्याख्यान' पर पुस्तिका पूरी की गई और 03 अप्रैल, 2017 को इसका विमोचन किया गया।
- 'थ्योरेटिकल एण्ड कॉग्निटिक आस्पेक्ट्स ऑफ रॉक आर्ट' (ब्रोशर) (प्रकाशन के अंतिम चरण में) 03 अप्रैल, 2017 को राष्ट्रीय सेमिनार के अवसर पर इसका विमोचन किया गया।
- 'राजस्थान की शैलचित्र कला' (भाषा सम्पादन का कार्य प्रगति पर है)
- 'अंडरस्टैंडिंग ऑफ इंडिया–चाइना रॉक आर्ट' (भाषा सम्पादन का कार्य प्रगति पर है)।

सार्वजनिक व्याख्यान

चल प्रदर्शनी के भाग के रूप में निम्नलिखित व्याख्यान आयोजित किए गए–

- 26 अप्रैल, 2016 को बीरबल साहनी पुराविज्ञान संस्थान, लखनऊ में प्रो.डी.पी. तिवारी द्वारा 'सोनभद्र जिले के विशेष संदर्भ सहित उत्तर प्रदेश में शैल कला' पर।
- 27 अप्रैल, 2016 को बीरबल साहनी पुराविज्ञान संस्थान, लखनऊ में डॉ. सी.एम.नौटियाल द्वारा 'डेटर्मिनिंग दि एंटिक्विटी ऑफ रॉक आर्ट' पर।
- 15 जून, 2016 को हिमाचल राज्य संग्रहालय, शिमला में डॉ. ओ.सी. हांडा द्वारा 'पश्चिम हिमाचल पर्वतमाला में शैल कलाः एक समीक्षा' पर।
- 16 जून, 2016 को हिमाचल राज्य संग्रहालय, शिमला में डॉ. हरी चौहान द्वारा 'स्पीति वैली में शैलकला' पर।
- 10 अगस्त, 2016 को पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ में डॉ. मुकेश सिंह द्वारा 'पंजाब की शिवालिक पर्वत माला का प्रागैतिहास' पर।
- 11 अगस्त, 2016 को पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ में डॉ. पारू बल सिद्धू द्वारा 'भारतीय प्रागैतिहासिक शैल कला का एक विश्लेषण' पर।
- 11 अगस्त, 2016 को पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ में डॉ. रेनु ठाकुर द्वारा 'प्रागैतिहासिक कलाः एक मूल्यांकन' पर।
- 17 फरवरी, 2017 को इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, भोपाल में डॉ. रहमान अली द्वारा 'प्रागैतिहासिक शैल चित्रकला और कला एवं संस्कृति में उनका महत्व' पर।

कार्यशाला/संगोष्ठी/जागरूकता कार्यक्रम

- 27 अप्रैल, 2016 को क्षेत्रीय विज्ञान शहर, लखनऊ में 'शैल–कला' बाल कार्यशाला का आयोजन किया गया।
- 15 एवं 16 जून, 2016 को हिमाचल राज्य संग्रहालय, शिमला में 'शैल–कला' की दो कार्यशालाओं का आयोजन किया गया।
- 10 से 11 अगस्त, 2016 तक प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं विभागीय संग्रहालय, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ में बच्चों के लिए 'शैल–कला' पर दो कार्यशालाओं का आयोजन किया गया।

हिमाचल राजकीय संग्रहालय, शिमला में 'रॉक आर्ट' पर बाल कार्यशाला।

- 23 अगस्त, 2016 को राष्ट्रसंत तुकोजी महाराज, नागपुर विश्वविद्यालय, नागपुर में 'बहुआयामी विद्वानों के लिए शैल कला' पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया।
- 5 और 6 अक्तूबर, 2016 को तुरा कैम्पस, मेघालय में 'रॉक आर्ट ऑफ नार्थ–ईस्टः मेथडोलॉजिकल एण्ड टेक्नीकल इश्यूज' पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।
- 17 और 18 फरवरी, 2017 को इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, भोपाल में 'शैल–कला' दो बाल कार्यशालाओं का आयोजन किया गया।

अन्तर्राष्ट्रीय भागीदारी/सहयोग

आईजीएनसीए के आदि दृश्य विभाग में परियोजना निदेशक डॉ. बी.एल. मल्ला ने 20 और 21 सितम्बर, 2016 को दुनहुआंग, चीन में 'दि फर्स्ट सिल्क रोड इंटरनेशनल एक्सपो' नामक अंतर–राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रतिभागिता की एवं 'इंडिया एण्ड चाइनाः एन अप्रेजल ऑफ टू अनस्पोकिन सिविलाईजेशंस' पर शोध पत्र प्रस्तुत किया।

डॉ. बी.एल. मल्ला, परियोजना निदेशक, रॉक आर्ट यूनिट 'दि फर्स्ट सिल्क रोड इंटरनेशनल एक्सपो', दूनहुआंग, चीन में अंतर–राष्ट्रीय सम्मेलन में शोध पत्र प्रस्तुत करते हुए।

कार्यक्रम गः जीवन–शैली अध्ययन

इस कार्यक्रम का फोकस भिन्न–भिन्न समुदायों की मौखिक परंपराओं पर है। इस प्रकार के अध्ययन में विशिष्ट जीवन–शैलियों और जीवन–प्रकार्यों में अंतर्भूत कलात्मक अभिव्यक्तियों की खोज की जाती है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत दो प्रमुख क्षेत्र शामिल हैं– लोक परंपरा एवं क्षेत्र संपदा।

लोक परंपरा

लोक परंपरा कार्यक्रम के अंतर्गत सांस्कृतिक समुदायों की जीवन–शैली पर जोर दिया जाता है जो कि उनके भौतिक और परिस्थितिजन्य अधिवास में, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक प्रक्रियाओं में, कलात्मक अभिरुचि में तथा सृजनात्मक अभिव्यक्तियों में निहित होती हैं। इस कार्यक्रम के अंतर्गत परियोजनाएं स्थली अध्ययनों पर आधारित होती हैं।

परियोजनाएँ

'महाभारत एवं रामकथा की जीवंत परंपराएं': रामकथा परियोजना 2007 में शुरू की गई थी और 2010 में महाभारत परियोजना को इसी परियोजना में शामिल कर लिया गया।

'रम्माणः गढ़वाल की धार्मिक एवं आनुष्ठानिक नाट्यकला– अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की रक्षा– राज्य और सामुदायिक हितधारकों की संयुक्त भागीदारी के माध्यम से सांस्कृतिक विरासत का प्रलेखन, शोध और पुनरुद्धार': यह परियोजना सामुदायिक स्रोत केन्द्र की स्थापना के लिए राज्य और सामुदायिक हितधारकों की संयुक्त भागीदारी के माध्यम से सलूर डूंगरा गांव, चमोली जिला, में चलाई जा रही है।

परियोजना की भावी दिशाएंः (1) कलाओं और शिल्पों, वस्त्रों और स्थानीय उत्पादों में स्थानीय कौशलों की पहचान और उनकी अभिवृद्धि, (2) स्वदेशी तौर–तरीकों या जैविक खेती, स्थानीय फसलों, जड़ी–बूटियों, औषधीय पौधों, और लघु वन उत्पादों की पहचान इस दृष्टि से करना कि इन्हें समाज की विकास प्रक्रियाओं से जोड़ा जा सके, (3) मुखौटे, कठपुतली और गुड़िया बनाना सिखाने के लिए पेशेवरों द्वारा कार्यशाला आयोजित करना जिससे कि रम्माण और इस क्षेत्र की ऐसी ही अन्य परंपराओं के आधार पर शिल्प–कलाएँ विकसित की जा सकें, (4) कला, शिल्प, वस्त्र–निर्माण, जैविक उत्पाद और अन्य सांस्कृतिक स्रोतों से जुड़े लघु कुटीर उद्योगों का विकास, प्रशिक्षण कार्यशालाओं, क्षमता–निर्माण एवं सामग्री के वास्तविक उत्पादन के माध्यम से किया जाना, (5) सलूर डूंगरा गांव में तैयार शिल्प–कृतियों और अन्य उत्पादों एवं जैविक उपज की बिक्री करने के लिए जोशीमठ, बद्रीनाथ आदि जैसे निकटवर्ती क्षेत्रों में बिक्री–केन्द्र स्थापित करना।

पूरे किए गए श्रृव्य–दृश्य प्रलेखनः

- 'आगरा राम बारात, नाटी इमली, भरत मिलाप एवं रामलीला की नक्कटिया परम्परा'।
- 'भीली रामकथा'– डीवीडी खण्ड–2 अंग्रेजी में अनुदित।

तैयार की गई फिल्में (पूर्ण की गईं)

- 'ओडिशा में रामलीला परम्परा का प्रतिचित्रण'
- 'कौरवक्षेत्र'
- 'इन द शैडो ऑफ टाइम –रावण छाया'

आयोजित उत्सव

- इं.गां.रा.क.केन्द्र ने दीनदयाल शोध संस्थान, चित्रकूट, उत्तर प्रदेश के सहयोग से 24 से 27 फरवरी, 2017 तक लोक उत्सव का आयोजन किया।

चित्रकूट, उत्तर प्रदेश में 'भारतीय लोक कला संपदा उत्सव'।

धान उत्पादक संस्कृतियाँ

निम्नलिखित धान्य परियोजनाएँ पूरी की गईं:

दक्षिणी क्षेत्र

- मद्रास प्रेजिडेंसी में भू–राजस्व आकलन और अंतर्देशीय जल स्रोत प्रबंधन का एक प्रमुख निर्धारक तत्व (1902 से 1956);
- धान के बारे में केरल के मौखिक आख्यानों का प्रलेखन, लिप्यंतरण और अनुवाद;
- संगम साहित्य में धान के व्यवहारिक और लाक्षणिक वर्णनों की पुनर्रचना;
- तमिलनाडु की पारंपरिक उद्वाहक सिंचाई प्रौद्योगिकी, धान उत्पादन संस्कृति के साधनों और औजारों के विशेष संदर्भ में भौतिक संस्कृति का प्रलेखन;
- पश्चिमी घाटों के विशेष संदर्भ में दक्षिण भारत में धान की जैव–विविधता के उत्थान एवं पतन की जातीय–सांस्कृतिक और पारिस्थितकीय जांच;
- कर्नाटक के तुलुनाड क्षेत्र में धान उत्पादन संस्कृति और धान की खेती के साथ जुड़े धार्मिक अनुष्ठानों पर विशेष तौर पर ध्यान केन्द्रित करते हुए मानव–वैज्ञानिक अध्ययन।

पूर्वी क्षेत्र

- झारखंड के मुंडा, संथाल, ओरांव और सादन जनजातियों में धान की संस्कृतिः सांस्कृतिक मानव–वैज्ञानिक आयाम;
- झारखंड के मुंडा, संथाल, ओरांव और सादनों की धान/चावल संस्कृति के पारंपरिक विवेक एवं कृषिशास्त्र से जुड़ी प्रथाएँ।

पूर्वोत्तर क्षेत्र

- असम के बहु–समुदायी क्षेत्र में धान उत्पादन परंपरा;
- 'राइस एंड आबा' चाः गारो पहाड़ियों की प्रथाएँ एवं कथाएँ'।

कार्यशालाः 10 से 11 जनवरी, 2017 तक धान उत्पादक संस्कृति पर कार्यशाला का आयोजन किया गया।

भारतीय यहूदी साँस्कृतिक विरासतः इस वर्ष इं.गां.रा.क.केन्द्र द्वारा मुख्य कार्यक्रम 'शीरी होडू: दि ज्यूइश सागा ऑफ इंडिया' महोत्सव का आयोजन किया गया। इसमें एक परिचर्चा, प्रदर्शनी, व्याख्यान और एक प्रस्तुति सम्मिलित थी। की गई गतिविधियों में शामिल थेः

- कला, संस्कृति एवं भारत की यहूदी विरासत पर एक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 6 से 7 फरवरी, 2017 तक किया गया।
- 5 से 28 फरवरी, 2017 तक ज्यूइश सागा ऑफ इंडिया कार्यक्रम के भाग के रूप में होडू और यहूदियों पर एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

विश्वकर्माओं की विश्वदृष्टि

यह परियोजना वैनिशिंग हेरिटेज ऑफ द विश्वकर्मा एण्ड कामलारः टेक्नो–कल्चरल ट्रायल ऑफ दि मेटलवर्क्स इन साउथ इंडिया के दस्तावेजों पर आधारित है। यह आयोजन एनआईएएस, बंगलुरु के सहयोग से किया जा रहा है। इस फिल्म के रफ कट्स आईजीएनसीए को इस वर्ष प्राप्त हो गए हैं।

भारत की सम्मिश्र संस्कृतियाँः दिल्ली की भारतीय–इस्लामी विरासत– कस्बा संस्कृति।

इस परियोजना पर आधारित 20 डीवीडी एवं 1 घंटे की फिल्म पूरी की गई।

क्षेत्र संपदा

क्षेत्र संपदा में किसी स्थान विशेष या किसी मंदिर और उसकी इकाइयों तथा उस स्थान के आस–पास रहने वाले लोगों की संस्कृति पर उनके प्रभाव के बारे में किसी केन्द्र विशेष के धार्मिक, कलात्मक, भौगोलिक, सामाजिक और आर्थिक पक्षों के समूचे अंतर–संयोजन पर और उसके नवीकरणों के पीछे काम करने वाले तत्वों पर विचार किया जाता है।

सहभागिता

- प्रो. मौली कौशल, विभागाध्यक्ष (जनपद–सम्पदा प्रभाग) ने विश्व रामायण सम्मेलन, जबलपुर, मध्यप्रदेश में 22 से 23 दिसम्बर, 2016 तक भाग लिया। उन्होंने 'भारतीय रामलीला मंच पर राम बनने की प्रक्रिया' पर एक शोध पत्र प्रस्तुत किया गया।
- सेंचुरियन विश्वविद्यालय, ओडिशा और आईजीएनसीए के संयुक्त तत्वावधान में 6 से 9 फरवरी, 2017 को 'रिलीजन्स इन डिजिटल एशियाः रीएलिटीज़, एक्सपीरिएंशिज, विजन पर एक गोलमेज सम्मेलन का आयोजन किया गया।
- जनपद संपदा विभाग के एक दल ने ऑल असम आंकिया भाओना समारोह, 2017 के हिस्से के तौर पर 28 जनवरी से 3 फरवरी, 2017 तक आयोजित सत्रीय कल्चरः इम्पेक्ट, सस्टेनेबिलिटी एंड फ्यूचर एट माजुली, असम नामक एक संगोष्ठी में हिस्सा लिया।
- जनपद संपदा विभाग के एक दल ने ऑल असम आंकिया भाओना समारोह, 2017 के लिए 28 जनवरी से 3 फरवरी, 2017 तक माजुली, असम में कमलाबाई सत्र और असम सरकार के सहयोजन में कार्य किया।

प्रकाशित किए गए प्रकाशन

- 'गोल्ड डस्ट ऑफ बेगम सुल्तान'
- 'द आर्ट ऑफ केरल क्षेत्रम्'
- 'कथा, प्रदर्शन और सचित्र परम्परा में रामकथा'
- कैटलॉग–'आख्यान– भारतीय कथा परम्पराओं में मुखौटों, कठपुतलियों एवं भारतीय कथा पंरपरा की प्रदर्शिनी'।

प्रेस में

- 'एरेबिक मलयालमः लिंग्विस्टिक कल्चरल ट्रेडीशन ऑफ मोप्पलाज़ इन केरल'
- 'सेक्रिड टेम्पल ऑफ सबरीमाला अय्यपा'
- 'ईकोज फ्रॉम द हार्टः वीमन राइटिंग इन उर्दू'–तीन खण्डों में
- 'रम्माण– ए रिलिजियस एंड रिचुअल फोक थिएटर ऑफ गढ़वाल'

प्रेस में भेजे जाने के लिए तैयार

- 'एस्थेटिक टेक्सचर्सः महाभारत एंड इट्स लिविंग ट्रेडीशंस'
- 'गौंडी रामायणी'
- 'कुमाऊंनी रामलीला– एक दुर्लभ परम्परा'
- 'मध्यप्रदेश के जनपदीय रामकथा गीत'
- 'राम सीतमा नी वार्ता– एन एपिक ऑफ डुंगरी भील्स'
- 'मनसा– लाइफ एंड एक्जिस्टेंस ऑफ ए लीजेण्ड'

टैगोर फैलोशिप

31 मार्च, 2017 को श्री भगवान दास पटेल द्वारा 'भीलों की सांस्कृतिक विरासत' का क्षेत्रीय अध्ययन कार्य पूरा किया गया। उन्होंने रिपोर्ट जमा कर दी है।

व्याख्यान/चर्चा

- 18 जुलाई, 2016 को इं.गां.रा.क.केन्द्र में श्री निरंजन महावर द्वारा 'ट्राइबल एंड फोक ब्रांचेज़ ऑफ बस्तर, ओडिशा एंड वेस्ट बंगाल' पर एक व्याख्यान दिया गया।
- जनवरी, 2017 में जनपद सम्पदा प्रभाग की विभागाध्यक्षा प्रोफेसर मॉली कौशल द्वारा जेएनयू में 'फेडिंग नोट्स ऑफ फोक सिंगर्स' पर एक वार्ता आयोजित की गई।
- प्रोफेसर मॉली कौशल, विभागाध्यक्षा, जनपद सम्पदा प्रभाग द्वारा 22 से 23 दिसम्बर, 2017 तक 'विश्व रामायण सम्मेलन' के दौरान 'भारतीय रंगमंच पर राम का चित्रण' विषय पर व्याख्यान दिया।
- 'गद्दी नॉलेज सिस्टम एण्ड ओरल एपिक सवीन' पर एक व्याख्यान 10 से 11 फरवरी, 2016 को पोर्ट ब्लेयर, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में 'ट्राइबल लिटरेचर एंड ओरल एक्सप्रेशन इन इंडिया' पर आयोजित साहित्य अकादमी सम्मेलन में जनपद सम्पदा की विभागाध्यक्षा प्रोफेसर मॉली कौशल द्वारा एक व्याख्यान दिया गया।
- 4 मार्च, 2017 को गुजरात के खेर ब्रह्म उच्च विद्यालय में श्री भगवान दास पटेल द्वारा 'आदिवासी लोक साहित्य शास्त्र' पर एक व्याख्यान दिया गया।

उत्तर–पूर्व अध्ययन कार्यक्रम

शोध परियोजनाएं

भारत के पूर्वोत्तर राज्यों की वस्त्र परम्पराओं का प्रलेखनः धागों, कपड़ों, रंजकों, लूमों और औजारों की डिजाइन का सम्पूर्ण अध्ययन, प्रयोग और सांस्कृतिक संकेतकः (यह परियोजना एनआईडी, अहमदाबाद के सहयोग से की जा रही है)। वर्तमान में इस परियोजना के लिए सभी 8 राज्यों का प्रलेखन कार्य पूरा कर लिया गया है एवं 2 राज्यों से प्राप्य वस्तुएं अर्जित की गई हैं। अंतिम रिपोर्ट अभी प्राप्त होनी है।

निम्नलिखित राज्यों से राज्य–वार सामग्री प्राप्त हो गई है–

मिजोरमः प्राप्त सामग्री

- क्षेत्रीय कार्य के दौरान संगृहीत वस्त्रों के टुकड़े
- पुस्तकें
- फोटोग्राफ्स
- वीडियो

मेघालयः प्राप्त सामग्रीः

- वस्त्रों के टुकड़े
- पुस्तकें
- फोटोग्राफ्स
- वीडियो

प्रदर्शनियां

- मई, 2016 में स्पिक मैके के सहयोग से आईआईटी, गुवाहाटी में 'मणिपुर की चित्रकलाओं एवं लोक महाकाव्य एवं नागा फोटोग्राफ्स' की प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।
- 22 से 24 फरवरी, 2017 तक मैसूर में 'कला, साहित्य एवं धर्म में भगवान श्रीराम' पर एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान जनपद सम्पदा के अभिलेखागार से गौंड चित्रकला, मुखौटे, कठपुतलियों, लीथोग्राफ्स का समावेश करके रामायण प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। जनपद सम्पदा की टीम ने इस सम्मेलन में 'रामायण इन इंडियन आर्ट्स एंड थॉट' पर अपने अकादमिक प्रस्तुति भी साझा की।

प्रकाशनः

उत्तर–पूर्व अध्ययन कार्यक्रम के तहत निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशन के लिए तैयार हैं–

- 'उत्तर–पूर्व में वैष्णव–पुनर्जागरण पर पुनर्विचार'
- 'उत्तर–पूर्व भारत के पारम्परिक वस्त्रः आईजीएनसीए के वस्त्र संग्रह का एक कैटालॉग'
- 'उत्तर–पूर्व भारत एवं दक्षिण पूर्व एशिया के मध्य अंतर सांस्कृतिक संवाद'
- 'उत्तर–पूर्व भारत की इस्लामी विरासत'
- 'उत्तर–पूर्व भारत के पारम्परिक वस्त्रः आईजीएनसीए के वस्त्र संग्रह का एक कैटालॉग'

प्रोजेक्ट मौसम (बाहरी परियोजना)

प्रोजेक्ट मौसम, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा डिजाइन की गई एक बहु–विषयी परियोजना है जिसे महासागरीय विश्व के बीच के दीर्घकाल से लुप्त जुड़ावों को फिर से ताजा करने के लिए और सहयोग एवं आदान–प्रदान के नए रास्ते तैयार करने के विचार से लाया गया है। इसके पीछे मिशन यह है कि तटवर्ती स्थलों का एक व्यापक डेटाबेस और समुद्री रास्तों एवं सांस्कृतिक परिदृश्य के बारे में यूनेस्को वेब प्लेटफॉर्म तैयार करके मेमोरी ऑफ दि वर्ल्ड रजिस्टर जिसमें महासागरों के आर–पार के सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक जुड़ावों का सामूहिक वर्णन हो, पर समुद्री रास्तों के परा–राष्ट्रीय नामांकन, स्थलों का सूचीयन, अमूर्त विरासत और शिलालेखों को दर्ज किया जाए। इससे हम इस योग्य हो सकेंगे कि यूनेस्को के लिए एक अनूठा पार–सांस्कृतिक औपचारिक दृष्टिकोण प्रदर्शित और स्थापित कर सकेंगे और इसका अनुसरण एक मॉडल के रूप में सतत विकास के लिए तथा पर्यटन के लिए किया जा सकेगा। साथ ही महासागरीय विश्व के आर–पार प्राचीन एवं ऐतिहासिक विनिमय के बारे में सहयोजनात्मक एवं प्रमाण आधारित अनुसंधान के लिए एक मंच स्थापित हो सकेगा।

इस प्रकार, प्रोजेक्ट 'मौसम' का प्रयास खुद को दो स्तरों पर स्थापित करने का है। सूक्ष्म स्तर पर इसका उद्देश्य राष्ट्रीय संस्कृतियों को उनके अपने क्षेत्रीय समुद्री परिवेश में समझने पर ध्यान केन्द्रित करने का है जबकि वृहद् स्तर पर, इसका उद्देश्य हिंद महासागर के आस–पास के देशों के बीच संपर्क को फिर से जोड़ने और स्थापित करने का है, जिससे कि सांस्कृतिक मूल्यों और सरोकारों की समझ बढ़ेगी।

इस परियोजना के लक्ष्य हैं: (1) राष्ट्रों के साथ लुप्त जुड़ावों को पुनर्जीवित करना, (2) विद्यमान विश्व विरासत स्थलों के साथ संबंध बनाना, (3) सांस्कृतिक परिदृश्य को पुनःरूपायित करना, और (4) विश्व विरासत के तहत परा–राष्ट्रीय नामांकन प्राप्त करना। इस परियोजना के अंतर्गत जिन विषयों पर अन्वेषण किया जाना है, वे हैं:

- सांस्कृतिक भू–दृश्यों के रूप में तटीय वास्तुशिल्प,
- चल विरासत एवं कला–वस्तुएँ,
- जल–निमग्न सांस्कृतिक विरासत,
- औद्योगिक विरासत एवं पोत निर्माण,
- अमूर्त सांस्कृतिक विरासत,
- महासागरों के आर–पार तीर्थयात्रा और धार्मिक यात्रा, और
- मौखिक परम्पराएँ और साहित्यिक रचनाएँ।

प्रोजेक्ट 'मौसम' की शुरुआत 22 जून, 2014 को की गई थी और 31 मार्च, 2016 तक इसके तहत वर्ष निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किए गए–

- 'मौसमः मेरिटाइम कल्चरल लैण्डस्केप्स एक्रॉस दि इंडियन ओशन'; नामक एक प्रकाशन जिसका संपादन प्रोफेसर हिमांशु प्रभा रे ने किया;
- प्रोजेक्ट मौसम से संबंधित विभिन्न विषयक्षेत्रों पर सत्रह व्याख्यान आयोजित किए गए;
- इं.गां.रा.क. केन्द्र में 'अफ्रीकन्स इन इंडियाः ए रिडिस्कवरी' पर एक प्रदर्शनी का उद्घाटन किया गया और यह प्रदर्शनी भिन्न–भिन्न नगरों में ले जाई गई;
- इं.गां.रा.क. केन्द्र में 'अफ्रीकन्स इन इंडियाः ए रिडिस्कवरी' पर एक दिवसीय सम्मेलन;
- 'कल्चरल लैण्डस्केप्स एंड मेरिटाइम ट्रेड रूट्स ऑफ इंडिया' विषय पर एएसआई, इं.गां.रा.क.केन्द्र और केरल पर्यटन द्वारा राष्ट्रीय सम्मेलन;

- राष्ट्रीय संग्रहालय में 'अनअर्थिंग पट्टनमः हिस्टरीज, कल्चर्स एंड क्रॉसिंग्स' पर एक प्रदर्शनी;
- राष्ट्रीय संग्रहालय में 'दि मेकिंग ऑफ दि इंडियन सबकॉन्टीनेंटः इंडियन ओशन पर्सपेक्टिव' पर एक सम्मेलन;
- इं.गां.रा.क.केन्द्र में 'मेरिटाइम कल्चर ऑफ इंडिया एंड इट्स पोटेंशियल' पर एक परिचर्चा।

'मैरिटाइम हैरिटेज ऑफ इंडियन कोस्टलाइन एंड इट्स पोटेंशियल' पर आईजीएनसीए में चल रही एक विचार–गोष्ठी

प्रोजेक्ट मौसम में इं.गां.रा.क.केन्द्र एक प्रमुख हितधारक है जिसे परियोजना संबंधी विषय क्षेत्रों के अकादमिक अनुसंधान की जिम्मेदारी सौंपी गई है। इस ध्येय को पूरा करने के लिए 04 जनवरी, 2017 को एक अकादमिक समिति का गठन किया गया है जिसमें निम्नलिखित को शामिल किया गया हैः

• डॉ. सच्चिदानंद जोशी, सदस्य सचिव, इं.गां.रा.क.केन्द्र	: अध्यक्ष
• पुरातत्व सर्वेक्षण के महानिदेशक या उनका नामिती जो संयुक्त सचिव की रैंक से नीचे का ना हो	: सदस्य
• उप महा निदेशक, आईसीसीआर	: सदस्य
• निदेशक (विश्व विरासत), एएसआई	: सदस्य
• संयुक्त सचिव, इं.गां.रा.क.केन्द्र	: सदस्य
• प्रोफेसर माखनलाल	: विशेषज्ञ
• प्रोफेसर के.के. थपलियाल	: विशेषज्ञ
• श्री संदीप सिंह	: विशेषज्ञ
• डॉ. संघ मित्र	: विशेषज्ञ
• डॉ. सतीश मित्तल	: विशेषज्ञ
• श्री जॉय कुरियाकोज, परियोजना निदेशक, इं.गां.रा.क.केन्द्र	: संयोजक
• यूनेस्को, पेरिस में भारत के स्थायी प्रतिनिधि, संस्कृति मंत्रालय के संयुक्त सचिव (यूनेस्को के लिए), विदेश मंत्रालय के संयुक्त सचिव (यूनेस्को के लिए)	: आवश्यकता होने पर आमंत्रित किया जाना है।

विषयक्षेत्रों के आधार पर इं.गां.रा.क. केन्द्र ने निम्नलिखित के लिए कार्य–योजना तैयार की हैः

- विश्व विरासत के लिए समुद्री रास्तों, स्थलों, पत्तन बसावटों, सांस्कृतिक भू–दृश्यों के बारे में अनुसंधान
- सचल विरासत एवं कला–वस्तुओं का सूचीयन करना और उन्हें सामने लाना
- समुद्री व्यापार रास्तों के माध्यम से संग्रहालयों को जोड़ना
- मार्ग के बारे में अनुसंधान और उसका मानचित्रण
- सृजनात्मक उद्योगों का प्रलेखन और मानचित्रण
- अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की रिकॉर्डिंग
- सांस्कृतिक विविधता संबंधी आयोजनों को बढ़ावा देना
- मौखिक परम्पराओं, साहित्यिक रचनाओं, आदि का प्रलेखन और मानचित्रण।

कलादर्शन
(प्रसार एवं प्रस्तुति प्रभाग)

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र में कलाओं को उनके विविध रूपों में प्रस्तुत करने का दायित्व कलादर्शन प्रभाग इस संस्था का चौथा प्रभाग है। यह प्रभाग संस्कृतियों, विषयों और समाज के विभिन्न स्तरों तथा विविध कलाओं के बीच रचनात्मक संवाद सुगम बनाने के लिए स्थान एवं मंच उपलब्ध कराता है। अपने कार्यक्रमों के माध्यम से इस प्रभाग ने कला–रूपों को सामने लाने और उनके प्रस्तुतीकरण के लिए एक अनूठी शैली स्थापित की है। प्रभाग इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए एकीकृत विषयक्षेत्रों एवं संकल्पनाओं के बारे में प्रदर्शनियों, अंतर–विषयी संगोष्ठियों, और प्रस्तुतियों का आयोजन करता है।

आयोजित किए जाने वाले अधिकांश कार्यक्रम या तो चल रही शोध परियोजनाओं पर आधारित होते हैं या फिर भविष्य में किए जाने वाले शोध के लिए केन्द्र के आगार की वृद्धि करते हैं। सहकारी आयोजनों में अन्य संगठनों के साथ सहभागिता में यह प्रभाग सहायता प्रदान करता है और गैर–सहकारी कार्यक्रमों के लिए संपर्क–बिन्दु के रूप में कार्य करता है। किसी भी आयोजन के लिए आयोजन–स्थल उपलब्ध कराने का कार्य कलादर्शन द्वारा किया जाता है और उसके लिए यह प्रभाग इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के भिन्न–भिन्न स्थलों जिनमें 11, मानसिंह रोड स्थित प्रदर्शनी कक्ष और व्याख्यान कक्ष; सी.वी. मैस, जनपथ स्थित सम्मेलन कक्ष, जुड़वां कला दीर्घाएं और प्रेक्षागृह; मीडिया सेंटर स्थित प्रेक्षागृह; इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के सी.वी.मैस, जनपथ स्थित ऐम्फिथिएटर और खुले मैदान शामिल हैं। इन पर आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रमों की वार्षिक सूची भी यही प्रभाग व्यवस्थित करता है।

कलादर्शन, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के आयोजनों के प्रचार और प्रसार के लिए भी कार्य करता है। यह प्रभाग, संस्थान की जनसंपर्क एजेंसी के साथ गहन समन्वय रखते हुए कार्य करता है और आगंतुकों को आयोजनों के बारे में ई–न्यूजलैटर्स, फेसबुक, ट्विटर, संस्कृति एप, एलईडी डिस्प्ले बोर्डों और गूगल कैलेण्डर के माध्यम से अवगत रखता है। कलादर्शन प्रभाग यू–ट्यूब पर इं.गां.रा.क.केन्द्र के कार्यक्रमों के लघु–वीडियो भी अपलोड करता है। वर्ष के दौरान चलाई गई गतिविधियों का ब्यौरा इस प्रकार है:

प्रदर्शनियाँ

- 'थ्रैड्स ऑफ कांटिन्यूटी: जोरास्ट्रीयन लाइफ एंड कल्चर' पर प्रदर्शनी का आयोजन 21 मार्च, 2016 से 31 मई, 2017 तक इं.गां.रा.क.केन्द्र में किया गया। इसमें पारसी समुदाय के इतिहास और जीवन शैली को उजागर किया गया। प्रदर्शनी 'दि एवरलास्टिंग फ्लेम इन्टरनेशनल'के कार्यक्रम के एक हिस्से के रूप में आयोजित किया गया था। करीब 5000 स्कूली छात्रों ने प्रदर्शनी का दौरा किया। इसी अवधि के दौरान श्री कतायुन सक्लात द्वारा 'स्टेन्ड ग्लास', 'कुस्टी बुनाई', तोरण

'शीरी होडू: सेलीब्रेटिंग दि ज्यूइश सागा ऑफ इंडिया'
के हिस्से के रूप में 'होडू एंड दि ज्यूज' प्रदर्शनी में एक आगंतुक।

निर्माण प्रदर्शन और पारसी कढ़ाई' पर कार्यशालाएँ भी संचालित की गईं। पारजोर फाउंडेशन के प्रतिनिधियों ने पारसी विरासत और पारसी संस्कृति के बारे में प्रतिभागियों से विचार साझा किए जिन्होंने यह सीखा कि उपकरणों के रूप में सांस्कृतिक संसाधनों का उपयोग करके विद्यार्थियों को किस प्रकार इस बारे में शिक्षित किया जाए।

- सुश्री डिम्पल बहल द्वारा तैयार की गई प्रदर्शनी 'स्क्रिप्टिंग दि पास्ट फॉर दि फ्यूचर' का आयोजन इं.गां.रा.क.केन्द्र में 31 मार्च से 8 अप्रैल, 2016 तक राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन के सहयोजन में किया गया। सुश्री बहल राष्ट्रीय फैशन प्रौद्यागिकी संस्थान, नई दिल्ली में सहायक प्रोफेसर हैं। इस प्रदर्शनी की संकल्पना सदियों पुरानी प्राचीन पांडुलिपियों को ग्रन्थाकार बनाने और उनकी डिजाइनिंग पर आधारित थी।
- इं.गां.रा.क.केन्द्र में 7 सितम्बर, 2016 को एक प्रदर्शनी 'मैपिंग इंडियन हैंडक्राफ्टेड टेक्सटाइल्स मेटेरियल्स, टेकनीक, ट्रेडीशन' का उद्घाटन किया गया। इस प्रदर्शनी को टैगोर नेशनल फैलोशिप के अंतर्गत इंडियन टेक्स्टाइल्स पर परियोजना के भाग के रुप में आयोजित किया गया था। शिल्पकला संग्रहालय की पूर्व निदेशक, सुश्री रुचिरा घोष ने इं.गां.रा.क.केन्द्र में इस शो को क्यूरेट किया। यह प्रदर्शनी 25 अक्टूबर, 2016 तक चली।
- 'पीपुल, बुक, लैंडः दि 3500 इयर रिलेशनशिप ऑफ दि ज्यूइश पीपुल विद दि होली लैंड' पर प्रदर्शनी का उद्घाटन 21 सितम्बर, 2016 को किया गया। यह प्रदर्शनी यूएसए के साइमन विसेन्थमल सेंटर और यूनेस्को के सहयोग से आयोजित की गई थी। उद्घाटन समारोह में प्रतिष्ठित व्यक्ति नामतः पूर्व निदेशक, सीबीआई, माननीय डी.आर. कार्तिकेयन; भारत में इज़रायल के राजदूत महामहिम डेनियल कार्मोन; भारत में संयुक्त राज्य अमेरिका के राजदूत महामहिम रिचर्ड वर्मा; कनाडा के उप उच्चायुक्त महामहिम जेस डट्टन; रब्बी अब्राहम कूपर सहित समारोह में विभिन्न देशों के राजदूत और गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया। प्रदर्शनी 9 अक्टूबर, 2016 तक चली।

'पीपुल, बुक, लैंडः दि 3500 इयर रिलेशनशिप ऑफ दि ज्यूइश पीपुल विद दि होली लैंड' पर प्रदर्शनी का उद्घाटन।
(बाएं से दाएं): रब्बी अब्राहम कूपर, डॉ. सच्चिदानंद जोशी, सदस्य सचिव, आईजीएनसीए, महामहिम रिचर्ड वर्मा, भारत में संयुक्त राज्य अमेरिका के राजदूत, महामहिम डेनियल कारमन, भारत में इजराइल के राजदूत, महामहिम जैश डटन, कनाडा के उप उच्चायुक्त।

- स्वर्गीय श्री हरिराम हीरानन्दानी के चित्रों के संग्रह 'बोकेटोः ए कलेक्शन ऑफ पेंटिंग्स' पर एक प्रदर्शनी 15 से 30 जनवरी, 2017 तक शारदा उकिल स्कूल ऑफ आर्ट्स के सहयोग से इं.गां.रा.क.केन्द्र में आयोजित की गई। इसका उद्घाटन भारत के पूर्व उप प्रधानमंत्री श्री एल.के. आडवाणी द्वारा किया गया। स्वर्गीय हीरानन्दानी को भारत में परिदृश्य पेटिंग की शैली में सर्वाधिक प्रशंसित नामों में से एक माना जाता था। प्रदर्शनी के समापन समारोह में नेपाल के राजदूत महामहिम श्री दीप कुमार उपाध्याय मुख्य अतिथि थे।

संगोष्ठियां/सम्मेलन/कार्यशालाएं

- भारतीय शिक्षा मंडल के सहयोग से इं.गां.रा.क.केन्द्र में 'राष्ट्रीय सुरक्षा हेतु शिक्षा' पर एक संगोष्ठी 4 जून, 2016 आयोजित की गई। मेजर जनरल डॉ. गगन दीप बक्शी इस अवसर पर मुख्य अतिथि थे।

- मास्टर संसार चंद बारू मेमोरियल चैरिटेबल ट्रस्ट, जम्मू के सहयोग से इं.गां.रा.क.केन्द्र द्वारा 'पटनी टॉप' पर छह दिवसीय पेटिंग शिविर/कार्यशाला का आयोजन पटनी टॉप, जम्मू में 15 से 20 सितम्बर, 2016 तक किया गया। इस शिविर में भारत के विभिन्न हिस्सों से आए वरिष्ठ कलाकारों ने भाग लिया। पटनी टॉप के स्कूली बच्चों ने भी इसमें अपनी सहभागिता दर्ज कराई। इस कार्यशाला का आयोजन पटनी टॉप के प्रति जनता में जागरूकता उत्पन्न कर एक क्षेत्र के रूप में उसके महत्व को उजागर करने और उसे परिरक्षित करने का था।

- इं.गा.रा.क.केन्द्र ने फरवरी, 2017 में 'दि ज्यूइश हेरिटेज इन इंडिया' विषय पर एक अंतर–राष्ट्रीय सम्मेलन और प्रदर्शनी की मेजबानी की। दो दिन के इस सम्मेलन 'शीरी होडूः सेलेब्रेटिंग दि ज्यूइश सागा ऑफ इंडिया' का उद्घाटन 6 फरवरी को विदेश राज्य मंत्री श्री वी.के. सिंह द्वारा किया गया। दो समानांतर सत्रों में भारत और विदेशों से आए विद्वानों ने हिस्सा लिया और चालीस शोधपत्र प्रस्तुत किए। 'होदू एंड दि ज्यूज' नामक प्रदर्शनी में भारतीय जीवन, कला, चिकित्सा, शिक्षा, सैन्य मामले, वास्तुकला, राजनीति और आध्यात्मिकता तथा मुख्यधारा सिनेमा के विभिन्न पहलुओं पर यहूदी समुदाय के योगदान पर प्रकाश डाला गया। माननीय विदेश राज्य मंत्री श्री एम.जे. अकबर ने भारत में नेपाल के राजदूत महामहिम श्री दीप कुमार उपाध्याय एवं अन्य महानुभावों की उपस्थिति में प्रदर्शनी का उद्घाटन किया।

- पूरक घटनाओं में, फिल्म की स्क्रीनिंग और चर्चा का आयोजन 'ब्लू लाइक मीः दि आर्ट ऑफ सिओना बेंजामिन', नामक कार्यक्रम के तहत किया गया और दो व्याख्यान–(1) 'एक्सपेंडिंग होराइजन्स, कान्ट्रेक्टिंग पेराडाइम' 'दि स्टेट ऑफ रिसर्च इन टु इंडियाज़ ज्यूज़' पर प्रोफेसर शाल्वा वेइल द्वारा तथा (2) 7 फरवरी को ''डायस्पोरा, ज्यूज़ एंड इंडियाः नेम ऑफ द गेम एंड गेम'' विषय पर व्याख्यान भी आयोजित किए गए।

- 23 से 24 जनवरी, 2017 तक सामाजिक और सांस्कृतिक अध्ययन संस्थान (कोलकाता), विकासशील देशों के लिए अनुसंधान और सूचना प्रणाली (नई दिल्ली), मौलाना अबुल कलाम आजाद इंस्टीट्यूट ऑफ एशियन स्टडीज (कोलकाता), नेहरू मेमोरियल म्यूजियम एंड लाइब्रेरी के सहयोजन में 'इंडो–बांग्लादेश मल्टी सेक्टोरल को–ऑपरेशन' विषय पर एक अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में भारत में बांग्लादेश के उच्चायुक्त श्री सैयद मुआजेम अली (टीबीसी); लिबरेशन वॉर अफेयर्स, बांग्लादेश सरकार के माननीय मंत्री श्री मोहम्मद हक (टीबीसी) और भारत सरकार के विदेश मामलों के राज्य मंत्री श्री एम. जे. अकबर इस सम्मेलन में उपस्थित गणमान्य व्यक्ति थे।

- इं.गां.रा.क.केन्द्र और महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक के हिन्दी विभाग के सहयोग से 'भरतमुनि का नाटयशास्त्र' विषय पर 11 से 17 फरवरी, 2017 तक प्रो. भरत गुप्त द्वारा सात दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला की मेजबानी विश्वविद्यालय द्वारा की गई।

संस्कृति संवाद श्रृंखला

इ.गां.रा.क.केन्द्र ने 28 जुलाई, 2016 को संवाद एवं विचार–विनिमय की भारतीय परम्परा को पुष्ट करने के लिए संस्कृति संवाद श्रृंखला के रूप में एक बड़ी पहल शुरू की।

- इस श्रृंखला के पहले अध्याय में नामी लेखक/रचनाकार डॉ. नामवर सिंह पर संवाद इ.गां.रा.क.केन्द्र में 28 जुलाई, 2016 को आयोजित किया गया। संयोगवश यह हिन्दी साहित्य के जीवंत शीर्ष पुरुष डॉ. नामवर सिंह की 90वीं सालगिरह भी थी। केन्द्रीय गृह मंत्री श्री राजनाथ सिंह; संस्कृति एवं पर्यटन राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) डॉ. महेश शर्मा के अलावा तीन सत्रों के दौरान विभिन्न भाषाओं के अनेक प्रतिष्ठित साहित्यकार इस अवसर पर उपस्थित थे। इं.गां.रा.क.केन्द्र द्वारा संस्कृति संवाद श्रृंखला के पहले कार्यक्रम में (1) एक प्रदर्शनी, (2) दो पुस्तकों का प्रकाशन, और (3) उनके साक्षात्कार से संबंधित एक वृत्तचित्र 'नामवर सिंह के 90 साल' शामिल थे।
- इं.गां.रा.क.केन्द्र की संस्कृति संवाद श्रृंखला का दूसरा अध्याय 'रामानुजीयमः श्री रामानुजाचार्य की दुनियां' विषय पर 7 अक्टूबर, 2016 को श्री रामानुज की सहस्राब्दी (1000वें) जयन्ती के अवसर पर किया गया। यह कार्यक्रम (1) श्री रामानुज मिशन ट्रस्ट, चेन्नई; और (2) श्री चैतन्य प्रेम संस्थान, वृन्दावन के सहयोजन में आयोजित किया गया। इस एक–दिवसीय संगोष्ठी में भारतीय दर्शन में रामानुजाचार्य के योगदान और उनके देहावसान के एक हजार वर्ष पश्चात् भी भारतीय चिंतन परम्परा पर उसके प्रभाव के बारे में मुख्यतः बल दिया गया। नामी विद्वान जैसे श्री ए. कृष्णम्माचारियर, आयी नरसिम्हन, एम.ए. लक्ष्मी–तथाचार, डॉ. एन. गोपालस्वामी, डॉ. वी. वरदराजन, श्रीवल्सल गोस्वामी और अन्य प्रतिष्ठित विद्वान इस संवाद में सहभागी बने।

श्री राजनाथ सिंह, केन्द्रीय गृह मंत्री ने डॉ. नामवर सिंह (बीच में) को 'संस्कृति संवाद श्रृंखला' में सम्मानित किया। डॉ. महेश शर्मा, संस्कृति राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) इस अवसर पर सम्मानित अतिथि थे (दाएं)। इस अवसर पर मौजूद रहे (बाएं): डॉ. सच्चिदानंद जोशी, सदस्य सचिव, आईजीएनसीए और श्री गिरीश्वर मिश्र, कुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा।

- 'संस्कृति संवाद श्रृंखला का तीसरा अध्याय भारत रत्न डॉ. एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी पर था। संस्कृति मंत्रालय द्वारा घोषित जन्म शताब्दी समारोह के हिस्से के रूप में उनकी जन्म शताब्दी मनाने के लिए एक कार्यक्रम जिसमें एक प्रदर्शनी, संगोष्ठी, परिचर्चा और सांगीतिक प्रस्तुतियाँ शामिल थीं, आयोजित किया गया। पिछले 5–6 दशकों से उनकी संगीत प्रस्तुतियों का हिस्सा रह चुके कलाकारों जैसे श्री विक्कु विनयक्रम, श्री टी.के. मूर्ति, श्री के.वी. प्रसाद और उन लोगों जो उन्हें व्यक्तिगत रूप से जानते थे जैसे श्रीमती सुजाता विजयराघवन ने संगीत के प्रति डॉ. सुब्बुलक्ष्मी की संगीत के प्रति निष्ठा और उसमें स्पष्ट रूप से निहित भक्ति तत्व पर चर्चा की।

- संस्कृति संवाद श्रृंखला का चौथा अध्याय निमित्त देवेन्द्र स्वरूप 30 मार्च, 2017 को आयोजित की गई। प्रो. देवेन्द्र स्वरूप एक प्रख्यात लेखक, विचारक, इतिहासकार, विद्वान और मार्गदर्शक हैं, जिन्होंने अपने सार्थक जीवन के 90वें वर्ष में कदम रखा है। इं.गां.रा.क.केन्द्र ने इस प्रसिद्ध साहित्यकार को इस अवसर पर सम्मानित किया। इस संगोष्ठी का उद्घाटन पूर्व केबिनेट मंत्री डॉ. मुरली मनोहर जोशी ने प्रसिद्ध विचारक श्री कृष्णगोपाल की उपस्थिति में किया। पहला सत्र 'संस्कृति के बदलते आयाम और जीवन दर्शन' पर आधारित था और दूसरा सत्र 'राष्ट्रीयता के प्रश्न' पर आयोजित किया गया। डा. देवेन्द्र स्वरूप के जीवन और उपलब्धियों पर एक वृत्तचित्र भी संगोष्ठी के अंत में प्रदर्शित किया गया। प्रो. स्वरूप पर एक डीवीडी और पुस्तक भी लोकार्पित की गई।

'संस्कृति संवाद श्रृंखला–निमित्त देवेन्द्र स्वरूप'। (बाएं से दाएं): डॉ. सच्चिदानंद जोशी, सदस्य सचिव, आईजीएनसीए, डॉ. मुरली मनोहर जोशी, सांसद (लोक सभा) और पूर्व केबिनेट मंत्री, प्रोफेसर देवेन्द्र स्वरूप, प्रतिष्ठित विचारक, श्री कृष्णगोपाल और श्री राम बहादुर राय, अध्यक्ष, आईजीएनसीए।

सार्वजनिक व्याख्यान

- 4 अप्रैल, 2016 को सुश्री डिंपल बहल, सहायक प्रोफेसर, राष्ट्रीय फैशन टेक्नालॉजी संस्थान, नई दिल्ली द्वारा 'स्क्रिप्टिंग दि पास्ट फॉर दि फ्यूचर' पर।
- शेयरिंग स्टोरीज फाउंडेशन संस्था की सीईओ सुश्री लिज थॉम्पसन द्वारा 8 अप्रैल, 2016 को 'दि वर्क ऑफ शेयरिंग स्टोरीज फाउंडेशन' विषय पर (आस्ट्रेलिया में आदिवासी समुदायों और वाराणसी में कुछ समुदायों के बारे में)।
- 'थ्रेडस ऑफ कान्टीनियुटीः जोरोस्ट्रीज लाइफ एंड कल्चर' पर प्रदर्शनी के भाग के रूप में ''जोरोस्ट्रीयन मोटिफ्स इन पारसी एम्ब्राइडरी'' विषय पर डॉ. शेरनाज कामा और श्री आशदीन लीलाओवाला द्वारा 16 अप्रैल, 2016 को।
- 8 जुलाई, 2016 को 'सम आस्पेक्ट्स ऑफ वैदिक ट्रेडीशंस इन अर्ली तमिलनाडु' विषय पर विख्यात कला इतिहासविद्, पुरात्ववेत्ता और शिलालेख–विद् डॉ. रामचंद्रन नागस्वामी द्वारा। तमिलनाडु के मंदिरों के शिलालेखों और कला इतिहास पर उनकी कृतियां सुविख्यात हैं।
- सुश्री स्वर्णमाल्या गणेश द्वारा 28 नवम्बर, 2016 को 'रिकवरी परियोजना' के तहत 'सादिर (भरतनाट्यम) में सांस्कृतिक स्मृतियां और नृत्य अभ्यास' पर। सुश्री गणेश, गुरु कलाईममानी के.जे. सरासा और थिरुवाजापुथुर कल्याणी पौत्रियों की वरिष्ठ शिष्या हैं।
- 31 जनवरी, 2017 को कला और संस्कृति की क्षेत्र की नामी विद्वान, टिप्पणीकार, प्रशासक, परामर्शी और कार्यकर्ता डॉ. अर्षिया सेठी का 'डांसिंग द नेशनः दि फर्स्ट यूनिवर्सिटी यूथ फेस्टिवल एंड दि चेंजिंग प्रोफाइल ऑफ इंडियन आर्टिस्ट्स' विषय पर।
- भारतीय मंचीय कला, साहित्य और संस्कृति में आजीवन योगदान करने वाली नाट्यलेखिका–निर्देशिका, लेखिका और पत्रकार तथा डॉ. एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी की पौत्री डॉ. गौरी रामनारायण की प्रस्तुति 'अबाउट सॉन्ग ऑफ सरेण्डर': 01 फरवरी, 2017 को।

डॉ. गौरी रामनारायण द्वारा 'अबाउट सॉन्ग ऑफ सरेण्डर' पर व्याख्यान।

- 20 फरवरी, 2017 को सुश्री शैरॉन लोवेन द्वारा 'ट्रांसकल्चरल ज्यूइश आइडेनटिटी–अमेरिका टु इंडिया' विषय पर।
- 14 मार्च, 2017 को प्रोफेसर मार्था स्ट्रॉन की एक वार्ता। वह उत्तरी कैरोलिना विश्वविद्यालय, शारलोट में कला की प्रोफेसर एमिरेटस हैं।

प्रस्तुतियाँ और अन्य आयोजन

- 22 अप्रैल, 2016 को इंडिया इंटरनेशल सेंटर में इं.गां.रा.क.केन्द्र और दिल्ली क्राफ्ट्स काउंसिल के सहयोग से कमलादेवी चट्टोपाध्याय के जीवन पर एक नृत्य–नाटिका का आयोजन इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में किया गया। 'कमलादेवी–यादों के कुछ पन्ने' नामक एक घण्टे की यह नृत्य नाटिका सीगल थियेटर, गुवाहाटी द्वारा तैयार और प्रस्तुत की गई और इसका नेतृत्व श्रीमती भागीरथी बाई ने किया। कार्यक्रम स्थल पर लगाए गए आईजीएनसीए प्रकाशन पटल पर लगभग 2,500 आगंतुक पधारे।
- इं.गां.रा.क.केन्द्र और आंगिक के सहयोजन में डॉ. रमा सिंह की ''ये गीत मेरे बंजारे' नामक संगीतात्मक प्रस्तुति का आयोजन किया गया। डॉ. रमा ने जोधपुर में अवस्थित 'आंगिक' नृत्य कंपनी के सहयोग से 'बिम्ब' नामक नृत्यनाटिका भी प्रस्तुत की। 'ये गीत मेरे बंजारे' एक कविता है और 'बिम्ब' इस कविता की नाटकीय प्रस्तुतीकरण।
- संस्कृति मंत्रालय द्वारा 15 से 24 अक्टूबर, 2016 तक आयोजित राष्ट्रीय संस्कृति महोत्सव (भारत का राष्ट्रीय सांस्कृतिक महोत्सव) में संस्था ने स्थल (वैन्यू) साझेदारी की। इसमें देश के भिन्न–भिन्न भागों से प्रदर्शनियाँ, प्रदर्शन, खाने–पीने के स्टाल और शिल्प बाजार आदि का आयोजन किया गया।
- इं.गां.रा.क.केन्द्र ने एनजीओ– ट्रेंड एमएमएस द्वारा 4 से 6 नवम्बर, 2016 तक आयोजित नॉर्थ ईस्ट फेस्टिवल– 'कनेक्टिंग पीपल, सेलिब्रेटिंग लाइफ' की मेजबानी की। भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्रों की सांस्कृतिक परम्पराओं और संपदा को दर्शाने वाले इस महोत्सव का आयोजन संस्था में कई वर्ष से किया जाता रहा है।
- इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के स्थापना दिवस के अवसर पर 19 और 20 नवम्बर, 2016 को प्रदर्शनी, व्याख्यान, संगीत समारोह और फिल्म स्क्रीनिंग आयोजित की गईं। स्थापना दिवस कार्यक्रम का उद्घाटन डॉ. महेन्द्र नाथ पाण्डे, माननीय राज्य मंत्री, मानव संसाधन विकास (उच्चतर शिक्षा) द्वारा किया गया और इं.गां.रा.क.केन्द्र के कई प्रकाशनों का लोकार्पण इस अवसर पर किया गया जैसे– (1) 'बोधायन श्रौतसूत्र', (2) 'भारतीय मंदिर–विश्व का आईना', (3) नाट्यशास्त्र (वॉल्यूम– I), (4) 'एबीआईए दक्षिण और दक्षिणपूर्व एशियाई कला और पुरातत्व सूचकांक, खंड 4', और दो डी.वी.डी. (1) खेरिया में लीला' और (2) 'स्वच्छता देवता एक समान'। इं.गां.रा.क.केन्द्र के न्यूजलेटर 'विहंगम' को फिर से लॉन्च किया गया। सिक्किम के पूर्व राज्यपाल श्री बी.पी.सिंह द्वारा 'संस्कृति एवं शांति' पर एक विशेष व्याख्यान दिया गया। व्याख्यान की अध्यक्षता श्री सूर्यकांत बाली ने की। दिन के अंत में श्री अभिषेक रघुराम द्वारा कर्नाटक संगीत की प्रस्तुति की गई। दूसरे दिन यानि 20 नवंबर, 2016 को इं.गां.रा.क.केन्द्र ने नवीन शास्त्रीय संगीत श्रृंखला 'भिन्न शेड्ज' लोकार्पित की। इस अवसर पर प्रोफेसर ऋत्विक सान्याल ने ध्रुपद गायन प्रस्तुत किया। इसके बाद आईजीएनसीए की फिल्म 'लीला इन खेरिया' की स्क्रीनिंग और भारत विद्या परियोजना के तहत श्री राजीव मल्होत्रा द्वारा 'दि केस फॉर स्वदेशी इंडोलॉजी' पर एक व्याख्यान दिया गया। एसजीटी विश्व विद्यालय, गुड़गाँव से आए छात्रों द्वारा 'गंगा' पर एक नृत्यनाटिका भी प्रस्तुत की गई।
- इन्दिरा गाँधी कला केन्द्र, नोएडा में 26 नवंबर, 2016 को 'रामायण' नृत्यनाटिका की मेजबानी आईजीएनसीए ने की। यह प्रदर्शन इंडोनेशिया के बाली द्वीप की 'रामायण काकाविन' पर आधारित था और इसे बाली के एक प्रमुख नृत्य संस्थान 'सरस्वती साधना' की एक मंडली द्वारा प्रस्तुत किया गया। इंडोनिशिया की प्रसिद्ध नृत्यांगना सुश्री नीकेतुल लक्ष्मी के निर्देशन में इसे प्रस्तुत किया गया।

डॉ. महेन्द्र नाथ पांडेय (बीच में): माननीय मानव संसाधन विकास राज्य मंत्री (उच्चतर शिक्षा) ने आईजीएनसीए के 'स्थापना दिवस समारोह' का उद्घाटन किया। श्री राम बहादुर राय (दाएं), अध्यक्ष, आईजीएनसीए और डॉ. सच्चिदानंद जोशी, सदस्य सचिव, आईजीएनसीए ने माननीय मंत्री जी का गर्मजोशी से स्वागत किया।

- भारतीय नववर्ष, 'विक्रम संवत 2074' को इं.गां.रा.क.केन्द्र में 26 से 28 मार्च, 2017 तक मनाया गया। इस तीन दिवसीय 'स्वागत पर्व' नामक उत्सव में नृत्य–नाटिका, हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत समारोह और 'सैम' द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ की गईं। 'सैम' दिव्य ज्योति संस्थान, नई दिल्ली का एक उपक्रम है। इं.गां.रा.क.केन्द्र ने इस समारोह को पहली बार आयोजित किया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन 26 मार्च को द्रौपदी ड्रीम ट्रस्ट, नई दिल्ली की प्रस्तुति 'द्रौपदी अंतर्कथा' के मंचन से किया गया। दूसरे दिन, 27 मार्च को हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के एकमात्र सारंगी वादक पंडित सुगतो भादुड़ी के वादन और नामी सितार वादक श्रीमती मीरा प्रसाद की प्रस्तुति से किया गया।
- इं.गां.रा.क.केन्द्र द्वारा 21 जून, 2016 को योग दिवस के अवसर पर बहुत से कार्यक्रमों की मेजबानी कर अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। संस्था के सभी कार्मिकों के लिए इस अवसर पर प्रातःयोग सत्र का आयोजन किया गया। विख्यात प्रशिक्षक एवं योग विषय की लेखिका डॉ. अलका त्यागी ने योग–सत्र की अगुवाई की। एक प्रदर्शनी में प्राचीन भारतीय परंपराओं में आकृतियों और मूर्तियों में प्रदर्शित योग मुद्राओं को संकलित कर प्रदर्शित किया गया मुद्रा ग्रुप के युवा कलाकारों द्वारा 'अष्टांग–हार्मनी ऑफ योग एण्ड डांस' नामक एक नृत्य प्रस्तुति से समारोह का समापन किया गया।
- इं.गां.रा.क.केन्द्र ने 'त्यागराज आराधनाई' पर एक कार्यशाला और संगीत समारोह का आयोजन क्रमशः 28 और 29 जनवरी, 2017 को किया। इनकी अगुवाई श्री नेवेली संतनगोपालन ने की।

श्री नेवेली संतनगोपालन (बाएं) और उनकी शिष्याओं द्वारा 'त्यागराज आराधनाई' पर प्रस्तुति।

- भिन्न शेड्जः कलादर्शन ने 'भिन्न शेड्ज' के तहत निम्नलिखित संगीत कार्यक्रम आयोजित किएः

1. 20 नवम्बर, 2016 को प्रोफेसर ऋत्विक सान्याल का संगीत कार्यक्रम।
2. 24 दिसम्बर, 2016 को श्रीमती श्रुति सैदालीकर का संगीत कार्यक्रम। वे जयपुर–अतरौली घराने की विशेषज्ञ गायिका हैं।
3. उस्ताद शाहिद परवेज और उनके शिष्यों द्वारा संगीत कार्यक्रम 28 जनवरी को।
4. 26 फरवरी, 2017 को रुद्र वीणा के अप्रतिम साधक उस्ताद बहीउद्दीन डागर द्वारा संगीत कार्यक्रम; पखावज पर उनकी संगति की डॉ. अनिल चौधरी ने।
5. 25 मई, 2017 को 'भोर राग' शीर्षक के तहत श्रीमती मंजरी असनारे का संगीत कार्यक्रम।

- प्रकाशन (डीवीडी): आलोच्य वर्ष के दौरान अपने प्रोजेक्ट 'हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के शीर्ष कलाकार' के तहत डीवीडी के रूप में निम्नलिखित इलेक्ट्रॉनिक प्रकाशनों का लोकार्पण किया गयाः

1. पंडित मणि प्रसाद और पंडित डालचंद शर्मा पर डीवीडी;
2. पंडित श्रीकृष्ण 'बब्बनराव' हलदणकर पर डीवीडी;
3. विदुषी डॉ. सुहासिनी कोरटकर पर डीवीडी;
4. इं.गां.रा.क.केन्द्र के पूर्व न्यासी और विख्यात फिल्म निर्देशक श्री अडूर गोपालकृष्णन पर एक डीवीडी 'भूमियिल चुवादुराचु' (फीट अपॉन दी ग्राउंड)।

श्री अदूर गोपालकृष्णन पर डीवीडी 'भूमियिल शुवादुराशु (फीड अपॉन दि ग्राउंड)' का लोकार्पण।
(बाएं से दाएं): डॉ. सच्चिदानंद जोशी, सदस्य सचिव, आईजीएनसीए, श्री पी.जे. कुरियन, उप–सभापति, राज्य सभा,
श्री अदूर गोपालकृष्णन और श्री विपिन विजय, फिल्म निर्देशक।

बाल जगत

'बाल जगत' कार्यक्रम का लक्ष्य बच्चों को कठपुतली शो जैसी विभिन्न प्रकार की गतिविधियों के माध्यम से पारंपरिक कला और सांस्कृतिक विरासत से अवगत कराने का है। स्कूली बच्चों और स्नातक विद्यार्थियों के लिए कला कार्यशालाओं, संगीत कार्यशालाओं, फिल्म समारोहों, सांस्कृतिक प्रदर्शनों और कहानी सत्रों जैसे कार्यक्रमों का आयोजन संस्था में या स्कूलों अथवा कॉलेजों में किया जाता है। कलादर्शन प्रभाग इं.गां.रा.क.केन्द्र के भिन्न–भिन्न कार्यक्रमों के लिए स्कूलों और कॉलेजों से छात्रों को आमंत्रित करता है और मेजबान की भूमिका निभाता है। वर्ष के दौरान निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किए गए:

- इं.गां.रा.क.केन्द्र ने लगातार चौथे वर्ष 'कथाकार– इंटरनेशनल स्टोरीटेलर्स फेस्टीवल' की मेजबानी की। यह आयोजन 11 से 13 नवम्बर, 2016 तक एक गैर सरकारी संगठन 'निवेश' के सहयोग से किया गया। इस वर्ष के कथा–वाचक थे– 'तोलपावकोथु संगम', केरल; दानिश हुसैन, मुंबई; जयश्री सेठी, नई दिल्ली; सारा रूंडल, यू.के.; स्पाइस आर्थर, जापान; गाइल्स एबट, यू.के.; और कैटी कॉकवेल, यू.के.। निजी और सरकारी स्कूलों के हजारों छात्रों ने इस समारोह में भाग लिया।
- 'बुकरू चिल्ड्रन्स लिटरेचर' उत्सव का आयोजन 'बुकरू' ट्रस्ट के सहयोग से 26 से 27 नवम्बर, 2016 तक किया गया। 10 देशों से पधारे 51 लेखकों, चित्रकारों, कहानीकारों ने सप्ताहांत पर बच्चों के लिए 102 सत्र संचालित किए।
- आबासाहेब गरवारे कॉलेज, पुणे विश्वविद्यालय के छात्रों और कार्मिकों ने 28 फरवरी, 2017 को इं.गां.रा.क.केन्द्र का शैक्षिक भ्रमण किया। इस भ्रमण में उन्होंने 'ए स्टोरी कॉल्ड सिनेमाः बी डी गर्ग, आर्काइव्स' और 'फोटोग्राफ्स ऑफ राजा दीन दयाल' को देखा और समझा। इं.गां.रा.क.केन्द्र द्वारा बनाई गई डाक्यूमेंट्री 'रिकलेक्शन ऑफ सत्याग्रही' की विशेष स्क्रीनिंग विद्यार्थियों के लिए की गई।

'कथाकारः इंटरनेशनल स्टोरीटैलर्स फेस्टीवल' पर आईजीएनसीए में भिन्न–भिन्न स्कूलों से आए प्रतिभागी।

- दिल्ली विश्वविद्यालय के संगीत और कला संकाय के विद्यार्थियों एवं संकाय सदस्यों के शैक्षिक भ्रमण की मेजबानी 10 मार्च, 2017 को की गई। इस अवसर पर इं.गां.रा.क.केन्द्र में उनके लिए संगीत पर तैयार अपने वृत्तचित्रों की स्क्रीनिंग भी की।

- 'आंचल स्पेशल स्कूल' के विद्यार्थियों को 14 मार्च को इं.गां.रा.क.केन्द्र में आमंत्रित किया गया। यह विद्यालय बौद्धिक दिव्यांग बच्चों के कल्याण के लिए स्थापित किया गया था। इं.गां.रा.क.केन्द्र ने सुश्री जयश्री सेठी के कहानी सत्र की प्रस्तुति आयोजित की। सुश्री सेठी 'स्टोरी घर' नामक एनजीओ की संस्थापक सदस्या हैं। 'स्पेशल स्कूल' के विद्यार्थियों के लिए 'फोक गेम्स ऑफ तुलुनाडु' नामक फिल्म की स्क्रीनिंग की गई। इस फिल्म का निर्देशन श्री मिलिंद गौर ने किया है।

- गोस्नर कॉलेज, रॉंची के 'मास कम्युनिकेशन और वीडियो प्रोडक्शन' विभाग के विद्यार्थियों ने 29 मार्च, 2017 को इं.गां.रा.क.केन्द्र का शैक्षिक भ्रमण किया।

आंचल स्पेशल स्कूल से आए विद्यार्थियों के लिए स्टोरीटैलिंग प्रस्तुति सुश्री जयश्री सेठी द्वारा।

अन्य मामले

सोशल मीडिया

यह प्रभाग इं.गां.रा.क.केन्द्र के आयोजनों के प्रचार प्रसार का काम करता है और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर सक्रिय रूप से इनके बारे में अद्यतन सूचना अपलोड करता रहता है। यह प्रभाग समय–समय पर इं.गां.रा.क.केन्द्र में होने वाले सभी कार्यक्रमों और आयोजनों के लिए सूचना का स्रोत ही नहीं है बल्कि पब्लिक रिलेशन एजेंसियों और सोशल मीडिया के माध्यम से इन आयोजनों का प्रचार भी करता है। संस्था में आयोजित किए जाने वाले अलग–अलग कार्यक्रमों के लिए 'कलादर्शन' नियमित रूप से अपने फेसबुक पेज पर सूचनाएँ डालता है और उन्हें अद्यतन भी करता है। इं.गां.रा.क.केन्द्र के फेसबुक पेज के प्रशंसक बहुत बड़ी संख्या में हैं और इसके फेसबुक पेज को पसंद करने वालों की संख्या मार्च, 2017 के आंकड़े के अनुसार 14,114 तक पहुंच चुकी है। इस पेज का लिंक है–http://www.facebook.com/IGNCA ।

इं.गां.रा.क.केन्द्र ने दिसंबर, 2015 में अपने ट्विटर हैंडल को फिर से सक्रिय किया, जिसमें कार्यक्रमों के बारे में सूचना प्रतिदिन अपडेट की जाती है। अब तक 942 ट्वीटस भेजे गए हैं। इं.गां.रा.क.केन्द्र के ट्विटर फॉलोअर्स की संख्या 627 है। ट्विटर हैंडल/igncakd पर उपलब्ध है।

इं.गां.रा.क.केन्द्र के अपने डेटाबेस में 40,000 ईमेल मौजूद हैं। संस्था पूरे महीने के कार्यक्रम की समय–सारणी तैयार कर 'ई–न्यूज़लैटर' के माध्यम से साझा करती है। यह न्यूज़लैटर एक महीने में दो बार ईमेल के माध्यम से अपनी संपर्क सूची तक पहुँचता है। आगंतुक और मित्रगण अपने ईमेल आईडी साझा करके इं.गां.रा.क.केन्द्र के न्यूजलेटर की सदस्यता लेते हैं। यह प्रभाग इं.गां.रा.क.केन्द्र के 'यूट्यूब' चैनल की पहुंच का विस्तार करने के लिए निरन्तर प्रयासरत है। यूट्यूब चैनल पर इं.गां.रा.क.केन्द्र की गतिविधियों के छोटे–छोटे वीडियो और प्रोमोज को सक्रिय रूप से पोस्ट करना इसने शुरू कर दिया है। मीडिया सेंटर द्वारा एमपी 4 फॉरमेट में वीडियो इस प्रभाग को भेजे जाते हैं। मीडिया सेंटर से प्राप्त होते ही

ये वीडियो तुरन्त अपलोड कर दिए जाते हैं। यह विभाग जनवरी, 2017 से नियमित रूप से 'संस्कृति एप' और 'गूगल कैलेंडर' पर अपने कार्यक्रमों के बारे में जानकारी और विवरण अपलोड कर रहा है।

गैर–सहयोगी कार्यक्रम

गैर–सहयोगी आधार पर कई कार्यक्रम इं.गां.रा.क.केन्द्र में किए जाते हैं। गैर सहयोगी आधार का अर्थ है कि इं.गां.रा.क. केन्द्र इन कार्यक्रमों के लिए केवल स्थल उपलब्ध कराता है। गैर–सहयोगी कार्यक्रमों की मेज़बानी के लिए यह प्रभाग भिन्न–भिन्न संस्थानों के साथ समन्वय करता है। इस वर्ष निम्नलिखित कार्यक्रम आयोजित किए गए–

- 24 अप्रैल, 2016 को 'रंगोली बिहु फेस्टिवल, 2016';
- 3 सितम्बर, 2016 को देशराज फाउंडेशन ट्रस्ट, कानपुर द्वारा 'स्वतंत्रता आंदोलनकालीन हिंदी पत्रकारिता एवं राधामोहन गोकुलजी का योगदान' विषय पर एक सम्मेलन;
- दिल्ली स्थित एक सामाजिक संगठन 'मिथिलांगन' द्वारा 'मणिपद्म जयंती समारोह' 11 सितम्बर, 2016 को। यह कार्यक्रम मिथिला क्षेत्र के प्रसिद्ध कवि, लेखक और सामाजिक कार्यकर्ता स्वर्गीय डॉ. ब्रज किशोर वर्मा जिन्हें 'मणिपद्म' के नाम से भी जाना जाता है, के सम्मान में आयोजित किया गया।
- 'भारत सोक्का गाकई' द्वारा 2 से 5 नवंबर, 2016 तक रेस्टोरिंग अवर ह्यूमेनिटी' विषय पर एक प्रदर्शनी;
- नई दिल्ली स्थित कोरिया गणराज्य के सांस्कृतिक केन्द्र 'ओनयांग फोक म्यूजियम' द्वारा 7 से 27 नवंबर, 2016 को इं.गां.रा.क.केन्द्र में 'सारंगबांगः दि रुम फॉर लेज़रली लाइफ' प्रदर्शनी;
- 'ऑल दि वर्ल्ड इज़ हिज़ स्टेजः शेक्सपियर टुडे' विषय पर 'एशियन शेक्सपियर एसोएिशन' द्वारा 2 से 3 दिसम्बर 2016 तक;
- 2 से 18 दिसंबर, 2016 तक गुजरात के कच्छ इलाके में स्थित एनजीओ 'सहजीवन–एफईएस' द्वारा एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। शिल्प बाजार और खाद्य उत्सव भी इस कार्यक्रम का हिस्सा थे।
- 'लिविंग लाइटली–जर्नीज़ विद पास्टोरलिस्ट्स' नामक प्रदर्शनी में भारत के चरवाहों, विशेष रूप से गुजरात के कच्छ क्षेत्र में रहने वाले चरवाहों के जीवन और संस्कृति का प्रदर्शन किया गया।
- इं.गां.रा.क.केन्द्र में 14 दिसंबर, 2016 को दिव्यांगों के समावेशन और इक्विटी को बढ़ावा देने के लिए 'वियान' नामक एक उत्सव श्री शारदा पीठम, श्रृंगेरी द्वारा आयोजित किया गया।
- 'नारीनामा–जेंडर जस्टिस रिले' के नाम से पूरे दिन का एक कार्यक्रम दिल्ली स्थित एक गैर सरकारी संगठन 'शिक्षा' द्वारा 16 दिसंबर को आयोजित किया गया। यह आयोजन 'निर्भया घटना' के दिन किया गया और इसमें पैनल चर्चाएँ, फोटो प्रदर्शनी के साथ–साथ संगीत, थियेटर और नृत्य प्रस्तुतियाँ शामिल थीं।
- 17 से 30 दिसंबर, 2016 तक इं.गां.रा.क.केन्द्र में 'दि जॉय ऑफ लर्निंग' प्रदर्शनी लगाई गई। इस प्रदर्शनी में लौरिस मलागुजी के दर्शन पर आधारित 'अर्ली चाइल्डहुड एज्यूकेशन' संबंधी विचार प्रस्तुत किए गए।
- 'जश्न–ए–रेख्ता– सेलेब्रेटिंग उर्दू' विषय पर एक उत्सव 17 से 19 फरवरी, 2017 तक रेख्ता फाउंडेशन द्वारा इं. गां.रा.क.केन्द्र में आयोजित किया गया। इस उत्सव में अवधी सांस्कृतिक परंपराओं के विभिन्न पहलू प्रदर्शित किए गए।
- भारतीय धरोहर एंड कांउसिल फॉर प्रमोशन, रिसर्च एण्ड ट्रेड इन ग्लोबल ट्रेडीशनल फूड्स द्वारा 24–26 फरवरी, 2017 को इं.गां.रा.क.केन्द्र में 'ग्लोबल ट्रेडीशनल फूड समिट' विषय पर एक आयोजन किया गया।
- गैलरी एस्पेस एंड सेरेन्डीपिटी आर्ट्स ट्रस्ट, नई दिल्ली द्वारा 3 से 31 मार्च, 2017 तक 'ए टेल ऑफ टू सिटीज–इंडिया एंड श्रीलंका' नामक प्रदर्शनी आयोजित की गई।
- दिल्ली मराठी प्रतिष्ठान ने 25 मार्च, 2017 को इं.गां.रा.क.केन्द्र परिसर में 'गुडी पड़वा (हिंदू नव वर्ष) का आयोजन किया।

सूत्रधार
(प्रशासन और वित्त प्रभाग)

इं.गां.रा.क.केन्द्र का सूत्रधार प्रभाग इस संस्था के प्रशासनिक पक्ष का दायित्व निभाता है और अन्य सभी प्रभागों एवं एककों को प्रबंधकीय एवं सांगठनिक सहायता एवं सेवाएँ तथा आपूर्ति उपलब्ध कराता है। केन्द्र के विभिन्न कार्यक्रमों और कार्य–कलापों के नीति–नियोजन एवं समन्वय के लिए नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करना जारी रखते हुए इस प्रभाग ने संस्था के अनुरक्षण और लेखा प्रबंधन दायित्व भी निभाए।

न्यास संबंधी मामले

इं.गां.रा.क.केन्द्र को भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय का 13 अप्रैल, 2016 का आदेश संख्या 16–3/2015–अकादमी प्राप्त हो गया है जिसके तहत भारत सरकार ने 13 अप्रैल, 2016 के आदेश संख्या 16–3/2015–अकादमी के तहत इं.गां.रा.क.केन्द्र न्यास का पुनर्गठन करते हुए श्री राम बहादुर राय को अध्यक्ष नियुक्त किया है और समिति में 20 सदस्य रखे हैं। इं.गां.रा.क.केन्द्र के पुनर्गठित न्यास की बैठक 30 मई, 2016 को हुई और इसमें कार्यकारिणी समिति का पुनर्गठन किया गया। कार्यकारिणी समिति के नामित किए गए सदस्यों ने 'उद्घोषणा विलेख' के खंड 16.3 के अनुसार इं.गां.रा.क.केन्द्र के अध्यक्ष श्री राम बहादुर राय को सर्वसम्मति से कार्यकारिणी समिति का सभापति चुन लिया। वित्त वर्ष के दौरान न्यासी बोर्ड की दो बैठकें क्रमशः 30 मई, 2016 और 16 जनवरी, 2017 को तथा कार्यकारिणी समिति की तीन बैठकें क्रमशः 10 जून, 2016, 16 अगस्त, 2016 और 02 दिसम्बर, 2016 को आयोजित की गईं। विभिन्न प्रभागों/परियोजनाओं के लिए कार्यक्रम सलाहकार समितियों और तीन क्षेत्रीय केन्द्रों की अकादमिक सलाहकार समितियों का पुनर्गठन कार्यकारिणी समिति द्वारा किया गया।

प्रशासन के बारे में रिपोर्ट

प्रशासनिक पदः प्रशासन प्रभाग में तीन वरिष्ठ पदों को प्रतिनियुक्ति से भर लिया गया है। तदनुसार, सुश्री विनीता श्रीवास्तव, संयुक्त सचिव; ले. कर्नल अनुराग चतुर्वेदी, निदेशक (प्रशासन) और श्री यशराज सिंह पाल, अवर सचिव (प्रशासन) ने समालोच्य अवधि में इं.गां.रा.क.केन्द्र में कार्यग्रहण कर लिया है।

अकादमिक पदः अनुसंधान अधिकारी के तीन रिक्त पदों और प्रोफेसर के छह पदों को भरने के लिए कार्रवाई, समालोच्य अवधि में शुरू कर दी गई है।

2016–17 के दौरान इं.गां.रा.क.केन्द्र में कुल नियमित कार्मिकों की संख्या 212 थी। तीन कार्मिकों नामतः श्रीमती सरोजिनी, डेटा एन्ट्री ऑपरेटर, श्री जय भगवान, फोटो कॉपी ऑपरेटर, श्रीमती प्रणति घोषाल, सहायक प्रोफेसर, डॉ. एन.डी. शर्मा, एसोसिएट प्रोफेसर, श्रीमती उर्मिला उत्पल, अनुभाग अधिकारी इं.गां.रा.क.केन्द्र की सेवाओं से आलोच्य अवधि के दौरान सेवानिवृत्त हो गए। वरिष्ठ अधिकारियों की सूची संलग्न है (अनुलग्नक–7)।

वर्ष के दौरान एम.टी.एस. के रूप में कार्यरत श्री प्रहलाद का निधन सेवा काल में ही हो गया। दिवंगत आत्मा की याद में एक शोक–सभा का आयोजन किया गया और दो मिनट का मौन धारण किया गया।

सेवा एवं आपूर्तिः इं.गां.रा.क.केन्द्र के अकादमिक प्रभागों को लॉजिस्टिक एवं संबद्ध सहायता प्रदान करने का कार्य सेवा एवं आपूर्ति एकक ने जारी रखा। इस एकक ने वर्ष के दौरान अनेक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों, सम्मेलनों,

कार्यशालाओं और प्रदर्शनियों के लिए व्यवस्थाएं जुटाने में सहायता की। केन्द्र के सुचारु और दक्ष कार्यकरण के लिए संबंधित मंत्रालयों/विभागों और अन्य संगठनों के साथ समन्वय भी इस एकक ने बनाए रखा।

वार्षिक कार्य योजना

संबंधित प्रभागों द्वारा वित्त वर्ष 2016–17 के लिए तैयार की गई वार्षिक कार्य योजना पर चर्चा की गई और संबंधित प्रभागों की कार्यक्रम सलाहकार समितियों द्वारा इसे अनुमोदित किया गया। बाद में 10 जून, 2016 को आयोजित बैठक में कार्यकारिणी समिति ने इस 'कार्य योजना' का अनुमोदन कर दिया, जिसे बाद में न्यास ने भी अनुसमर्थन कर दिया।

बजट और वार्षिक कार्य योजना 2016–17

वार्षिक बजट और वार्षिक लेखा 2016–17: कार्यकारिणी समिति ने 16 मार्च, 2016 को आयोजित अपनी 69वीं बैठक में वित्त वर्ष 2016–17 के लिए वार्षिक बजट प्राक्कलन अनुमोदन कर दिए थे। वर्ष 2016–17 का आय और व्यय लेखा इस प्रकार है–

निधि का प्रकार	आय (करोड़ रुपए में)	व्यय (करोड़ रुपए में)
योजनेतर अनुदान	8.05	8.58
परियोजना आधारित अनुदान पिछला बकाया 2016–17 के लिए आबंटन	 4.03 33.15	 37.18

वित्त एवं लेखा

इस वर्ष के दौरान कार्यकारिणी समिति ने इं.गां.रा.क.केन्द्र की वित्त सलाहकार समिति का पुनर्गठन किया। कार्यकारिणी समिति को प्रस्तुत किए जाने से पहले बजट और वार्षिक लेखे का अनुमोदन वित्त सलाहकार समिति ने अपनी बैठक में चर्चा के उपरांत किया। बाद में, 31 मार्च, 2017 को समाप्त होने वाले वित्त वर्ष के लिए इं.गां.रा.क.केन्द्र के वार्षिक लेखों का अनुमोदन कार्यकारिणी समिति ने किया और इसके बाद ये लेखे नियंत्रक व महालेखापरीक्षक को भेजे गए। अंत में, इं.गां.रा.क.केन्द्र के 'उद्घोषणा विलेख' के अनुच्छेद 19.1 के अनुसरण में न्यास द्वारा वार्षिक लेखा 2016–17 का अनुमोदन और अंगीकरण किया गया।

न्यास की आय को आयकर अधिनियम, 1961 की धारा 10 (23) ग (iv) के तहत कराधान से छूट प्राप्त है।

आवासन

सरकार द्वारा दिए गए सुझाव के अनुसार ग्रिड संबद्ध 150 केडब्ल्यूपी रूफ टॉप सोलर पीवी पावर सिस्टम के डिजाइन, विनिर्माण, आपूर्ति, संस्थापन, परीक्षण और प्रारंभन के लिए मैसर्स जैकसन सोलर प्राइवेट लिमिटेड के साथ एक सहमति पत्र पर हस्ताक्षर 26 दिसम्बर, 2016 को किए गए। इस सहमति पत्र में सोलर पावर सिस्टम की वारंटी, प्रचालन और अनुरक्षण भी शामिल है। तदनुसार, सोलर पैनल लगा दिए गए हैं। अपेक्षा है कि बिजली उत्पादन 05 अगस्त, 2017 से शुरू हो जाएगा।

नई पहलें

इं.गां.रा.क.केन्द्र में एलईडी आधारित प्रकाश व्यवस्था की अनिवार्य संस्थापना का कार्य मैसर्स एनर्जी एफिशिएंसी सर्विसेज लिमिटेड की सहायता से पूरा किया जाएगा। यह अपेक्षा है कि ऐसा होने से बिजली की हमारी खपत भी घटेगी।

इं.गां.रा.क.केन्द्र की अवधारणा जिन उद्देश्यों को लेकर की गई थी, उन उद्देश्यों को पूरा करने की दृष्टि से समान क्षेत्रों में कार्यरत 24 (चौबीस) संस्थाओं/विश्वविद्यालयों के साथ 'सहमति पत्र' पर हस्ताक्षर समालोच्य अवधि में, संस्था के अनवरत प्रयासों से किए गए। पारस्परिक रुचि की अनेक सहयोगी परियोजनाएं/कार्य–कलाप शुरू किए गए हैं।

इं.गां.रा.क.केन्द्र में 1 से 15 सितम्बर, 2016 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। इस अवसर पर निबन्ध लेखन प्रतियोगिता, कार्यशालाएं, कविता सत्र और अन्य अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए। 14 सितम्बर को इं.गां.रा.क.केन्द्र में संस्कार भारती द्वारा तैयार नाटक 'रक्त अभिषेक' प्रस्तुत किया गया। यह नाटक रंगमंच के क्षेत्र की नामी शख्सियत श्री दया प्रकाश सिन्हा ने लिखा और निर्देशित किया है।

क्षेत्रीय केन्द्र

संस्था ने वाराणसी, गुवाहाटी और बंगलुरू में विद्यमान 3 (तीन) क्षेत्रीय केन्द्रों के अलावा (1) रांची, (2) वडोदरा, (3) गोवा, (4) त्रिशूर, (5) कश्मीर और (6) पुदुच्चेरी में इं.गां.रा.क.केन्द्र के 6 (छह) नए क्षेत्रीय केन्द्र खोलने का महत्वपूर्ण निर्णय लिया। इं.गां.रा.क.केन्द्र के क्षेत्रीय कार्यालयों को समान मानक प्रचालन पद्धति (एसओपी)जारी कर दी गई है।

क्षेत्रीय केन्द्र, वाराणसीः वर्ष 2017–18 के दौरान, पूर्वी क्षेत्रीय केन्द्र ने वर्तमान में उपलब्ध 77,153 कार्डों के अतिरिक्त विभिन्न ग्रंथों से 3901 कार्डों का चयन कर उन्हें तैयार किया। 5,770 संदर्भ कार्डों का चयन करके उन्हें दिल्ली में सांस्कृतिक सूचना–विज्ञान प्रयोगशाला में डिजिटलीकरण के लिए और फिर सामग्री को इं.गां.रा.क. केन्द्र की वेबसाइट पर अपलोड करने के लिए भेज दिया।

प्रकाशन : (1) 'अर्थ और सौदर्य'; तथा (2) 'भारतीय और पश्चिमी भाषा दर्शन' नामक दो प्रकाशन तैयार हैं और इनके प्रकाशन की प्रक्रिया चल रही है। निम्नलिखित ग्रन्थ प्रकाशन के विभिन्न चरणों में हैं:

- 'कलातत्व कोश खंड VIII'– खंड के संपादक प्रो. एम.एन.पी. तिवारी ने दो लेखों का संपादन पूरा कर लिया है। वे संस्करण के आगे के लेखन में जुटे हैं।
- 'नाट्यशास्त्र' के दो खंडः खंडों की सामग्री के मिलान का काम पूरा हो चुका है। खंड–II का संपादन कार्य प्रगति पर है। खंड–III का टाइपसेटिंग कार्य शुरू किया जा चुका है।
- 'वाक्य पदीय'– संगोष्ठी कार्यवाही का संपादन कार्य प्रोफेसर मिथिलेश चतुर्वेदी द्वारा पूरा कर लिया गया है और खंड–II की टाइपसेटिंग शुरू की जा चुकी है।
- 'उत्तर–पूर्व और मध्य भारत के लोक नृत्य और नाटकीय रूपों पर मोनोग्राफ' – प्रो. संजय कुमार, अंग्रेजी विभाग, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी द्वारा अंतिम संपादन चल रहा है।

सार्वजनिक व्याख्यानः इस वर्ष ईआरसी द्वारा काशी व्याख्यानमाला पेश की गई। श्रृंखला के तहत निम्नलिखित व्याख्यान आयोजित किए गए–

- **'काशी और उसके ब्रह्माण्डः** भारत की सांस्कृतिक राजधानी की भौगोलिक पवित्रता' पर 16 सितम्बर, 2106 को गोपी राधा बालिका इंटर कॉलेज, रवीन्द्र पुरी, वाराणसी में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, भूगोल विभाग, वाराणसी के प्रसिद्ध विद्वान प्रोफेसर राणा पी.बी. सिंह द्वारा व्याख्यान दिया गया। प्रोफेसर राणा सांस्कृतिक भूगोल के नामी विद्वान हैं।

- 'भर्तृहरि द्वारा दर्शनशास्त्र के इतिहास को दोबारा लिखना आवश्यक क्यों किया गया' विषय पर प्रोफेसर एमेरिटस, ब्रिटिश कोलंबिया विश्वविद्यालय, एशियन स्टडीज़ विभाग, वैंकूवर, कनाडा के प्रोफेसर अशोक एन. अकलुजकर का 30 सितम्बर, 2016 को अभिनव भवन, कला प्रभाग, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में व्याख्यान भारत अध्ययन केन्द्र के सहयोग से आयोजित किया गया।

'काशी व्याख्यानमाला' में (बाएं से दाएं): प्रोफेसर मिथिलेश चतुर्वेदी, प्रोफेसर जयशंकर लाल त्रिपाठी और प्रोफेसर रामयत्न शुक्ल।

- 'सांस्कृतिक राजधानी काशी की संगीत परम्परा' पर 25 अक्टूबर, 2016 को हरिश्चंद्र बालिका इंटर कॉलेज, मैदागिन में व्याख्यान आयोजित किया गया। पूर्व कुलपति, मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय, ग्वालियर, मध्य प्रदेश एवं प्रोफेसर चितरंजन ज्योतिषी ने इस विषय पर व्याख्यान दिया।
- प्रोफेसर जितेन्द्र नाथ मिश्र का 'रामनगर की रामलीला' पर 22 नवंम्बर, 2016 को प्रभु नारायण राजकीय इंटर कॉलेज, वाराणसी में व्याख्यान आयोजित किया गया। वे दयानंद स्नातकोत्तर महाविद्यालय, वाराणसी में हिन्दी विभाग के पूर्व प्रमुख हैं।
- प्रो. रेवा प्रसाद द्विवेदी का 'आचार्य अभिनवगुप्त और साहित्य शास्त्र' पर 17 फरवरी, 2017 को भारत अध्ययन केन्द्र, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी में व्याख्यान आयोजित किया गया। वह विश्वविद्यालय के पूर्व डीन, संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय हैं।
- 'आचार्य अभिनव गुप्त और त्रिकदर्शन' पर प्रो. कमलेश दत्त त्रिपाठी द्वारा 18 परवरी, 2017 को भारत अध्ययन केन्द्र, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी में व्याख्यान दिया गया।
- 'आचार्य भर्तृहरि का दर्शन और उस पर हुए आधुनिक कार्य' पर 21 फरवरी, 2017 को भारत अध्ययन केन्द्र, बीएचयू में व्याख्यान आयोजित किया गया। दिल्ली विश्वविद्यालय में संस्कृत विभाग के पूर्व प्रमुख प्रोफेसर मिथिलेश चतुर्वेदी ने यह व्याख्यान दिया।
- 21 जून, 2016 को योग के दूसरे अंतर्राष्ट्रीय दिवस के अवसर पर ईआरसी ने 'योग अभ्यास की उपयोगिता' पर प्रो. के.के. शर्मा के व्याख्यान का आयोजन किया। श्री शर्मा वैदिक दर्शन विभाग, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी के पूर्व प्रमुख हैं। इसके बाद बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के योग केन्द्र के डॉ. योगेश भट्ट ने एक प्रदर्शन सत्र प्रस्तुत किया।

'भरतमुनि और उनका नाट्यशास्त्र' पर विशेष व्याख्यानः 'कलाकोश स्थापना दिवस समारोह के दौरान प्रोफेसर कौशलेन्द्र पांडेय (बाएं)। इस अवसर पर मौजूद थेः प्रोफेसर विश्वनाथ भट्टाचार्य (बीच में) और प्रोफेसर कमलेश दत्त त्रिपाठी (दाएं)।

- 20 जुलाई, 2016 को, पूर्व प्रमुख, संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी के प्रोफेसर कौशलेंद्र पांडे ने 'भरत मुनि और उनके नाट्यशास्त्र' पर एक व्याख्यान 'गुरुपूर्णिमा' उत्सव के हिस्से के तौर पर दिया।

क्षेत्रीय केन्द्र, बंगलुरूः इं.गां.रा.क.केन्द्र ने बंगलुरू स्थित अपने क्षेत्रीय केन्द्र के नवोन्मेष के लिए विभिन्न कदम उठाए हैं। इं.गां.रा.क.केन्द्र की कार्यकारिणी समिति की द्वारा नियुक्त की गई दो–सदस्यीय समिति की सिफारिश पर क्षेत्रीय निदेशक डॉ. दीप्ति नवरत्न का कार्यकाल बढ़ा दिया गया। अकादमिक सलाहकार समिति का पुनर्गठन करके इसमें प्रतिष्ठित विद्वानों को शामिल किया गया है। भारत रत्न डॉ. एम.एस सुब्बुलक्ष्मी के नाम पर कॉन्सर्ट हॉल और अभिलेखागार स्थापित करने के प्रस्ताव पर विचार किया है। मास्टर प्लान और अंतिम परियोजना रिपोर्ट मैसर्स इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट कॉरपोरेशन कर्नाटक लिमिटेड (आईडीसीकेएल) द्वारा तैयार की गई है और संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली को प्रस्तुत की जा चुकी है।

पुस्तकालय में उपयोगकर्ताओं की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए प्रासंगिक पठनीय सामग्री को जुटाने का कार्य जारी है। वर्ष के दौरान, 2800 से अधिक आगंतुक पुस्तकालय में आये, जो पिछले वर्षों की तुलना में काफी अधिक है। संदर्भ पुस्तकालय में 374 पुस्तकें अवाप्त की गईं, भेंट के रूप में 15 पुस्तकें प्राप्त की गईं और अब इसमें कुल मिलाकर 12,093 पुस्तकें हैं। पुस्तकालय को 'कोश' सॉफ्टवेयर की सहायता से पूर्णतः स्वचालित बनाया गया है। ऑनलाइन केटालॉग (ओपीएसी) उपलब्ध कराया गया है।

पुस्तकालय संग्रह की 80 प्रतिशत पुस्तकें बारकोडेड हैं। आलोच्य वर्ष के दौरान 2500 पुस्तकों को वर्गीकृत, सूचीबद्ध करके बार कोड प्रदान किया गया जिनमें अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं की पुस्तकें भी शामिल थीं। लगभग 32 सदस्यों ने इस वर्ष अपनी सदस्यता पंजीकृत कराई।

क्षेत्रीय केन्द्र के पुस्तकालय में अच्छी पांडुलिपियों का समृद्ध भंडार है। तंजावुर, त्रिपुनीथुरा, पुणे, जयपुर, अहमदाबाद, रामपुर, चेन्नई, वाराणसी, इम्फाल, मैसूर, हुबली, वृन्दावन, मुंबई, केलाडी, नागपुर, गुवाहाटी, हरिद्वार, कोलकाता और

तिरुअनंतपुरम सहित 52 केन्द्रों से, 13,500 डुप्लिकेट माइक्रोफिल्म रोल यहां उपलब्ध हैं। इस अभिलेखीय संग्रह में शामिल विषयों में स्वामी विवेकानंद के व्याख्यान और कथन, 'धर्म और दर्शन', 'अलंकार,' 'साहित्य', 'उपनिषद्', 'काव्य', 'कोश', 'ज्योतिष', 'गणित', 'धर्मशास्त्र', 'पुराणेतिहास–रामायण', 'पुराणेतिहास' 'महाभारत' 'गीत गोविंद', 'ज्योतिष', 'खगोल विज्ञान', 'तंत्र मंत्र', 'संगीत', 'नृत्य', 'निरुक्त; 'कल्पसूत्र', 'न्याय,' 'पुराण', 'कथा', 'गीत', 'मीमांसा', 'नाट्य शास्त्र', 'कर्णकुतुहल', 'आयुर्वेद', 'उपनिषद्', 'व्याकरण 'कोश', 'धर्मशास्त्र', 'वेदांत', 'वेद', 'जैन साहित्य और दर्शन' शामिल हैं। लगभग 12,000 माइक्रोफिल्म रोल्स की डिजिटल प्रतियां दिल्ली मुख्यालय से प्राप्त हुईं।

परियोजनाएं

- डॉ. चूडामणि नंदगोपाल के नेतृत्व में 'रिचुअल एनेक्टमेंट इन टैम्पल ट्रेडीशंस ऑफ मेलुकोटे' परियोजना प्रकाशन के लिए तैयार है। परियोजना के परिणाम के रूप में एक मोनोग्राफ प्रकाशित किया जा चुका है। एक डीवीडी और फोटो प्रदर्शनी जिसमें मेलुकोट में पवित्र अनुष्ठान शामिल हैं, भी जल्दी ही प्रकाशित किया जाएगा।
- डॉ. प्रमिला लोचन की अध्यक्षता में 'कांचीपुरम की भित्ति–चित्र परियोजना' को पूरा कर लिया गया है। परियोजना के परिणाम के रूप में एक मोनोग्राफ प्राप्त हो गया है और संपादन का काम चल रहा है।
- 'कला अनुभव' पर पाठ का भाषा संपादन पूरा हो गया है और इसमें विद्वानों की टिप्पणियों को शामिल कर लिया गया है।
- डॉ. एस. आर. लीला द्वारा संस्कृत नाटक 'स्वप्न वासवदत्तम्' की सृजनात्मक प्रस्तुति के काम का संपादन प्रगति पर है।
- हरिदास सुलदी परियोजना का माइक्रो फिल्म आधारित शोध प्रलेखन और पुनर्निर्माण का कार्य चल रहा है। डॉ. आरती राव ने परियोजना की समीक्षा पूरी कर ली है और परियोजना को 2017–18 में पूरा कर लिए जाने की संभावना है।
- गोमतेश्वर महामस्तकाभिषेक –अनुष्ठान और व्यवहार' का प्रलेखन पूरा कर लिया गया और 25 जनवरी, 2016 को भारतीय विद्या भवन में आयोजित एक भव्य समारोह में इसकी डीवीडी लोकार्पित की गई। सदस्य सचिव, इं.गां.रा.क. केन्द्र, के अलावा बंगलुरू के जैन समुदाय के प्रमुख विद्वान मौजूद थे।

'गोमतेश्वर महामस्तकाभिषेक अनुष्ठान एवं प्रथाएं' नामक डीवीडी का लोकार्पण।
(बाएं से दाएं): डॉ. दीप्ति नवरत्न, कार्यकारी निदेशक, क्षेत्रीय केन्द्र, बंगलुरू, डॉ. पद्मा सुब्रमण्यम, प्रतिष्ठित नृत्यांगना और आईजीएनसीए की न्यासी सदस्य, डॉ. सच्चिदानंद जोशी, सदस्य सचिव, आईजीएनसीए तथा जितेन्द्र कुमार जैन, अध्यक्ष, महामस्तकाभिषेक समिति, 2018।

संगोष्ठियाँ/सम्मेलन/कार्यशालाएँ

- क्षेत्रीय केन्द्र ने 23 अक्टूबर, 2016 को भारतीय विद्या भवन, बंगलुरू में 'कथा कीर्तन' पर संत भद्रगिरी अच्युतदास मेमोरियल नेशनल सेमिनार आयोजित किया। संगोष्ठी में छात्रों और विद्वानों ने भाग लिया।
- क्षेत्रीय केन्द्र में 9 दिसम्बर, 2016 को 'नई शिक्षा नीति' पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई ताकि केन्द्र सरकार की शिक्षा नीति पर प्रकाश डाला जा सके और इसमें बदलाव के सुझाव दिए जा सकें। पैनलिस्टों ने सभी स्तरों पर शिक्षा की प्रक्रिया में सांस्कृतिक मूल्यों के समावेशन सहित भारतीय शिक्षा प्रणाली को मजबूत करने के तरीकों का संकेत देने के लिए उपयोगी सुझाव दिए।
- भारत रत्न डॉ. एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी की जन्म शताब्दी के भाग स्वरूप 25 मार्च, 2017 को भारत रत्न डॉ. एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी के संगीत चित्रों पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। इस संगोष्ठी का उद्देश्य यह था कि एक श्रेष्ठ संगीतज्ञ, प्रस्तोता तथा दुनिया भर में कर्नाटक संगीत की प्रतिमूर्ति के रूप में सुब्बुलक्ष्मी के कुछ अनूठे पक्षों का अनुसंधान और अन्वेषण किया जा सके। सेमिनार में कई विशिष्ट विद्वानों ने भाग लिया।
- 17 अप्रैल, 2016 को 'कलानुभव–त्रैमासिक संगीत मूल्यांकन कार्यशाला' आयोजित की गई। इस कार्यक्रम में पंडित पुष्कर लेले द्वारा कुमार गंधर्व के 'निरगुण भजन' की कुछ अद्भुत बंदिशें प्रस्तुत की गईं। सत्र की शुरुआत सगुण और निर्गुण की अवधारणा के विस्तारण और कुमार गंधर्व के इस धारा से जुड़ने की प्रक्रिया से की गई।
- मैसूर की पारंपरिक चित्रकारी की कार्यशाला सह प्रदर्शनी का आयोजन 27 जून से 7 जुलाई, 2016 तक किया गया। यह आयोजन प्रसिद्ध मैसूर पारंपरिक शैली कलाकार श्री जे दण्डराज द्वारा किया गया। सहभागियों ने इस कार्यशाला में 'अभया लक्ष्मी', 'सरस्वती' 'राजराजेश्वरी' और 'पार्वती' के साथ 'सप्त मातृका' (सात देवी) 'ब्राह्मी', 'चामुंडा' 'वाराही' 'वैष्णवी' ''माहेश्वरी' 'कौमारी' और 'इंद्राणी' पर भी सुगमता से और सुरूचिपूर्ण ढंग से कार्य प्रस्तुत किए। इस महत्वपूर्ण समारोह का समापन कार्यक्रम अंतर्राष्ट्रीय प्रसिद्धि के समकालीन कलाकार श्री सुदेश महान की उपस्थिति में किया गया। इन्होंने कलाकारों को सम्मानित भी किया।
- 25 से 30 जुलाई, 2016 तक कन्नड़ और संस्कृति विभाग, कर्नाटक सरकार के साथ मिलकर 'शास्त्रीय नृत्य में पद्म, जावली और थाला' पर कार्यशाला आयोजित की गई। प्रसिद्ध संगीतकार विदुषी श्री अनुरू अनंतकृष्ण शर्मा, श्रीमती रेवती नरसिम्हन और श्रीमती पी के वसन्तलक्ष्मी ने कार्यशाला संचालित की।
- 21 से 25 सितम्बर, 2016 तक 'कथक में गति–लय–ताल–ठुमरी–ध्रुपद' पर पाँच दिवसीय कार्यशाला का आयोजन प्रसिद्ध कथक नर्तक और महागामी गुरूकुल औरंगाबाद महाराष्ट्र की निदेशक डॉ. (श्रीमती) पार्वती दत्ता के संचालन में किया गया। इसमें शहर भर के विभिन्न नृत्य विद्यालयों से आए प्रतिभागियों को नृत्य के कई अनछुए पहलुओं को विद्वत गुरुजनों से सीखने का अवसर प्राप्त हुआ। यह कार्यशाला पाँच दिन तक चली।
- बाल दिवस कार्यक्रम के हिस्से के रूप में 14 नवम्बर, 2016 को 'कथाकारः अंतर्राष्ट्रीय कथा वाचक महोत्सव' आयोजित किया गया। कार्यक्रम में भारत और विदेशों की कहानियों का मिश्रण था।
- केरल के भित्ति चित्रों पर अपनी तरह की पहली अधिग्रहण कार्यशाला 6 से 15 मार्च, 2017 को आयोजित की गई। केरल के विभिन्न हिस्सों से आए 10 भित्ति चित्रकारों ने रामायण की कहानी को अलंकृत कर प्रस्तुत किया और सरलता से दिखाया। 'रामा पट्टाभिषेकम', 'राक्षस राज रावण द्वारा सीता अपहरण' और 'हनुमान का अशोक वन में सीता से मिलन', 'रावण के बंधन में सीता पर राक्षसियों द्वारा अपनाए गये हथकंडे' बहुत स्पष्ट रूप से कलाकारों द्वारा चित्रित किए गए। इन रचनाओं को क्षेत्रीय केन्द्र परिसर में भी प्रदर्शित किया गया।

'रामायण' महाकाव्य पर आधारित भित्ति चित्रों का चित्रण करते हुए कलाकार।

व्याख्यानः अपने अनुसंधान/गतिविधियों/कार्यक्रमों के हिस्से के रूप में क्षेत्रीय केन्द्र, बंगलुरू ने निम्नलिखित व्याख्यानों का आयोजन कियाः

- संस्कृति स्मरण मासिक व्याख्यान–माला के भाग के रूप में 15 अप्रैल, 2016 को कन्नड़ स्टडीज बैंगलुरू विश्वविद्यालय की निदेशक डॉ. एम. सुमित्रा का 'कर्गा परंपरा और नारीवाद' पर व्याख्यान आयोजित किया गया। कन्नड़ अध्ययन केन्द्र, बैंगलोर विश्वविद्यालय के विद्यार्थी, संकाय सदस्य, विभिन्न कालेजों के स्नातक विद्यार्थी और वहनिकुल क्षत्रिय समुदाय के नेतागण व्याख्यान के दौरान उपस्थित थे।
- श्री के. सुचेन्द्र प्रसाद द्वारा 20 मई, 2016 को 'भारतीय सिनेमा में संस्कृति के प्रसार' पर एक व्याख्यान दिया गया। श्री सुचेन्द्र प्रसाद ने भारत में और दुनिया भर में पिछले कुछ दशकों में हुए तकनीकी नवाचार की झलक दिखलाने की कोशिश की।
- 'समकालीन रंगमच पाठ–नए आयामों की आवश्यकताः चुनौतियाँ' विषय पर 17 जून, 2016 को डॉ. के वाई नारायण ास्वामी द्वारा एक व्याख्यान दिया गया। वक्ता ने भिन्न–भिन्न प्रकार के थियेटर और उनमें हुए नए विकास पर चर्चा की।
- श्री ईश्वर दैटोटा ने 16 जुलाई, 2016 को 'मास मीडिया और संस्कृति' पर व्याख्यान दिया। इस व्याख्यान में प्रौद्योगिकीय प्रगति के माध्यम से मास–मीडिया जैसे इंटरनेट और मोबाइल प्रौद्योगिकी के बढ़ते प्रभाव पर चर्चा हुई और यह भी चर्चा की गई कि लोगों द्वारा मास–मीडिया का उपयोग किए जाने के तरीकों पर इनका क्या प्रभाव पड़ा है।
- 'कला, कलाकार और चेतना' पर 29 जुलाई, 2016 को बंगलुरू इंटरनेशनल सेंटर में डॉ. संगीता मेनन द्वारा व्याख्यान दिया गया। डॉ. संगीता मेनन ने यह बात विस्तार से समझाई कि किस प्रकार से विषय वस्तु, दिल–दिमाग, मैं–अन्य लोग जैसे बाइनरी उन अंतर्विषयी चर्चाओं के संदर्भ में चेतना बोध में केन्द्रीय भूमिका निभाते हैं जो स्वयं अनुभूति की प्रकृति के बारे में रोमांचिक प्रश्न खड़े करते हैं।
- श्री सुदेश द्वारा 19 अगस्त, 2016 को 'मेकिंग ऑफ एन आर्टिस्टः एक्सपीरिएंस, एनवायरनमेंट एंड एक्सप्रेशन' के बारे में अपने विचार साझा किए।
- 'एचएसवी की कविता में कृष्ण की छवि' पर प्रसिद्ध कवि डॉ. एच.एस. वेंकटेश मूर्ति (एचएसवी) का एक और व्याख्यान 21 सितम्बर, 2016 को आयोजित किया गया। डॉ. मूर्ति ने कुछ विशेष और अति सुंदर कविताएं पढ़ीं जिन्होंने श्रोताओं को मोहित कर दिया।
- 23 सितम्बर, 2106 को ''कल्चर एंड कॉग्निशन सीरीज'' के तहत डॉ. अनीशा शर्मा के व्याख्यान 'क्रिएटिव एक्सपीरिएंसेज़ ऑफ आर्टिस्ट्स एंड डिजाइनर्स' का आयोजन किया गया। डॉ. शर्मा ने इस विषय पर प्रकाश डाला और बताया कि दैनंदिन जिंदगी में कैसे हर व्यक्ति रचनात्मकता के दौर से गुजरता है तथा आंतरिक प्रतिभा को कैसे विकसित किया जाए।
- संस्कृति स्मरण मासिक व्याख्यान माला के हिस्से के रूप में 21 अक्टूबर, 2016 को श्री जी.एन. मोहन द्वारा 'मायदा मनदा भारा–ऐडियू टु श्री गोपाल वाजपेयी' पर एक व्याख्यान दिया गया। श्री गोपाल वाजपेयी का निधन 2016 में हुआ था। श्री वाजपेयी एक सामाजिक और सांस्कृतिक विचारक थे जिन्होंने एक पत्रकार के रूप में अपना कैरियर शुरू किया और कई अखबारों और पत्रिकाओं जैसे 'संयुक्त कर्नाटक' और 'तुषार' के साथ काम किया।
- डॉ. सी.एन. रामचन्द्रन ने 'अनुवाद, प्रवृत्तियाँ और युक्तियाँ (अनुवादक पूर्वग्रह)' पर एक व्याख्यान संस्कृति स्मरण मासिक व्याख्यान–माला के हिस्से के रूप में 18 नवम्बर, 2016 को दिया। इस व्याख्यान में अनुवादक कर्म पर ध्यान केन्द्रित किया गया था और इसमें इस क्षेत्र के प्रमुख विद्वान एवं विद्यार्थी शामिल हुए।

- डॉ. एम.जी. मंजुनाथ ने कुवेम्पु इंस्टीट्यूट, कन्नड़ विभाग, मानस गंगोत्री, मैसूर विश्वविद्यालय में 19 दिसम्बर, 2016 को 'शिलालेखों में लोककथाओं के संदर्भ' पर एक व्याख्यान दिया। डॉ. मंजुनाथ ने शिलालेखों के सभी पहलुओं पर विस्तारपूर्वक चर्चा की जिसमें पत्थर, तांबे की प्लेटें और मौखिक दस्तावेज शामिल थे।
- नाट्यशास्त्र के जाने माने विद्वान और इं.गां.रा.क.केन्द्र के ट्रस्टी सदस्य प्रो. भरत गुप्त ने 9 जनवरी, 2017 को ''समकालीन समय में धर्म शास्त्रों की प्रासंगिकता और उपयोगिता'' पर एक व्याख्यान दिया। यह उद्घाटन व्याख्यान संस्कृति वैभव श्रृंखला के हिस्से के रूप में तक्षशिला इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया स्टडीज के साथ मिलकर आयोजित किया गया। प्रोफेसर गुप्त धर्म शास्त्रों से जुड़ी बारीकियों और जटिलताओं की ओर दर्शकों को आकर्षित करने में सफल रहे।
- द्वि–मासिक व्याख्यान श्रृंखला के तहत 12 जनवरी, 2017 को बंगलुरू इंटरनेशनल सेंटर में डॉ. नरेन राव द्वारा 'योग एंड न्यूरोसाइंस ऑफ सैल्फ' पर विमर्श का आयोजन किया गया। यह विमर्श, योग की स्व–चिकित्सीय क्षमता और स्वयंसिद्ध संस्कार में योग द्वारा होने वाले न्यूरोबॉयलॉजिकल बदलावों पर विशिष्ट ध्यान आकर्षित करने पर केन्द्रित था।
- 21 जनवरी, 2017 को एसपीआईएल कॉलेज ऑफ जर्नलिज्म, रायचूर में 'सुद्दिमूल' के संपादक श्री बसवराज स्वामी के व्याख्यान 'दी कल्चरल फैब्रिक्स ऑफ बॉर्डरिंग डिस्ट्रिक्ट एण्ड मीडिया' के व्याख्यान का आयोजन किया गया। 'सुद्दिमूल' रायचूर में एक लोकप्रिय कन्नड़ दैनिक है। इस व्याख्यान के बाद जी जी पाद (स्थानीय लोकप्रिय लोक रूप) का प्रदर्शन कलाकार श्री श्रीप्रकाशय्या नंदी द्वारा किया गया।

चल प्रदर्शनी

- दिल्ली स्थित मुख्यालय में तैयार और प्रदर्शित 'अफ्रीकन्स इन इंडियाः ए रिडिस्कवरी' नामक प्रदर्शनी 03 अप्रैल, 2016 को श्री सिद्देश्वर आर्ट इंस्टीट्यूट, विजयपुरा में लगाई गई। प्रदर्शनी का विषय मुख्य रूप से भारत और दुनिया भर में अफ्रीकियों और उनके पूर्वजों के योगदान के बारे में बताना था।

भारत रत्न डॉ.एम.एस.सुब्बुलक्ष्मी सेंटेनरी समारोह का उद्घाटन। (बाएं से दाएं): श्री अनन्त कुमार, केन्द्रीय संसदीय मामले एवं रसायन तथा उर्वरक मंत्री, डॉ. सच्चिदानंद जोशी, सदस्य सचिव, आईजीएनसीए।

- 'अफ्रीकन्स इन इंडियाः ए रिडिस्कवरी' प्रदर्शनी का एक ऑडियो–विजुअल संस्करण तैयार किया गया और इसे कर्नाटक के येलपुरा जिले में 07 जून, 2016 को प्रदर्शित किया गया। अपनी तरह का यह पहला अभियान येलपुरा और हलयाला तालुकों के 'सिद्धी' गांवों में 8, 9, और 10 जून, 2016 को घुमाया गया ताकि भारत में अफ्रीकियों की जमीनी वास्तविकताओं को समझा जा सके। हैदराबाद के सालारजंग संग्रहालय में भी यह प्रदर्शनी 16 अक्टूबर, 2016 को प्रदर्शित की गई।

प्रस्तुतियां: अपने अनुसंधान/गतिविधियों/कार्यक्रमों के हिस्से के रूप में क्षेत्रीय केन्द्र, बंगलुरू ने निम्नलिखित प्रस्तुतियों का आयोजन किया:

- संगीत समाक्ष्मा श्रृंखला नाम के त्रैमासिक संगीत श्रवण सत्र का आयोजन 16 अप्रैल, 2016 को भारतीय विद्या भवन, बंगलुरू में किया गया। हिन्दुस्तानी संगीत के गायक पंडित पुष्कर लेले, श्री व्यास मूर्ति कट्टी, श्री गुरूमूर्ति वैद्य और आईजीएनसीए, एसआरसी के कार्यकारी निदेशक ने इसमें भाग लिया।
- संगीत समाक्ष्मा श्रृंखला के हिस्से के रूप में 21 जुलाई, 2016 को विदुशी श्रीमती गीता रामानंद का वीणा वादन 'वीणा निनाद' आयोजित किया गया।
- भारत रत्न डॉ. एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी शताब्दी समारोह का आयोजन 16 सितम्बर, 2016 को भारतीय विद्या भवन, बंगलुरू किया गया जिसके बाद इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, एसआरसी की कार्यकारी निदेशक डॉ. दीप्ति नवरत्न द्वारा दस भारतीय भाषाओं में एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी की रचनाओं की शानदार गायन प्रस्तुति की गई।
- 'लुप्त होती परंपराओं' के प्रलेखन कार्यक्रम के एक भाग के रूप में क्षेत्रीय केन्द्र ने 'तोलपाव कोथु पपेट का प्रस्तुति और प्रलेखन का आयोजन किया। यह प्रदर्शन श्री कृष्ण पुलावर मेमोरियल तोलपाव कोथु कठपुतली केन्द्र के श्री राम चन्द्र पुलावर और उनकी मंडली द्वारा किया गया। यह प्रदर्शन 7 से 12 नवम्बर, 2016 तक बंगलुरू नगर के छह स्कूलों में प्रस्तुत किया गया।
- 'स्वर शतक–भारत रत्न डॉ. एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी सेंटीनरी कान्सर्ट श्रृंखला' की एक अन्य प्रस्तुति कला मंदिर, मैसूर में विदुषी वैष्णवी दत्ता द्वारा की गई।

स्वर शतकः–भारत रत्न डॉ. एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी शताब्दी समारोह श्रृंखला के हिस्से के रूप में कर्नाटक संगीत की प्रस्तुति सुश्री वैष्णवी दत्ता और उनके साथियों द्वारा।

- मंड्या, बंगलुरू में 2 फरवरी, 2017 को 'रंग सुराग थिएटर संगीत का प्रलेखन' क्षेत्रीय केन्द्र द्वारा किया गया। इस प्रलेखन में अतीत के रंगमंचीय गीतों को शामिल किया गया जो अनेक पेशेवर रंगमंच समूहों या कंपनियों से जुड़े हुए थे।

- 25 फरवरी, 2017 को 'स्वर शतक –भारत रत्न डॉ. एम.एस.सुब्बुलक्ष्मी सेंटेनरी कॉन्सर्ट सीरीज' चामराजनगर जिले के सीमावर्ती क्षेत्र में जा पहुंची। विदुषी ए.डी. हेमवर्धनी ने अपनी गायन प्रस्तुति में डॉ. एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी के कुछ गीत प्रस्तुत किए।

- 31 मार्च, 2017 को क्षेत्रीय केन्द्र ने शिवमोगा में श्रीमती विदुषी गायत्रीमाया का कर्नाटक संगीत कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इसका आयोजन कर्नाटक सरकार के कन्नड़ एवं संस्कृति विभाग के साथ मिलकर किया गया।

फिल्म प्रदर्शनः प्रसार कार्यक्रम के तहत आईजीएनसीए द्वारा तैयार की गई 24 फिल्मों/वृत्तचित्रों की स्क्रीनिंग जनता के लिए की गई। शोधार्थियों, विद्यार्थियों और कला–प्रेमियों ने इनमें हिस्सा लिया और इसके बाद इन पर चर्चा की गई।

क्षेत्रीय केन्द्र, गुवाहाटीः वर्ष के दौरान उत्तर–पूर्वी क्षेत्रीय केन्द्र ने निम्नलिखित गतिविधियों का आयोजन किया–

- इं.गां.रा.क.केन्द्र ने 'स्पिक मैके' के सहयोग से दिनांक 9 से 15 मई, 2016 तक गुवाहाटी में 'चौथे अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन' का आयोजन किया। सम्मेलन के दौरान 9 से 15 मई, 2016 तक गुवाहाटी में निम्नलिखित प्रदर्शनियों का आयोजन किया गया (1) मणिपुर के चित्र और लोक महाकाव्य (खांबा और थोइबी); और (2)नागा जनजातियों के मिले–जुले चित्र।

- क्षेत्रीय केन्द्र ने असम सरकार एवं कमलाबाड़ी सत्र के सहयोग से दिनांक 28 जनवरी से 3 फरवरी, 2017 तक माजुली, असम में 'समस्त असम अंकिया भओना समारोह, 2017' का आयोजन किया।

- 28 जनवरी से 3 फरवरी, 2017 तक 'समस्त असम अंकिया भाओना समारोह, 2017' के भाग के रूप में ''सत्रीय कल्चरः इम्पैक्ट, सस्टेनेबिलिटी एण्ड फ्यूचर'' पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। ये कार्यक्रम इं.गां.रा.क. केन्द्र के जनपद–सम्पदा विभाग के समन्वय एवं सहायता से सम्पन्न हुए।

अनुलग्नक

अनुलग्नक- 1

न्यासी बोर्ड (वित्त वर्ष 2016–17)

1. श्री राम बहादुर राय — अध्यक्ष
   5/118 गुलमोहर लेन,
   वैशाली, गाजियाबाद
   उत्तर प्रदेश - 201010

2. डॉ. सोनल मानसिंह
   डी–295, प्रथम तल
   डिफेंस कॉलोनी
   नई दिल्ली - 110024

3. श्री चंद्रप्रकाश द्विवेदी
   ई–702, स्प्रिंग फील्ड्स
   लोखंडवाला कॉम्प्लेक्स
   अंधेरी (पश्चिम)
   मुंबई - 400053

4. श्री नितिन चंद्रकांत देसाई
   201/ए, वेंचुरा, सेंट्रल एवेन्यू,
   एचडीएफसी बैंक के सामने, हीरानंदानी बिजनेस पार्क,
   पवई, मुंबई - 400076 (महाराष्ट्र)

5. डॉ. अरविंद राव, आईपीएस (रिटायर्ड)
   प्लॉट नं. 8, गुरुकुलम लेन
   सचिवालय कर्मचारी कॉलोनी,
   पिप्पलगुडा, हैदराबाद - 500089 (ए.पी.)

6. श्री वासुदेव कामथ
   'तपस्या', रो हाउस नंबर 15,
   हिल व्यू को–ऑपरेटिव हाउसिंग सोसाइटी
   साई कृपा कॉम्प्लेक्स, काशी–मीरा (मीरा रोड)
   ठाणे - 401107, महाराष्ट्र

7. डॉ. महेश शर्मा
शिवालिक मिशन
पी.ओ. शाकुम्बरी–बेहट
जिला सहारनपुर, उत्तर प्रदेश

8. डॉ. भरत गुप्त
जे–53, अशोक विहार फेस–1
दिल्ली - 110052

9. डॉ. एम. शेषन
'गुरु कृपा'
790, डॉ. रामास्वामी सलाई रोड,
के.के.नगर, चैन्नई - 600078 तमिलनाडु

10. श्रीमती राठी विनय झा
405 बी, दि लैबर्नम
सुशांत लोक 1, सेक्टर 28,
गुड़गांव - 122009

11. प्रोफेसर निर्मला शर्मा
आर्ट, हिस्ट्री एंड एस्थेटिक्स इण्टरनेशनल
एकेडमी ऑफ इण्डियन कल्चर
जे–22, हौज खास एन्क्लेव
नई दिल्ली - 110016

12. श्री हर्षवर्धन नेवतिया
इकोस्पेस बिजनेस पार्क
ब्लॉक – 4बी, द्वितीय तल,
प्लॉट नं. II – एफ/11,
एक्शन एरिया – II, राजारहाट
न्यू टाउन, कोलकाता - 700156

13. डॉ. पद्मा सुबह्मण्यम्
अध्यक्ष, 'नृत्योदय'
एम.जी. ट्रस्टी, भरतमुनि फाउंडेशन फॉर एशियन कल्चर
ओल्ड 6, फोर्थ मेन रोड
गांधीनगर, चेन्नई - 600020

14. डॉ. सरयू दोशी
5, ब्लू हाउस, एम.एल. दहनुकर मार्ग
मुंबई - 400026 महाराष्ट्र

15. श्री प्रसून जोशी
201–202 बी विंग, क्वांटम पार्क बिल्डिंग
यूनियन पार्क, खार पश्चिम
मुंबई - 400052, महाराष्ट्र

16. श्री दया प्रकाश सिन्हा
हाउस नंबर बी–255
सेक्टर–26, नोएडा - 201301 (यू.पी.)

17. श्री बिराद राजाराम याज्ञिक
प्रकाशक और प्रबंध निदेशक
विजुअल गेस्ट इंडिया
171, रोड 3 बंजारा हिल्स
हैदराबाद - 500034

18. श्री नरेन्द्र कुमार सिन्हा (पदेन न्यासी)
सचिव, भारत सरकार
संस्कृति मंत्रालय
502–सी विंग, शास्त्री भवन
नई दिल्ली - 110015

19. श्री कुमार संजय कृष्ण (पदेन न्यासी)
अपर सचिव और वित्तीय सलाहकार
भारत सरकार, संस्कृति मंत्रालय
कृषि मंत्रालय
136, कृषि भवन, नई दिल्ली - 110015

20. डॉ. सच्चिदानंद जोशी (पदेन न्यासी एवं सदस्य सचिव)
इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
11, मानसिंह रोड
नई दिल्ली - 110001

अनुलग्नक-2

कार्यकारिणी समिति (वित्त वर्ष 2016–17)

1. श्री राम बहादुर राय
   5/118 गुलमोहर लेन,
   वैशाली, गाजियाबाद
   उत्तर प्रदेश - 201010

2. डॉ. चंद्रप्रकाश द्विवेदी
   ई –702, स्प्रिंगफील्ड्स,
   लोखंडवाला कॉम्प्लेक्स,
   अंधेरी (पश्चिम), मुंबई - 400053

3. डॉ. अरविंद राव आईपीएस (सेवानिवृत्त)
   प्लॉट नं. 8, गुरुकुलम् लेन,
   सचिवालय कर्मचारी कॉलोनी,
   पिप्पलगुडा, हैदराबाद - 500089

4. डॉ. भरत गुप्त
   जे–53, अशोक विहार फेस–1,
   दिल्ली - 110052

5. डॉ. सच्चिदानंद जोशी (कार्यकारिणी समिति के पदेन सदस्य)
   सदस्य सचिव
   इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
   11, मानसिंह रोड
   नई दिल्ली - 110001

अनुलग्नक-3

प्रकाशन

पुस्तकें

1. 'गोल्ड डस्ट ऑफ बेगम सुल्तान्स';
2. 'दि आर्ट्स ऑफ केरल क्षेत्रम';
3. 'बौधायन श्रौत सूत्र;
4. 'दि इंडियन टैम्पल – मिरर ऑफ दि वर्ल्ड';
5. 'नाट्यशास्त्र' खंड–I;
6. 'एबीआईए साउथ एंड साउथ ईस्ट एशियन आर्ट एंड आर्कियोलॉजी' – इंडेक्स खंड–4;
7. 'रिसर्च मैथडोलॉजी इन आर्ट';
8. 'मोनोग्राफ ऑन वीमन सीअर्स'

सीडी/डीवीडी

1. 'भांड पाथर';
2. 'सुरभि थिएटर';
3. 'रिचुअल्स ऑफ महामस्तकाभिषेक';
4. 'मास्टर्स ऑफ हिन्दुस्तानी क्लासिकल म्यूजिक सीरीज' पंडित मणि प्रसाद;
5. 'मास्टर्स ऑफ हिन्दुस्तानी क्लासिकल म्यूजिक सीरीज' पंडित डालचन्द शर्मा;
6. 'मास्टर्स ऑफ हिन्दुस्तानी क्लासिकल म्यूजिक सीरीज' पंडित श्रीकृष्ण बबनराव हलदणकर;
7. 'मास्टर्स ऑफ हिन्दुस्तानी क्लासिकल म्यूजिक सीरीज' विदुषी सुहाषिनी कोरंटकर;
8. 'अदूर गोपालकृष्णन';
9. 'लीला इन खेरिया';
10. 'स्वच्छता देवता एक समान';
11. 'भारत रत्न डॉ. एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी';
12. 'रामानुजीयमः दि वर्ल्ड ऑफ श्री रामानुजाचार्य';
13. 'ए स्टोरी कॉल्ड सिनेमाः दि बी.डी. गर्ग आर्काइव्स'

अनुलग्नक-4

प्रदर्शनियाँ

1. 'गोल्ड डस्ट ऑफ बेगम सुल्तान्स' पर होने वाले कार्यक्रम के भाग के रूप में 19 अप्रैल से 10 मई, 2016 तक 'स्टोरी ऑफ ए रामपुर फेमिली';
2. 'इमेजिज फ्रॉम दि बुकः 'दि आट्र्स ऑफ केरल क्षेत्रम' का आयोजन 21 से 30 अप्रैल, 2016 तक;
3. प्रोफेसर सच्चिदानंद सहाय द्वारा क्यूरेट की गई 'दि आर्ट ऑफ अंकोर' नामक एक फोटोग्राफिक प्रदर्शनी 10 से 17 जून, 2016 तक;
4. इ.गां.रा.क.केन्द्र, दिल्ली में 21 से 30 जून, 2016 तक अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर 'इंडियन विजुअल आर्ट में योग' पर;
5. डॉ. नामवर सिंह पर फोटो प्रदर्शनी 'संस्कृति संवाद श्रृंखला' के हिस्से के रूप में 28 जुलाई, 2016 को;
6. जनपद–सम्पदा प्रभाग के वार्षिक दिवस समारोह के भाग के रूप में 5 से 14 अगस्त, 2016 तक 'राबडी टैक्सटाइल्स' पर;
7. 'मैपिंग इंडियन हैंडक्राफ्टेड टेक्सटाइल्स– मेटीरियल, ट्रेडिशन, टेकनीक' पर एक प्रदर्शनी 7 सितंबर से 25 अक्टूबर, 2016 तक;
8. 'पीपुल, बुक, लैण्डः दि 3500 इयर रिलेशनशिप ऑफ दि ज्यूइश पीपुल विद दि होली लैंड' पर एक प्रदर्शनी 21 सितंबर से 9 अक्टूबर, 2016 तक साइमन विसेन्थल सेंटर, एलए के सहयोग से आईजीएनसीए में;
9. सुलभ इंटरनेशनल के सहयोग से 'स्वच्छ सृष्टि' पर एक प्रदर्शनी 1 से 8 अक्टूबर, 2016 तक;
10. 'आख्यान–मास्क्स, पपेट्स एंड पिक्चर शोमेन इन इंडियन नैरेटिव्स ट्रेडिशंस' पर एक प्रदर्शनी, भोपाल में 11 से 14 नवम्बर, 2016 तक न्यू विधान भवन में;
11. 'आचार्य अभिनवगुप्तः ए जीनियस ऑफ कश्मीर' पर एक प्रदर्शनी 15 दिसंबर, 2016 से 31 जनवरी, 2017 तक;
12. वियतनाम के समकालीन कलाकारों की कलाकृतियों पर एक प्रदर्शनी 5 से 10 जनवरी, 2017 तक;
13. 'बोकेटो–श्री हरिराम हीरानन्दानी के बनाए चित्रों का एक संग्रह' की प्रदर्शनी 15 से 30 जनवरी, 2017 तक;
14. 'संस्कार और कलाओं में बांस की महिमा' पर एक प्रदर्शनी भोपाल में 26 से 30 जनवरी, 2017 को आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास परिषद के लोकरंग महोत्सव के रूप में;
15. 'शीरी होडू–सेलीब्रटिंग दि ज्यूइश सागा ऑफ इंडिया' पर आयोजन के हिस्से के रूप में 'शीरी होडू एंड दि ज्यूज़' पर 5 से 28 फरवरी, 2017 तक;
16. 'ए स्टोरी कॉल्ड सिनेमा–दि बी.डी.गर्ग आर्काइव्स' पर एक प्रदर्शनी 9 से 23 फरवरी, 2017 तक;
17. नई दिल्ली स्थित इंडोनेशिया गणराज्य के दूतावास के सहयोग से नई दिल्ली में 19 से 20 फरवरी, 2017 तक इंडोनेशिया की बातिक चित्रकारी पर;
18. 'गुआनशियिन/अवलोकितेश्वरः फेमिनिन सिम्बोलिज्म इन बुद्धिस्ट आर्ट' पर एक प्रदर्शनी 27 मार्च से 30 अप्रैल, 2017 तक।

चल प्रदर्शनियाँ

1. 'अफ्रीकन्स इन इण्डियाः ए रिडिस्कवरी' पर एक चल प्रदर्शनी विजयपुर में सिद्देश्वर आर्ट इंस्टीट्यूट में 3 से 30 अप्रैल, 2016 तक;
2. 'फेसिनेटड बाई दा ओरिएंट–लाईफ एंड वर्क्स ऑफ सर ऑरेल स्टीन' पर 19 अप्रैल से 5 मई 2016 तक लखनऊ राजकीय संग्रहालय;
3. 'दि वर्ल्ड ऑफ रॉक आर्ट' प्रदर्शनी क्षेत्रीय विज्ञान शहर, लखनऊ में ले जाई गई और वहां 26 अप्रैल से 17 मई, 2016 तक उक्त संस्थान में प्रदर्शित की गई।
4. 'स्पिक मैके' के साथ अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के भाग के रूप में 9 से 15 मई, 2016 तक 'पेंटिंग्स एंड फोक एपिक्स ऑफ मणिपुर' (खांबा और थोइबि) पर;
5. आईआईटी गुवाहाटी में 'एसोरटिड फोटोज़ ऑफ नागा ट्राइब्स' पर 9 से 15 मई, 2016 तक;
6. 'अफ्रीकन्स इन इंडिया–ए रिडिस्कवरी' पर एक प्रदर्शनी और इस पर तैयार की गई एक ऑडियो–विजुअल प्रस्तुति येल्लपुरा, कर्नाटक में 7 से 13 जून, 2016 तक;
7. एशियाई संस्कृति अनुसंधान और पुरालेख, ग्वांग्जू, कोरिया के सहयोग से 15 जून, 2016 से 8 जनवरी, 2017 तक दक्षिण कोरिया के एशिया संस्कृति केन्द्र में 'रबीन्द्र नाथ टैगोर– दि आर्ट एंड लाइफ ऑफ ए कॉस्मोपॉलिटन' पर;
8. 'दि वर्ल्ड ऑफ रॉक आर्ट' प्रदर्शनी 15 जून से 24 जुलाई, 2016 तक हिमाचल राजकीय संग्रहालय, शिमला में;
9. 'दि वर्ल्ड ऑफ रॉक आर्ट' प्रदर्शनी 10 अगस्त से 10 सितंबर, 2016 तक पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ में;
10. 'अफ्रीकन्स इन इंडियाः ए रिडिस्कवरी' का आयोजन 16 अक्टूबर से 5 नवंबर, 2016 तक सालारजंग संग्रहालय, हैदराबाद में;
11. इ.गां.रा.क.केन्द्र ने 16 से 20 नवंबर, 2016 तक भोपाल के बिलाबोंग हाई इंटरनेशनल स्कूल के उत्सव में अपने अभिलेखागारों से चार प्रदर्शनियां लगाईं। ये थीं– क) 'इमेज़िज ऑफ इंडियाः ए फेसिनेटिड जर्नी थ्रू टाइम', ख) 'अंजता–ए नेरेटिव आर्ट', ग) 'भारत के संगीत उपकरण', और घ) 'भारत के लोग'।
12. भुवनेश्वर, ओडिशा में श्री जगन्नाथ के नवकलेवर पर 'सेक्रेड हेरिटेज ऑफ जगन्नाथ ट्राइबल एंड रीजनल कल्चरल इंटरफेस' संगोष्ठी के भाग के रूप में 8 से 31 दिसम्बर, 2016 तक;
13. 17 से 24 दिसम्बर, 2016 तक भारत कला भवन, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी में राष्ट्रीय संस्कृति महोत्सव के दौरान निम्नलिखित प्रदर्शनियों का आयोजन किया गया–
    - 'आख्यान– मास्क्स, पपेट्स, एंड पिक्चर शोमेन इन इंडियन नैरेटिव ट्रेडीशंस' पर;
    - संतोकबा द्वारा महाभारत पर्व (1200 मीटर पेंटिंग में से 200 मीटर) पेंटिंग;
    - 'रामायण महाभारत कालीन पूर्वोत्तर राज्यों के सांस्कृतिक संबंध'
    - 'गोंडी रामायण।
    - 'इसलिए मेरा भारत महान'–भारतीय संस्कृति पर फोटोग्राफिक प्रदर्शनी जो संस्कार भारती से जिसे बाबा सत्य नारायण मौर्य द्वारा तैयार किया गया था;

14 'रामायण इन विजुअल आर्ट्स' पर जबलपुर, मध्यप्रदेश में 18 से 25 दिसम्बर, 2016 तक;

15. 'दि वर्ल्ड ऑफ रॉक आर्ट' 17 फरवरी से 15 मार्च, 2017 तक इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, भोपाल में आईजीआरएमएस के सहयोजन में;

16. मैसूर में 'कला, साहित्य और धर्म में भगवान श्री राम' पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में जनपद–सम्पदा के अभिलेखागार से गोंड पेंटिंग्स, मास्क, कठपुतली, लिथोग्राफ शामिल कर रामायण पर एक प्रदर्शनी 22 से 24 फरवरी, 2017 तक;

17. 'दि गौंड पेटिंग्सि ऑन रामायण' पर एक प्रदर्शनी सेंचुरी यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट, ओडिशा में 24 से 27 फरवरी, 2017 तक।

अनुलग्नक-5

संगोष्ठियाँ/सम्मेलन/कार्यशालाँ

1. 'नई शिक्षा नीति एवं पुस्तकालय' पर 9 मई, 2016 को;
2. भारतीय शिक्षक मण्डल के सहयोजन में 'राष्ट्रीय सुरक्षा हेतु शिक्षा' पर 4 जून, 2016 को;
3. संस्कृति संवाद श्रृंखला के हिस्से के रूप में दो पैनल चर्चाएं 28 जुलाई, 2016 को–

(क) नामवर सिंह की सार्थकता; (ख) नामवर सिंह का कृतित्व–राष्ट्रीय संदर्भ

4. जम्मू एवं कश्मीर में 'अभिनवगुप्तः दि जीनियस ऑफ कश्मीर' पर 3 से 4 सितम्बर, 2016 को
5. 'इंटरनेशनल मैटल कांफ्रेंस' आईजीएनसीए में 26 से 30 सितम्बर, 2016 को;
6. 'पूर्वोत्तर भारत–म्यांमार (बर्मा): एथनिक एंड कल्चरल लिंकेजिज एट मणिपुर' पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन 28 से 29 सितम्बर, 2016 को;
7. 'रॉक ऑफ दि नॉर्थ–ईस्टः मैथडोलॉजीकल एंड टेक्निकल इश्यूज' पर तुरा कैम्पस, मेघालय' में 5 से 6 अक्टूबर, 2016 को;
8. संस्कृति संवाद श्रृंखला के हिस्से के रूप में 'रामानुजीयम – दि वर्ल्ड ऑफ रामानुजम' पर विचार–गोष्ठी 7 अक्टूबर, 2016 को;
9. संत भद्रगिरि अच्युतदास स्मारक राष्ट्रीय संगोष्ठी 23 अक्टूबर, 2016 को;
10. 'आचार्य अभिनव गुप्त मिलेनियम सेलीब्रेशन' भोपाल में 4 से 6 नवम्बर को;
11. 'सेक्रेड हेरिटेज ऑफ जगन्नाथ ट्राइबल एंड रीजनल कल्चरल इंटरफेस' पर सम्मेलन 8 से 10 दिसम्बर, 2016 को;
12. 'भारत रत्न डॉ. एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी' पर विचार–गोष्ठी संस्कृति संवाद श्रृंखला के तहत 9 से 11 दिसम्बर, 2016 को;
13. 'नई शिक्षा नीति' पर एक चर्चा 09 दिसम्बर, 2016 को आयोजित की गई।
14. 'सीपीएलएच–2016–प्रोटेक्टिंग, कंर्जविंग एण्ड प्रिजर्विंग कलेक्शन ऑफ लिटरेरी हैरिटेज– चैनलिंग इंटरनेशनल कॉलेबोरेशन' 11 से 13 दिसम्बर, 2016 को;
15. आचार्य अभिनवगुप्त– दि जीनियस ऑफ कश्मीर' विषय पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं पैनल चर्चा 15 से 17 दिसम्बर, 2016 को';
16. 'वर्ल्ड रामायण कांफ्रेंस' का आयोजन 22 से 23 दिसम्बर, 2016 को;
17. 'टैक्स्ट, मेन्युस्क्रिप्ट एंड ओरल ट्रेडीशंस ऑफ क्लासिकल परफॉरर्मिंग आर्ट फॉर्म ऑफ केरल' 9 से 11 जनवरी, 2017 को;
18. 'इण्डो–बांग्लादेश मल्टी सेक्टोरल कोऑपरेशन' पर अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी 23 से 24 जनवरी, 2017 को;
19. 'आचार्य अभिनवगुप्त– दि जीनियस ऑफ कश्मीर' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी चेन्नई में 24 और 25 जनवरी, 2017 को;
20. 'मेरीटाइम हैरिटेज ऑफ इंडियन कोस्टलाइन एण्ड इट्स पोटेंशियल' पर एक विचार–गोष्ठी 28 जनवरी, 2017 को;

21. 'आर्ट, कल्चर एंड हेरिटेज ऑफ ज्यूस ऑफ इंडिया' पर दो दिवसीय अंतर–राष्ट्रीय विचार–गोष्ठी 6 और 7 फरवरी, 2017 को;

22. 'रेजिलंस इन डिजिटल एशियाः रिएलिटीज, एक्सपीरिएंशिज, विज़न्स' पर ओडिशा के भुवनेश्वर में संगोष्ठीः सेंचूरियन विश्वविद्यालय, ओडिशा के सहयोजन में 6 से 9 फरवरी, 2017 को;

23. 'भारतीय विरासत की वैश्विक धारणा' पर सम्मेलन 17 से 19 फरवरी, 2017 को;

24. 'दि आइडिया ऑफ भारत' विषय पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन 23 से 25 फरवरी, 2017 को;

25. 'वीमन्स वर्ल्डः चॉइसिज, चैलेंजिस एंड फ्यूचर पॉसिबिलिटीज' पर पैनल चर्चा 25 मार्च, 2017 को;

26. 'म्यूजिकल पोर्ट्रेट ऑफ डॉ. एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी 25 मार्च, 2017 को;

27. 'वीमन एण्ड बुद्धिज्म–पर्सपेक्टिव्स ऑन जेण्डर, कल्चर एण्ड एम्पावरमेंट' पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन 27 से 29 मार्च, 2017 को।

अनुलग्नक-6

स्मारक/सार्वजनिक व्याख्यान

वर्ष के दौरान लगभग 64 सार्वजनिक व्याख्यान/व्याख्यान प्रस्तुतियाँ आयोजित की गईं। व्याख्यानों के विषय, वक्ता का नाम और तारीख नीचे दी गई हैः

1. दि वर्क ऑफ शेयरिंग स्टोरीज़ फाउंडेशन पर लिज थॉम्पसन द्वारा 8 अप्रैल, 2016 को;
2. करगा ट्रेडीशन एंड फेमिनिज्म' पर डॉ. एम. सुमित्रा द्वारा 15 अप्रैल, 2016 को;
3. जोरास्ट्रियन मोटिफ्स इन पारसी एम्ब्राइडरी' पर डॉ. शेरनाज कामा और श्री आशदीन लीलाओवाला द्वारा 16 अप्रैल, 2016 को;
4. श्री कुमार गंधर्व के निर्गुणी भजनों पर पं. पुष्कर लेले द्वारा 17 अप्रैल, 2016 को;
5. सोनभद्र जिले के विशेष संदर्भ में 'उत्तर प्रदेश में शैल चित्रकला–डिटर्मिनिंग दि एन्टिक्विटी ऑफ रॉक आर्ट' पर प्रो.डी.पी.तिवारी और डॉ.सी.एम.नौटियाल द्वारा 26 अप्रैल, 2016 को;
6. 'अण्डरस्टैंडिंग वास्तुशास्त्रः दि आर्किटेक्चर ऑफ इंडिया' पर डॉ.आर.जगन्नाथन द्वारा 5 मई, 2016 को;
7. 'रोल ऑफ सी–लेवल फ्लक्चुएशंस इन शैपिंग द डेस्टिनी ऑफ एनशिएंट टाउन अलांग दि इंडियन कोस्टलाइन' पर डॉ. राजीव निगम द्वारा 10 मई, 2016 को;
8. 'ट्रेडिंग इन स्टोरिज' पर सुश्री सुमेधा वर्मा ओझा द्वारा 24 मई, 2016 को;
9. 'कनिंघम्स' लॉस्ट ट्रेजर्स' पर डॉ. संजय गर्ग द्वारा 31 मई, 2016 को;
10. 'अंकोरः शेयर्ड कल्चरल हेरिटेज ऑफ इंडिया एंड साउथ ईस्ट एशिया' पर प्रो. सच्चिदानंद सहाय द्वारा 03 जून, 2016 को;
11. 'रॉक आर्ट एट शिमला' पर डॉ. ओ.सी. हांडा द्वारा 15 जून, 2016 को;
12. 'रॉक आर्ट इन दि वैस्टर्न हिमालयन रीजनः ए रिव्यू एज पार्ट ऑफ दि वर्ल्ड ऑफ रॉक आर्ट''प्रदर्शनी शिमला में डॉ. हरि चौहान द्वारा 15 जून, 2016 को;
13. 'कंटेम्पोरेरी थिएटर टेक्स्ट– नीड फॉर न्यू डाइमेनसन्ज–चैलेंजिज' पर डॉ. के.वाई नारायण स्वामी द्वारा 17 जून, 2016 को;
14. 'सेलिंग इन इंडियन ओशनः दि सी–फेरर्स ऑफ कच्छ' पर डॉ.छाया गोस्वामी द्वारा 22 जून, 2016 को;
15. 'सम आस्पैक्ट्स ऑफ अर्ली वैदिक ट्रेडीशंस' पर डॉ.आर. नागास्वामी द्वारा 8 जुलाई, 2016 को;
16. 'वसुबन्धूज़ ट्रेजरी ऑफ हायर डोक्ट्राइन' (अभिधर्म–कोष)–बौद्ध दुनिया में इसके महत्व और बौद्ध अध्ययन पर इसके प्रभाव पर डॉ. मारेक एडम मेजर द्वारा 8 जुलाई, 2016 को;
17. 'मास मीडिया एण्ड कल्चर' पर श्री ईश्वर दैटोटा द्वारा 15 जुलाई, 2016 को;
18. 'ट्राइबल एंड फोक ब्रांचेज़ ऑफ बस्तर, ओडिशा एण्ड वेस्ट बंगाल' पर श्री निरजंन महावर द्वारा 18 जुलाई, 2016 को;
19. 'भरत्स नाट्यशास्त्र–दि रेसिपी ऑफ भरत फॉर माइंड फूड' पर डॉ.बी.वी.राजाराम द्वारा 22 जुलाई, 2016 को;
20. 'इम्पैक्ट ऑफ भारत ऑन बिजनेस ऑफ कन्ट्रीज़ अराउंड हिन्द महासागर' पर श्री संदीप सिंह द्वारा 25 जुलाई, 2016 को;

21. 'दि आर्ट, दि आर्टिस्ट एंड कांशसनैस' पर डॉ. संगीता मेनन द्वारा 29 जुलाई, 2016 को;
22. 'शेखावाटी टुवर्ड्ज, पार्टीसिपेटरी कंर्जेवेशन एण्ड मैनेजमैंट' पर सुश्री उर्वशी श्रीवास्तव द्वारा 5 अगस्त, 2016 को;
23. 'हिस्ट्री एट पिलग्रीम सेन्टर्स– दि रिकार्ड्स कैप्ट बाय पंडा प्रीस्ट्स' पर प्रो. बी. एन. गोस्वामी द्वारा 9 अगस्त, 2016 को;
24. चण्डीगढ़ में शैल कला पर 'प्री–हिस्ट्री ऑफ दि शिवालिक रेंजिज ऑफ पंजाबः एन अनालिसिस ऑफ प्रीहिस्टोरिक इंडियन रॉक आर्ट' पर डॉ. मुकेश सिंह, डॉ. पारूल सिद्धू और डॉ. रेणु ठाकुर द्वारा 10 अगस्त, 2016 से 11 अगस्त, 2016 तक;
25. 'मेकिंग ऑफ एन आर्टिस्ट–एक्सपीरियंस, एनवायरनमेंट एण्ड एक्सप्रेशन' पर आचार्य हजारी प्रसाद स्मारक व्याख्यान श्रृंखला के तहत और 'भक्ति साहित्य की सम्पादन कला' पर श्री सुदेश मदान और प्रो.नंद किशोर पाण्डेय द्वारा 19 अगस्त, 2016 को;
26. 'दि लिजेंड ऑफ ढोला मारू–एन इलस्ट्रेटेड टॉक' पर डॉ. नीरू मिश्रा द्वारा 30 अगस्त, 2016 को;
27. 'काशी एण्ड इट्स कोसमोस– सीक्रेट जियोग्राफी ऑफ इंडियाज कल्चरल कैपिटल' पर प्रो. राणा पी.बी. सिंह द्वारा 16 सितम्बर, 2016 को;
28. दि इमेज ऑफ कृष्णा इन एचएसवी'स पोएट्री' पर डॉ. एच.एस. वेंकेटेश मूर्ति द्वारा 21 सितम्बर, 2016 को;
29. कलाकारों एवं डिजाइनरों के रचनात्मक अनुभव पर डॉ. अनीष शर्मा द्वारा 23 सितम्बर, 2016 को;
30. 'स्वच्छ सृष्टि' पर श्री अरूणाचलम मुरुगनंतम द्वारा 3 अक्टूबर, 2016 को;
31. 'प्राचीन शास्त्रों में स्वच्छता' पर डॉ. राम अवतार द्वारा 05 अक्टूबर, 2016 को;
32. भारतीय संस्कृति, सभ्यता, कलाचिन्तन परम्परा और वर्तमान संदर्भ' पर श्री रवीन्द्र शर्मा द्वारा 5 अक्टूबर, 2016 को;
33. 'इंडिया–वियतनाम रिलेशंस इन कल्चरल पर्सपेक्टिव' पर प्रो. दू थू हा द्वारा 6 अक्टूबर, 2016 को;
34. 'मायदा मनदा भारा– एडियू टु श्री गोपाल वाजपेयी' पर श्री जी.एन.मोहन द्वारा 21 अक्टूबर, 2016 को;
35. 'ऑन बहीज एंड पोथीज' पर प्रो.बी.एन.गोस्वामी द्वारा 26 अक्टूबर, 2016 को;
36. 'इवॉल्विंग नेशनल स्किल क्वालिफिकेशन फ्रेमवर्क (एन.एस.क्यू.एफ.) कॉम्पलाएन्स प्रोग्राम ऑन कल्चरल इन्फोरमेटिक्स' पर प्रो. ओम विकास द्वारा 10 नवम्बर, 2016 को;
37. 'ट्रांसलेशनः ट्रेंड्स एण्ड टिप्स' पर डॉ. सी.एन. रामचन्द्रन द्वारा 18 नवम्बर, 2016 को;
38. 'संस्कृति एवं शान्ति' पर श्री बी.पी.सिंह द्वारा 19 नवम्बर, 2016 को;
39. 'दि केस ऑफ स्वदेशी इंडोलॉजी' पर श्री राजीव मल्होत्रा द्वारा 20 नवम्बर, 2016 को;
40. 'रामनगर की रामलीला' पर प्रो. जितेन्द्र नाथ मिश्रा द्वारा 22 नवम्बर, 2016 को;
41. 'डेमो ऑन दि रिकवरी प्रोजेक्ट– कल्चरल मेमोरी एण्ड डांस प्रैक्टिस इन सादिर' (भरतनाट्यम) पर सुश्री स्वर्णमाल्या गणेश द्वारा 28 नवम्बर, 2016 को;
42. 'सेंक्शिनदुईः ए ट्रेजर ट्रोव ऑफ एन्टीक्विटी' पर प्रो. अनीता शर्मा द्वारा 30 नवम्बर, 2016 को;
43. 'नवकलेवर एट भुवनेश्वर' पर प्रो. जॉयज्योति गोस्वामी द्वारा 9 दिसम्बर, 2016 को;
44. 'रिफरेंस ऑफ फोकलोर इन इंस्क्रिप्शन्स' पर डॉ. एम.जी. मंजुनाथ द्वारा 19 दिसम्बर, 2016 को;
45. 'कल्चर, सांइस एण्ड सोसायटी लेक्चर'– 'कश्मीर शैविज्मः दि फिलोस्फी ऑफ ब्लिसफुल यूनिटी इन एम्बोडीड स्टेट्स' पर स्वामी बोधानंद द्वारा 22 दिसम्बर, 2016 को;

46. संस्कृति वैभव श्रृंखला के तहत 'रेलिवेंस एंड यूटिलिटी ऑफ धर्म शास्त्राज इन कंटेम्परेरी टाइम्स' पर प्रोफेसर भरत गुप्त द्वारा 09 जनवरी, 2017 को;
47. 'लोक गायकों के विलुप्त सुर' पर प्रो. मौली कौशल द्वारा जनवरी, 2017 में;
48. 'ट्राइबल लिटरेचर एंड ओरल एक्सप्रैशन इन इंडिया एट पोर्ट ब्लेयर, अंडमान एंड निकोबार आइलैण्ड्स' पर प्रो. अरकलगुड रामप्रसाद द्वारा 10 जनवरी, 2017 को;
49. 'प्रिवेंटिव कंजर्वेशनः म्यूजियम स्टोरेज एट आईजीएनसीए लेक्चर ऑन क्यूरेटिंग बैस्ट प्रैक्टिसिज' पर श्री अंचल पंड्या और श्रीमती रूबीना करोड़े द्वारा 20 जनवरी, 2017 को;
50. 'दि कल्चरल फैब्रिक्स ऑफ बॉर्डर डिस्ट्रिक्स एण्ड मीडिया' पर श्री बसवराज स्वामी द्वारा 21 जनवरी, 2017 को;
51. 'अबाउट सांग ऑफ सरेंडर' पर डॉ. गौरी रामनारायण द्वारा 1 फरवरी, 2017 को;
52. 'रंग सुराग–डाक्यूमेंटेशन ऑफ थिएटर म्यूजिक' पर डॉ. लक्ष्मण दास द्वारा 2 फरवरी, 2017 को;
53. 'एक्सपैंडिंग होराइजन्स कांट्रेक्टिंग पैराडाइम्स– दि स्टेट ऑफ रिसर्च इन टु इंडियाज ज्यूज एज पार्ट ऑफ शीरी होडू'– 'सेलीब्रेटिंग दि ज्यूइश सागा ऑफ इंडिया' पर प्रो. शाल्वा वेइल द्वारा 6 फरवरी, 2017 को;
54. 'दि ज्यूज डायस्पोरा ऑफ इंडियाः नेम ऑफ दि गेम एंड दि गेम एज पार्ट ऑफ शीरी होडू सेलीब्रेटिंग दि ज्यूइश सागा ऑफ इंडिया' पर प्रो. आर.के. जैन द्वारा 7 फरवरी, 2017 को;
55. मलेकर इंटरफेथ डायलॉगः ए ज्यूइष पर्सपेक्टिव' पर श्री एजकेल आइजैक द्वारा 10 फरवरी, 2017 को;
56. 'सिनेमा–अ विटनैस ऑफ अवर टाइम' 'ए सिनेमेटिक कलाइडोस्कोपः राइटिंग्स ऑफ बी.डी.गर्ग' पर डॉ.जी.एस.रैना द्वारा 01 फरवरी, 2017 को;
57. 'आचार्य अभिनव गुप्त और साहित्य शास्त्र' पर प्रो. रेवा प्रसाद द्वारा 17 फरवरी, 2017 को;
58. 'रॉक आर्ट एट भोपाल प्रीहिस्टोरिक रॉक पेंटिंग्स एंड इट्स सिग्नीफिकेंस इन आर्ट एंड कल्चर' पर डॉ. रहमान अली द्वारा 17 फरवरी, 2017 को;
59. 'आचार्य अभिनव गुप्त और त्रिक्दर्शन' पर प्रो. कमलेश दत्त त्रिपाठी द्वारा 18 फरवरी, 2017 को;
60. 'ट्रांसकल्चरल ज्यूइश आईडेंटिटी– अमेरिका टु इंडिया' पर सुश्री शेरोन लोवेन द्वारा 20 फरवरी, 2017 को;
61. 'आर्यभट्ट के अंतरिक्ष विज्ञान का पुनरावलोकन' पर डॉ. देविन्दर सिंह तंवर द्वारा 21 फरवरी, 2017 को;
62. 'आचार्य भर्तृहरि का दर्शन और उस पर हुए आधुनिक कार्य' पर प्रो. मिथलेश चतुर्वेदी द्वारा 21 फरवरी, 2017 को;
63. 'सोमलता–ए प्रैशस गिफ्ट टु मेनकाइंड' पर डॉ. सुनील एस. सांभरे द्वारा 22 मार्च, 2017 को;
64. 'इफैक्ट ऑफ सोमयज्ञ–ए साइंटिफिक एनालिसिस' पर डॉ. सुनील एस. सांभरे द्वारा 22 मार्च, 2017 को।

अनुलग्नक-7

वरिष्ठ अधिकारियों की सूची

डॉ. सच्चिदानंद जोशी,
सदस्य सचिव

कलानिधि

- डॉ. पी. आर. गोस्वामी, विभागाध्यक्ष, कलानिधि/निदेशक (पुस्तकालय एवं सूचना)
- श्री पी. झा, निदेशक, सांस्कृतिक सूचना–विज्ञान प्रयोगशाला
- डॉ. अचल पांड्या, विभागाध्यक्ष, संरक्षण
- डॉ. गौतम चटर्जी, प्रभारी, मीडिया प्रकोष्ठ
- श्री वीरेन्द्र बांगरू, सहायक प्रोफेसर ग्रेड (स्लाइड संग्रहण)
- डॉ. कीर्ति कान्त शर्मा, प्रभारी, पांडुलिपि अनुभाग
- श्रीमती हिमानी पांडे, आर्काइविस्ट, कलानिधि
- श्रीमती रेणु बाली, पुस्तकालय एवं सूचना अधिकारी
- श्रीमती आशा गुप्ता, पुस्तकालय एवं सूचना अधिकारी
- श्रीमती सफिया अल कबीर, पुस्तकाध्यक्ष एवं सूचना अधिकारी

कलाकोश

- डॉ. एन.डी. शर्मा, विभागाध्यक्ष, कलाकोश
- डॉ. अद्वैतवादिनी कौल, एसोसिएट प्रोफेसर कलाकोश
- डॉ. राधा बनर्जी, प्रभारी, पूर्व एशिया अध्ययन
- डॉ. बच्चन कुमार, प्रभारी, दक्षिण–पूर्व एशिया अध्ययन
- डॉ. सुषमा जाटू, प्रभारी, नारीवाद परियोजना
- डॉ. सुधीर लाल, प्रभारी, भारत विद्या परियोजना

जनपद संपदा

- प्रो. मौली कौशल, विभागाध्यक्ष, जनपद संपदा
- डॉ. श्रीकला शिवशंकरन, एसोसिएट प्रोफेसर
- डॉ. बी. एल. मल्ला, परियोजना निदेशक, आदि–दृश्य
- डॉ. रमाकर पंत, सहायक प्रोफेसर, जनपद संपदा

कलादर्शन

- डॉ. मंगलम स्वामीनाथन, कार्यक्रम निदेशक, कलादर्शन
- श्री जॉय कुरियाकोज, परियोजना निदेशक, 'मौसम'

सूत्रधार

- श्रीमती विनीता श्रीवास्तव, संयुक्त सचिव, प्रशासन
- बी.बी. शर्मा, उप सचिव, अकादमिक
- श्रीमती नीलम गौतम, वित्तीय सलाहकार और मुख्य लेखा अधिकारी
- श्री यशराज सिंह पाल, अवर सचिव, प्रशासन
- श्री जयन्त चटर्जी, उप वित्तीय सलाहकार एवं वरिष्ठ लेखा अधिकारी
- श्री बी. एस. बिष्ट, उप वित्तीय सलाहकार एवं वरिष्ठ लेखा अधिकारी, आईजीएनसीए

क्षेत्रीय केन्द्र

- डॉ. विजय शंकर शुक्ल, क्षेत्रीय निदेशक, वाराणसी
- डॉ. दीप्ति नवरत्न, क्षेत्रीय निदेशक, बंगलुरू
- डॉ. ऋचा नेगी, क्षेत्रीय निदेशक, गुवाहाटी